विधवा-कर्तव्य ।

आवश्यक सूचना ।

विधवाओंके दुःखोंको दूर करनेवाली और उनके द्वारा समाजका कल्याण करानेवाली यह उत्कृष्ट पुस्तक प्रत्येक घरमें जाकर पढ़ी जावे, इसके लिए इसका मूल्य इस समयकी महँ-गाईके हिसाबसे बहुत कम रक्खा गया है और जो भाई बिना मूल्य बाँटनेके लिए इसको खरीदना चाहें उनसे और भी कम मूल्य लिया जायगा । वे इसकी सौ प्रतियाँ ३०) में और पचास प्रतियाँ १७) में मँगा सकेंगे ।

प्रकाशकोंकी ओरसे इसकी १००० प्रतियाँ बिना मूल्य वितरण की गई हैं ।

—प्रकाशक ।

विधवा-कर्तव्य ।

समस्त धर्मों और सम्प्रदायोंकी हिन्दू विधवाओंको
कर्तव्यपथपर आरूढ़ करनेवाला उपदेशात्मक

निबन्ध ।

लेखक,
श्रीयुक्त **बाबू सूरजभानजी** वकील,
देवबन्द (सहारनपुर) ।

प्रकाशक,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय
हीराबाग, बम्बई ।
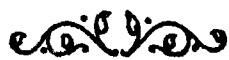
भाद्र, १९७५ वि० ।

प्रथमावृत्ति ।] अगस्त १९१८ । **[मूल्य आठ आने ।**

प्रकाशक,
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई ।

मुद्रक,
रा० चिंतामण सखाराम देवळे,
बम्बईवैभव प्रेस,
सेंढर्स्ट रोड, गिरगाँव, बम्बई ।

सूची ।

पृष्ठ संख्या

प्रस्तावना ।

मेरी विधवा बहनो, आजकल दस्तूर तो यह हो रहा है कि जब कभी और जहाँ कहीं तुम्हारी माँ बहन या तुम्हारे दुखमें दुखी होनेवाला और कोई तुम्हें मिलता है, तो वह तुम्हारी मुसीबतको याद दिला-दिलाकर, अपने दर्द भरे वचनोंसे तुम्हारा दुखड़ा गा-गाकर, और तुम्हारे चोट खाये मनमें ठेस लगा-लगाकर आप रोता है और तुम्हें रुलाता है। फल इसका यह होता है कि तुम्हारे हृदयमें लगी हुई मोहकी आग जो कुछ धीमी पड़ गई थी वह फिर भड़क उठती है, तुम्हारी छातीमें सुलगती हुई दुख-दर्दकी भट्टी जो कुछ मंद पड़ गई थी वह फिर धधक उठती है, फिर तुम्हारे मुँहसे आहोंका धुआँ निकलना शुरू हो जाता है और तुम फिर मछलीकी तरह तड़पने लगती हो। गरज ये तुम्हारे सच्चे हितू और तुम्हारे नातेदार तुम्हारे हृदयकी आगको बारबार कुरेदकर उसे बुझने या दबी रहने नहीं देते, बल्कि घड़ी घड़ी उसमें फूँक मार-मारकर उसे सुलगाते ही रहते हैं और इस प्रकार तुम्हारे कष्टको दूना दूना बढ़ाकर तुमको एक पल भरके लिए भी शान्ति नहीं लेने देते।

परन्तु तुम्हारे सामने तुम्हारे दुःखोंका बखान करना तो सूरजको दीवा दिखानेके समान है। तुम्हारे दुःख क्या और उनका गीत गाना क्या। क्योंकि तुममें तो सिवाय दुःखके और

कुछ है ही नहीं। तुम्हें तो दुःखकी जीती जागती मूर्ति या कष्टकी साक्षात् देवी कहा जाय तो कुछ अनुचित नहीं है। इस कारण मेरी बहनो, हम तो इस पुस्तकमें ऐसी बातें लिखना नहीं चाहते, जिससे तुमको तुम्हारे दुःख याद आवें और तुम्हारे हृदयको चोट लगे; बल्कि हम तो तुमको ऐसी बातें बताना चाहते हैं जिससे तुम्हारा मन ठिकाने आवे, तुम अपने दुखदर्दोंको भूलो और तुम्हारे हृदयमें शान्ति आकर तुमको अपने पहले जन्मके पापोंको दूर करनेकी फिकर हो और अपने हृदयको पवित्र करके तुम ऐसे उत्तम कार्योंमें लग जाओ जिससे आगेको तो तुम सुख शान्ति भोगो और दुखका नाम भी न सुनो।

प्यारी बहनो, यह छोटीसी पुस्तक तुम्हारे हितके वास्ते बड़े परिश्रमसे लिखी गई है। इसका एक एक पाठ तुम्हारे वास्ते सच्चे मोतियोंकी लड़ीसे भी ज्यादा कीमती है। यह पुस्तक तुमको तुम्हारे पिछले पापोंका काटना सिखायगी, लोभ क्रोध आदिकी कालिमाको तुम्हारे हृदयसे धोकर तुमको अपनी आत्माके शुद्ध और पवित्र बनानेका उपाय बतायगी, और तुम्हारे हृदयकी धधकती हुई आग पर पानी डालकर और तुम्हारे डावाँडोल मनको थाम कर तुमको परम शान्तिका वह मार्ग दिखायगी जिससे ऐसा सच्चा सुख और ऐसा आत्मिक आनन्द प्राप्त हो कि उसके सामने दुनिया भरके सब ही भोग-विलास और ऐशोआराम बिल्कुल ही निकम्में हों, और जिसके मुकाबलेमें स्वर्गोंके सुख भी कौड़ी कामके न हों।

विधवा-कर्तव्य ।

यह दुनिया सुपनेका सा तमाशा है ।

विधवा बहनो, इस दुनियाका सारा तमाशा सुपने कैसी माया है । जैसे कोई आदमी सुपनेमें देखे कि वह किसी देशका राजा बन गया है, हीरे जवाहरात जड़े हुए तख्त पर बैठा हुआ हुकूमत कर रहा है, लाखों आदमी हाथ बाँधे उसके सामने खड़े हैं, सैकड़ों रानियाँ और हजारों बाँदियाँ सुंदर शृंगार किये हुए छम छम करती हुई उसके चारों तरफ फिर रही हैं, कहीं बाजा बज रहा है, कहीं गाना हो रहा है, और कहीं तरह तरहके नाच तमाशे हो रहे हैं, गरज हरकिसमकी खुशीके ठाठ बँध रहे हैं और सब तरहकी मौज आ रही है; लेकिन आँख खुलनेपर फिर उसको सुपनेकी इन चीजोंमेंसे वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं देता, वह सारी माया इस तरह गायब हो जाती है मानों कभी थी ही नहीं । मेरी बहनो, अब जरा तुम ही सोचो कि अगर वह आदमी अपने सुपनेकी उस मायाको याद करके रो-रोकर अपनी जान खोने लगे तो वह पागल है कि नहीं । अब तो वह जितना चाहे रुदन करे, जितना चाहे तड़पे और सिर पटके, पर उसके सुपनेकी वह माया तो अब उसे मिलनेसे रही, वह तो रो-रोकर और तड़प-तड़पकर व्यर्थ ही अपना बुरा कर

रहा है और उलटा अपने उतने सुख चैनको भी खो रहा है जितना उसको इस सुपनेके देखनेसे पहले प्राप्त था । इस ही वास्ते वह पागल है, और अगर वह यह बात जानता है और इस बातका उसको पूरा यकीन है कि सुपनेमें देखी हुई कोई चीज अब मुझे नहीं मिल सकती है और फिर भी वह अपने सुपनेकी चीजोंके वास्ते तड़पता है और रो-रोकर अपने दुःखोंको बढ़ाता है तो वह पागल तो क्या बल्कि पागलोंका सरदार है। यही हाल मेरी विधवा बहनो, तुम्हारा हो रहा है। क्यों कि तुम यह बात अच्छी तरह जानती हो कि जो होना था वह तो हो चुका और सुपनेकी मायाकी तरह अब सुहागके समयकी कोई बात लौटकर नहीं आ सकती है; पर यह सब कुछ जानती हुई भी तुम रात दिन रुदन करती हो और पिछली बातोंको याद कर-करके मछलीकी तरह तड़पती हो और ख्वामख्वाह अपने दुखको बढ़ाती हो।

प्यारी बहनो, तुम अच्छी तरह विचार कर देख लो, इस दुनियाका तो सारा कारखाना और यह सब खेल बिल्कुल ही नाटकके तमाशेके समान है। नाटकके तमाशेमें जब राजदर्बारका स्वाँग दिखाना होता है तो किसीको राजा बना दिया जाता है और किसीको वजीर, और जब किसी भीख माँगनेवाले फकीर या मैला उठानेवाले भंगीका तमाशा करना होता है तो जिसको पहले राजा बनाया था, उसका सब राजाई ठाठ उतारकर, फटे पुराने कपड़े पहनाकर और गलेमें

झोली डालकर उसहीको फकीर बना दिया जाता है, या मैलेका टोकरा और झाड़ू पंजर हाथमें देकर वह ही भंगी बना दिया जाता है। अर्थात् जो आदमी थोड़ी देर पहले तख्तके ऊपर बैठा हुआ हुकूमत कर रहा था वही थोड़ी देर पीछे ही फकीर बनकर टुकड़े माँगने लगता है, या भंगी बनकर झाड़ू देता हुआ दिखाई देने लगता है।

अब जरा सोचनेकी बात है कि क्या वह तमाशा करनेवाला जब राजा बनाया गया था तब अपनेको भाग्यवान् समझता था और सुखी होता था, और क्या फकीर या भंगी बनाये जानेपर वह अपनेको अभागा समझ कर दुखी होता है? नहीं, ऐसा नहीं है। क्योंकि वह खूब जानता है कि न तो मैं राजा बनाये जाने पर राजा हो गया था और न अब फकीर या भंगी बनाये जाने पर भंगी या फकीर हो गया हूँ, बल्कि मैं तो जो हूँ वही अब हूँ और वही राजाका स्वाँग भरे जाने पर रहा हूँ, अर्थात् मैं तो एक गरीब तमाशा करनेवाला हूँ। इस वास्ते वह बेचारा न तो राजाका स्वाँग भरे जाने पर आनन्द मनाता है और न फकीर या भंगीका स्वाँग भरे जाने पर दुखी होता है। उसका तो यह काम है कि राजाका हो चाहे फकीरका, अमीरका हो चाहे गरीबका, गरज जो भी चाहे स्वाँग उस पर भरा जावे उसहीको बड़ी बुद्धिमानी और होशियारीके साथ ज्योंका त्यों खेलकर दिखा दे।

मेरी बहनो, यह दुनिया भी इसी प्रकारका एक नाटकका

तमाशा है जिसमें हम सब लोग तमाशा खेलनेवाले हैं। नाटकके समान इस दुनियामें भी कोई अमीरका स्वाँग भर कर आता है और कोई गरीबका, कोई दुखिया बनाया जाता है और कोई सुखिया, और फिर थोड़ी ही देरमें जो अमीर था वह गरीब बन जाता है, और जो सुखिया था वह दुखिया। सुबह जिनके घर खुशीके शादियाने बज रहे थे शामको वहीं हाय हाय सुनाई देने लगती है और जहाँ रंज हो रहा था वहीं खुशियाँ मनाई जाने लगती हैं। बे-माँ-बापकी एक गरीब लड़की जो कल टुकड़े चुगती फिरती थी आज किसी सेठके साथ ब्याहे जानेसे सेठानी बनी फिरती है और सीधी तरह बात भी नहीं करती और एक बड़े अमीर घरकी बेटी—जो अमीरके घर ही ब्याही गई थी, परन्तु अपने पतिके कुचाल हो जानेसे सब कुछ खो बैठी है—रो-रोकर ही अपने दिन बिताती है। गरज दुनियाका भी सारा खेल नाटकके तमाशेके ही तरह है, जहाँ कभी किसी पर कोई स्वाँग भरा जाता है और कभी कोई। इसीवास्ते इस दुनियाके लोगोंको भी उस ही तरह रहना चाहिए जिस तरह नाटकवाले रहते हैं। अर्थात् जिस तरह वे राजाका स्वाँग भरा जाने पर खुश नहीं होते और फकीर बनाये जाने पर रंज नहीं करते, बल्कि जो भी स्वाँग उन पर भर दिया जाता है उसहीको जी लगाकर खेल देते हैं, इसी तरह दुनियाके लोगोंको भी चाहिए कि वे किसी हालतमें सुखी और किसी हालतमें दुखी न हों, बल्कि हर

हालतमें एकसे भाव रखकर उनकी जो भी अवस्था होती रहे उसहीको अच्छी तरह निभा दें, और कभी यह विचार मनमें न लावें कि हमारी यह दशा क्यों होगई, वह क्यों न रही, अर्थात् हमारे ऊपर यह स्वाँग क्यों भरा गया और वह स्वाँग हम परसे क्यों उतार लिया गया। हमको तो सदा यही समझना चाहिए कि स्वाँग स्वाँग सब एकसे, यह स्वाँग भरा गया तो क्या और वह उतार लिया गया तो क्या। कुछ सदा के लिए तो हमें यहाँ रहना ही नहीं है। आयु पूरी होने पर तो हमें ये सब स्वाँग यहीं छोड़ जाने हैं, फिर क्यों किसी स्वाँगके वास्ते तड़पें और क्यों किसी अवस्थामें सुखी हों और किसीमें दुखी।

दुनियामें दुख मान लिया तो दुख है, सुख मान लिया तो सुख है।

प्यारी बहनो, इस समय तुम जरूर अपने मनमें कह रही होगी कि ये सब कहनेकी बातें हैं। क्यों कि जिसके पास पचासों भारी भारी जड़ाऊ गहने हों वह कैसे सुखी न हो और जिसके पास पहननेको एक छल्ला तक न हो वह कैसे दुख न माने। इसी प्रकार जिसके आगे बीसों बाँदियाँ हाथ बाँधे खड़ी हों, जो पैर भी पलंगसे नीचे न उतारती हो और बैठी ही बैठी हुकूमत चलाती हो वह कैसे अपनेको भाग्यवान् न समझे और जिसको सारा ही काम अपने हाथसे करना पड़ता हो वह किस तरह अपनेको अभागी न जाने। परन्तु मेरी विधवा

बहनो, तुमने कोई न कोई विधवा ऐसी भी तो देखी होगी जो लखपती करोड़पती हो, हाथी घोड़े, बग्गी टमटम, पालकी नालकी आदि अनेक प्रकारकी सवारियाँ जिसके दरवाजे पर खड़ी हों, एकसे एक बढ़कर जिसके अनेक महल खड़े हों, सैकड़ों नौकर चाकर और बाँदी गुलाम जिसके पीछे पीछे फिरते हों, जिसके पास अटूट धन हो, पचासों आदमी जिसके आगे हाथ पसारते हों, जिसके यहाँसे सैकड़ोंका पेट पलता हो और हजारों पर जिसका हुकम चलता हो, बिरादरी और गाँवके लोग भी जिसकी आन मानते हों, हाकिम भी जिसकी बात न टालते हों, और जो जाहिरमें सबही तरहसे सुखिया नजर आती हो। परन्तु क्या वह सचमुच ही सुखिया हैं, और क्या दुनियाका यह सब साज-सामान उसको कुछ आनन्द दे रहा है? नहीं, ऐसा नहीं है बल्कि दुनियाके ये सब ठाठ उसके दुःखको और ज्यादा बढ़ा रहे हैं और उसके जीको जला रहे हैं। उसके दिलसे पूछो तो तुम्हें मालूम हो कि उसके हृदयमें तो दुख-दर्दकी भट्टी सुलग रही है जिसके धुएँसे उसको सब धरती आकाश धुँधला ही धुँधला दिखाई दे रहा है। उसको तो सैकड़ों आदमियोंसे भरा घर भी बिलकुल सूना और उजाड़ ही नजर आ रहा है, और निर्जन जंगलकी तरह सब तरफ साँय साँय ही होती हुई मालूम हो रही है। उसका मन तो अब ऐसा उलट पुलट और डावाँडोल हो रहा है कि मुलायम बिछौने और कोमल सेजपर पड़नेसे अब उसको

बेकली होती है और हृदयमें सुईयाँ सी चुभती हैं, चाँदी सोने-के थालोंमें सजे हुए सत्तर प्रकारके स्वादिष्ट भोजन अब उसको कड़वे मालूम होते हैं। खानेको देखकर उसे उबकाई आती है और टुकड़ा हलकके नीचे उतरना भारी हो रहा है। चारों तरफ फिरती हुई बाँदियाँ अब उसको जहर दिखाई दे रही हैं, हाथी घोड़ोंको देखकर तो अब उसे रुलाई आती है। हीरे मोती जड़े हुए गहने और जरी लिपटे हुए भड़कदार रेशमी कपड़े अब उसको ऐसे घिनावने लगते हैं कि उनमें दियासलाई लगा देनेको जी चाहता है। रुपये पैसे और माल दौलतको देखकर वह झुँझलाती है और मन ही मन गुस्सा खाकर कहती है कि अब यह मेरे किस कामके। उसकी कोठीके गुमाश्ते और कारिन्दे अब उसकी ही आज्ञा मान रहे हैं, बिरादरीवाले भी उसीको पूछने आते हैं और सरकारी हाकिम भी अब उसका ही लिहाज करते हैं; लेकिन इस पूछ-पुर्शिश और मान-गौनसे उसको कुछ भी खुशी नहीं हो रही है, बल्कि वह तो अपने उनही दिनोंको याद कर करके रोती है जब कि वह खुद ही अपने स्वामीकी दासी बनी हुई थी और बाँदी गुलामकी तरह टहल करते हुए भी जब वह अपने मालिककी सैकड़ों झिड़कियाँ सहती थीं, जब कि घर बाहर सब जगह और सब बातोंमें उसके मालिककी ही चलती थी और उसकी कुछ भी पूछ नहीं थी; बल्कि उसको खुद भी हरएक काममें अपने पतिको ही पूछना पड़ता था। इस वक्त वह खुद मुख्तार है,

जो चाहे सो करे, जहाँ चाहे बैठे और जहाँ चाहे उठे, इस वक्त तो किसी काममें भी कोई उसको रोक-टोक करनेवाला नहीं है। लेकिन यह उसकी खुदमुख्तारी और हकूमत उसको कुछ भी सुख नहीं पहुँचा रही है, बल्कि वह अत्यन्त दुखी है और उनही दिनोंके वास्ते तड़प रही है जब कि उसका स्वामी उसको बात बातमें धमकाता था, सख्त सुस्त कहता था, कभी कभी मार भी बैठता था, और जब कि उसके पतिके सहारे पर उसके देवर जेठ भी उस पर शेर हो जाते थे और सौ कच्ची पक्की सुना जाते थे। गरज संसारके सब सामान और सुख चैनकी सब सामग्री प्राप्त होने पर भी उसको आराम नहीं है, बल्कि इनके कारण वह और भी ज्यादा दुखी है।

मेरी बहनो, इस कथनसे तुमको यह बात भली भाँति मालूम हो गई होगी कि धन-दौलत, रुपया-पैसा, महल-मकान जर-जेबर, घोड़े-हाथी, नौकर—चाकर, इज्जत-हुर्मत, खुद मुख्तारी और हकूमतमें सुख नहीं है, बल्कि सुख दुःख सिर्फ मान लेनेकी बात है। चाहे जैसी अवस्था हो उसीमें जो कोई अपनेको सुखी मान ले वह सुखी और दुखी मान ले वह दुखी है। उस लखपती करोड़पती विधवाने सब कुछ होते हुए भी अब अपनेको दुखी मान रक्खा है इस कारण वह दुखी है और अपने पतिकी जिन्दगीमें जब उसने अपने स्वामीकी सर्व प्रकारकी सख्ती सहते हुए भी अपनेको सुखी मान रक्खा था तो वह सुखी थी।

मेरी बहनो, संसारका कुछ ऐसा अजीब खेल है कि अनेक प्रकारके भारी भारी कष्ट सहता हुआ तो यह आदमी कभी अपनेको महासुखी मान लेता है, और किसी भी प्रकारका कोई कष्ट न होते हुए भी कभी अपनेको दुःखी समझने लगता है। तुम नित्य देखती हो कि बच्चा जननेवाली स्त्रियाँ कितना दुःख उठाती हैं। अव्वल तो उनको नौ महीने तक बच्चेको पेटमें रखना पड़ता है जिसके कारण उनका घरसे बाहर निकलना, किसीके यहाँ आना जाना, और घरके बहुत से काम करना भी बन्द हो जाते हैं। फिर बच्चेके जनते समय जो तकलीफ उनको उठानी पड़ती है उसको याद करके तो कलेजा दहलने लगता है। फिर दस दिन तक उनको प्रसूतिगृह या जच्चाखानेमें इस प्रकार पड़ा रहना पड़ता है जैसे कोई नरककुंडमें पड़ा हो और उसपर तुर्रा यह है कि रोटी भी वहीं खानी पड़ती है। इसके बाद जच्चाखानेसे बाहर आकर भी, दो वर्ष तक गंदगीहीमें रहना होता है। बच्चा आधी पिछली रात टट्टी फिर देता है और माँ बिस्तरके पल्लेको उलट कर उस पर ही पड़ी रहती है, बच्चा बारबार बिस्तर पर मूतता है और उसकी माता उसको सूखेमें करके आप उसके मूत पर ही पड़ी रहती है। माँ बच्चेको गोदीमें लिये रोटी खा रही है, बच्चा वहीं टट्टी कर देता है; लाचार बच्चेकी माँ उसकी टट्टीको कपड़ेसे छिपाकर उस ही तरह बैठी रोटी खाती रहती है। जब तक बच्चा दूध पीता है बच्चेकी माताको

कच्ची पक्की सैकड़ों चीजोंके खानेसे परहेज रखना पड़ता है। बच्चेके बीमार हो जाने पर बच्चेकी माँ आठ आठ दिन तक सारी सारी रात नहीं सोती और बच्चेको गोदीमें ही लिये बैठी रहती है। बच्चेकी आँख दूखने पर बच्चेको कंधे लगा कर सारे दिन खड़ी खड़ी फिरती है और उसको चुपका करनेकी सौ सौ तदबीरें करती है। गरज बच्चेकी माता दो बरस तक जो तकलीफें उठाती है और जैसी गन्दगीमें वह पड़ी रहती है उसको वह ही जानती है। दो बरसके बाद भी बच्चेकी पालनामें जो जो मुसीबतें उठानी पड़ती हैं वे कलमसे नहीं लिखी जा सकतीं। परन्तु इन सब कष्टोंके होते हुए भी बच्चेकी माता अपनेको भाग्यवती, परम सुखी मानती है और खुशीके मारे अंगमें फूली नहीं समाती, और जिनको ऐसी मुसीबत नहीं उठानी पड़ती है, अर्थात् जो स्त्रियाँ बच्चा नहीं जनती हैं वे अपनेको अभागिन समझती हैं और बहुत दुख मानकर सोच ही सोचमें सूखती जाती हैं।

नित्य ही घरोंमें देखनेमें आता है कि बच्चोंको कान बिंधवानेमें बड़ा भारी कष्ट होता है, फिर कई दिनतक वे कान दुखते और पकते रहते हैं, यहाँ तक कि उन कानोंकी पीड़ाके कारण रातको खाटपर पड़ना भी भारी हो जाता है और सारी सारी रात तड़पते ही बितानी होती है, परन्तु यह सब दुख होते हुए भी बच्चोंको अपने कान बिंधाने और बालियाँ पहननेका

इतना चाव रहता है कि वे इसके वास्ते सदा तकाजा ही करते रहते हैं।

मेरी बहनो, इन ऊपरके दृष्टान्तोंसे तुमने भली भाँति समझ लिया होगा कि सुख और दुख असलमें कोई चीज नहीं है, बल्कि सिर्फ एक माननेकी बात है। अर्थात् चाहे कैसी ही हालत हो जो कोई उसमें सुख मान लेता है वह सुखी हो जाता है और जो दुख मान लेता है उसको दुख होने लगता है। दुनियामें नित्य ही ऐसे ऐसे तमाशे देखनेमें आते हैं कि सौ सौ रुपया महीना कमानेवाले दो बराबरकी हैसियतके आदमियोंमें एक तो मारे खुशीके मिठाई बाँट रहा है और दूसरा रोता फिरता है। खुशी माननेवाला तो इस वास्ते खुश है कि पहले उसको सिर्फ पचास रुपये महीना ही मिलता था और अब उसको एकदम सौ रुपये महीना मिलने लगा है, इसकारण वह अपनी दुगनी बढ़वारी समझकर खुश हो रहा है और जो दुखी हो रहा है वह पहले दो सौ रुपये महीना कमाता था, लेकिन अब उसकी आमदनी सिर्फ सौ रुपये महीनेकी ही रह गई है इस कारण वह अपनी घटती जानकर दुखी हो रहा है। देखो दोनोंको इस वक्त बराबरकी ही आमदनी हो रही है, अर्थात् दोनोंको ही सौ सौ रुपया महीना मिल रहा है, लेकिन इसमें जो अपनी बढ़ती मानता है वह सुखी है और जो घटती मानता है वह दुखी है। इससे साफ जाहिर है कि सुख और दुख किसी चीजके मिलने या न मिलनेमें नहीं है, बल्कि माननेमें है।

देखो, यदि कोई बालक खेलता खेलता गिर पड़े और अगर उसके माँ-बाप यह कहने लगें कि "हाय हाय, कैसा धड़ामसे गिरा है, तेरे तो हाड़गोड़ सब टूट गये होंगे, देखें कहाँ कहाँ चोट आई है, बता तेरे कहाँ कहाँ दुख हो रहा है," तो वह ये बातें सुनकर रोने लगेगा और अगर बालकके गिरने पर लोग यह कहने लगें कि "वाह वाह खूब कूदा, तू तो बड़ाबहादुर है, बहादुरोंको चोट नहीं लगा करती है, यह देख तूने तो कीड़ी भी मार दी" तो ऐसी बातोंसे वह बालक नहीं रोवेगा, बल्कि उठकर हँसने खेलने लगेगा। इसी प्रकार-की और भी बहुत सी बातें नित्य देखनेमें आती हैं जिनसे स्पष्ट सिद्ध होता है कि सुखदुख सिर्फ माननेका है, अर्थात् चाहे कैसी भी दशा हो उसमें सुख मान लिया तो सुख है और दुख मान लिया तो दुख।

विधवा बहनो, छोड़ो इस दुनियाके खयालको।

विधवा बहनो, जब दुनियाकी ऐसी दशा है, जब यह दुनिया धोखेकी टट्टी, पानीका बुलबुला, सुपनेकी माया, नाटकका तमाशा या धुंधका पसारा है, और इसकी कोई वस्तु सुख या दुख देनेवाली नहीं है, बल्कि अपने भ्रमसे ही दुनियाके लोग कभी अपनेको सुखी मान कर अपनी सब चीजोंको सुखदायी समझ लेते हैं और कभी अपनेको दुखी मान कर उन ही वस्तुओंको दुखदायी कहने लगते हैं, तो तुम क्यों इस दुनियाके जंजालमें फँसी हो? इसके सिवाय

अब दुनियामें तुम्हारा धरा ही क्या है जिसके वास्ते तुम भटको और मछलीकी तरह तड़पो। इस वास्ते मारो लात इस दुनियाको और छोड़ो सुख दुखके इन सब झगड़ोंको और लग जाओ पूरी तरहसे अपना अगन्त सुधारनेमें। बात बातमें आँसुओंकी नदी बहाकर और बार बार अपनी आँखें सुजाकर तुमने अच्छी तरह देख लिया है कि रोने धोनेसे अपने शरीर-को सुखानेके सिवाय और कुछ हाथ नहीं आता है। इस वास्ते अब छोड़ो इस धन्धेको और जी कड़ा करके लग जाओ अपने पापोंके दूर करने और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनानेमें, जिससे तुमको परम आनन्द और सच्चा सुख प्राप्त हो और तुम्हारा सच्चा कल्याण हो।

पुरानी बातोंको याद कर करके और दुनियाके ऐशो-अश-रत और भोग-विलासोंके वास्ते भटक भटक करके तुमने बहुत समय बिताया है, लेकिन इससे तुमको सिवाय दुख पाने और तड़प तड़प कर जान गँवानेके और कुछ भी नहीं मिल सका है। इस वास्ते अब ठुकरा दो अपने पैरोंसे इन दुनियाकी सब ऐशो अशरतोंको और कह दो इस दुनियाको झिड़क कर कि तेरे फंदेमें फँसकर हमने अबतक बहुत दुख उठाया, लेकिन अब हमने अपने मनको बिल्कुल ही तेरी तरफसे हटा लिया है और संतोष धारण करके अपने चित्तको आत्माकी शान्ति प्राप्त करनेमें लगा दिया है। इस वास्ते हे दुनिया और हे दुनियाकी सुंदर सुंदर चीजो, हट जाओ तुम हमारे सामनेसे

और जाओ उन्हींके पास जिनको तुम्हारी चाहना है । अब हमें तुम्हारी जरूरत नहीं है; बल्कि जरूरत है सच्चे आत्मिक धर्मकी जिससे हमारा कल्याण हो ।

मेरी विधवा बहनो, दुनियाके सब तरहके ऐशो आराम तुम्हारी तरफसे तो रंडापा आनेके दिनसे ही मटियामेट हो चुके हैं, तुम्हारा हँसना-बोलना, चहल-पहल, चाव-तमाशे, पहनना-ओढ़ना, साज-सिंगार, सब पहलेहीसे दुनियासे उठ चुके हैं, फिर तुम किस बातके वास्ते रोती तड़पती हो और किस मतलबके वास्ते तुमने दुनियाको पकड़ रक्खा है ? छोड़ दो इस दुनियाको और इसके सब प्रलोभनोंको, और भूल जाओ सारी पिछली कहानियोंको और लग जाओ एकदम अपनी आत्माके सुधारमें, जिससे फिर तुमको दुखकी प्राप्ति ही न हो सके ।

देखो, यह दुनिया ऐसी बुरी है कि जिस तुम्हारे पतिके न रहनेसे ही तुम्हारी यह दुर्दशा हुई है, जिसके चले जानेके कारण ही तुम धरती पर पटकी गई हो और धूलमें मिल गई हो, जिसके बिना तुम अपना जीवितव्य नहीं समझती हो, उसहीकी बाबत तुम्हारे सुसरालवाले तुम्हारे ऊपर यह इल्जाम लगाते हैं कि यह ही चुड़ैल हमारे लालको निगल गई है और इस ही डायनने हमारे शेरको खा लिया है । इसही वास्ते सारी दुनिया तुम्हें मनहूस मानती है और अपने शुभ कार्योंमें तुम्हारी सूरत देखना भी नहीं चाहती। प्यारी बहनो,

दुनिया तो तुम्हें इस तरह दुतकारती है और झूठमूठ ही तुमको बुरा बनाती है, लेकिन तुम फिर भी इस ही दुनियाके वास्ते तड़प रही हो और रो-रोकर अपना बुरा हाल बना रही हो। इस वास्ते खाक डालो अब इस दुनिया पर, सोचो अपनी भलाई, निकाल दो दुनियाके सब विचार अपने हृदयसे और बना लो अपने मनको आरसीके समान साफ और चमकदार; फिर तुम देखना कि इसही जन्ममें तुमको कैसा सच्चा आनन्द प्राप्त होता है, दुखका भारी बोझा तुम्हारे सिरसे उतर कर तुम्हारा हृदय कैसा गुलाबकी तरह खिल जाता है, तुम कैसी फूल सरीखी हलकी हो जाती हो, कैसी शुद्ध और पवित्र बन जाती हो और अगले जन्ममें इससे जो बेहद लाभ होगा वह रहा अलग।

तुम्हारी धर्म-साधनकी विधि गृहस्थोंसे निराली होनी चाहिए।

विधवा बहनो, तुम अपने मनमें सोचती होओगी कि हम तो पहलेहीसे बड़े बड़े व्रत उपवास करके अपनी देहको सुखा रही हैं, षट् रसोंका त्याग करके और अनेक प्रकारकी वस्तुओंका खाना छोड़ कर अपनी इन्द्रियोंको दबा रही हैं, नहाने धोने और अनेक प्रकारकी छूतछातके द्वारा अपनेको पूरी पूरी तरह पवित्र रख रही हैं, बिल्कुल सादे और सुफेद वस्त्र पहन कर सर्व प्रकारका सिंगार त्याग कर हमने तो आप ही अपने मन-

को मसोस रक्खा है, हमको तो अब जप-तप और पूजा पाठके सिवाय और कोई काम ही नहीं है, हमने तो अब दुनियाके सब खर्च बन्द करके अपना पैसा भी धर्म-काजमें ही लगाना शुरू कर दिया है, इससे ज्यादा और किस बातकी कसर रह गई है जो हम नहीं करती हैं। हमने तो पहलेहीसे इस दुनियाको लात मारकर अपने आपको खाकमें मिला दिया है और सब कुछ छोड़ कर जोग ले रक्खा है । हाँ, इतनी कसर जरूर समझ लो कि जंगलमें नहीं जा बैठी हैं, पर यहाँ घरमें रहते हुए भी हमने दुनियाका क्या पकड़ रक्खा है; हमारे लिए तो यह घर भी जंगलके ही समान है । फिर और क्या धर्मसाधन करें जो अब नहीं कर रही हैं। हाँ, एक बात हम जरूर जानती हैं कि चाहे हम कितना ही धर्मसाधन कर लें, चाहे हम कितना ही कष्ट उठा लें, पर हमारे हृदयकी बेकली न अबतक हटी और न आगेको हटेगी। हमने तो लाख कोशिशें करके देख लीं, पर हृदयमें लगी हुई यह आग इस जन्ममें नहीं बुझती । हाँ, अगले जन्ममें जाकर बुझ जाय तो हम कहती नहीं । इसवास्ते इस जन्ममें तो हमको परम आनन्द मिलता नहीं और दुख-दर्द दूर होकर हृदय हलका होता नहीं । हाँ, अगले जन्ममें जाकर इस धर्मसाधनका फल अवश्य मिलेगा और इसी वास्ते हम इसको साधती हैं और इतना कष्ट उठाती हैं ।

विधवा बहनो, अबतक जिस विधिसे तुम धर्मसाधन कररहीं

हो उससे निस्सन्देह तुमको न तो सच्चा आनन्द ही प्राप्त हो सकता है और न तुम्हारा हृदय ही पवित्र बन सकता है । क्योंकि अबतक तुमने अन्य गृहस्थोंकी तरह धर्मसाधन किया है और यह नहीं जाना है कि विधवाओंके धर्मसाधनका मार्ग ही बिल्कुल निराला है । इसी वास्ते तुम्हारे हृदयकी तड़प दूर होकर तुमको शान्ति नहीं मिल सकी है । परन्तु घबराओ मत और धीरजके साथ इस पुस्तकको अव्वलसे आखिर तक पढ़ जाओ । उसके बाद अगर तुम्हारा मन मान जावे और तुमको पूरा निश्चय हो जावे कि हाँ विधिके अनुसार धर्म्म-साधन करने पर इस जन्ममें भी हमारा हृदय पवित्र बन सकता है, पूर्ण शान्ति प्राप्त हो सकती है और सर्व पापोंकी निवृत्ति होकर अगले जन्मके वास्ते भी पुण्यके भंडार भरे जा सकते हैं, तो तुम इस पुस्तकके अनुसार चलो और अगर सारी पुस्तक पढ़ लेने पर भी ऐसा निश्चय न हो तो जो तुम्हारे जीमें आवे करो ।

प्यारी बहनो, यह मत समझना कि मैं तुमको कोई नया धर्म सिखाऊँगा । तुम जैन हो चाहे वैष्णव, आर्यसमाजी हो चाहे धर्मसमाजी, शिवालेको पूजनेवाली हो चाहे ठाकुरद्वारेको, गरज चाहे तुम्हारा कोई भी धर्म हो, तुम्हारे धर्म, तुम्हारे पंथ और तुम्हारे मतके खिलाफ इस पुस्तकमें एक अक्षर भी नहीं लिखा जायगा; बल्कि सब ऐसी ही ऐसी बातें बताई जायँगी जो सब ही धर्मोंके मुताबिक हों और जिनके द्वारा सब ही धर्मोंको

माननेवाली विधवा बहनें अपने अपने धर्मको अपने अपने शास्त्रके अनुसार ठीक रीतिसे पालन कर सकें, जिससे उनको इस जन्ममें भी सुखशान्ति मिले और अगले जन्ममें भी।

बात सारी यह है कि दुनियादार लोग जिस प्रकार धर्म-साधन कर रहे हैं उसी प्रकार तुम भी मत करने लगो, बल्कि जिस किसी भी धर्मका तुमको श्रद्धान हो उसहीके असली स्वरूपको अच्छी तरह समझ कर उसके अनुसार चलनेकी कोशिश करो, जिससे असलियतमें तुम्हारा कल्याण हो और तुम्हारी मेहनत व्यर्थ न जावे। आँख मीचकर दुनियाके लोगोंके पीछे पीछे चलनेसे और उनकी रीस करनेसे तुम्हारा काम नहीं चलेगा। दुनियाके लोग तो जो कुछ भी करते हैं वह दुनियाके वास्ते ही करते हैं, क्योंकि उनको तो दुनिया-में बड़ा बनना है, यश कमाना है और नाम पैदा करना है। इसवास्ते उनके तो धर्मकार्य भी सब इसी मतलबके वास्ते होते हैं; लेकिन तुम्हें तो कोई नाम नहीं करना है, बल्कि तुम्हें तो अपने अहंकारको मेटकर, मानको तोड़ कर और अपनी आत्माको शुद्ध तथा पवित्र बना कर अपना कल्याण करना है। इस वास्ते तुम्हारा और उनका रास्ता एक कैसे हो सकता है? दुनियादारोंको तो जरूरत है दुनियाको राजी रखनेकी, उनमें रलने मिलनेकी, उन जैसा होकर रहनेकी और उनकी हाँमें हाँ मिलानेकी; लेकिन तुम्हें तो अपना जन्म सुधारना है और अपना परमार्थ सिद्ध करना है। इसवास्ते दुनियाके

लोगोंकी रीस करनेसे तुम्हारा काम कैसे बन सकता है ? तुम्हारा मार्ग तो दुनियाके लोगोंसे बिल्कुल ही निराला होगा। तब ही तुम्हारा काम बनेगा, तब ही तुम्हारे पाप क्षय होकर पुण्यके भंडार भरने शुरू होंगे और तब ही तुमको इस जन्ममें भी सच्चे आनन्दका अनुभव होगा और अगले जन्ममें भी।

दुनियाके लोगोंका धर्मसाधनका झूठा मार्ग।

देखो, दुनियाके लोग तो अगर तीर्थयात्राको जाते हैं तो इस यात्राके द्वारा अपने परिणामोंको सुधारने और अपने भावोंको ठीक करनेका जरा भी खयाल नहीं करते हैं, यहाँ तक कि यात्राके दिनोंमें भी पापोंसे नहीं बचते हैं; बल्कि खूब दिल खोल कर पाप करते हुए चले जाते हैं। वे अपने असबाबको महसूलसे बचानेके वास्ते छिपाते हैं, रेलके टिकटसे बचनेके वास्ते बालकोंको स्त्रियोंकी गोदीमें देकर उनको दूध पीता बच्चा बनाते हैं, आधा टिकट लेनेके लिए उनकी कम उमर बताते हैं, और रेलके बाबुओंको घूस देकर और भी कई तरहकी बेईमानी करते हैं। वे रेलको अपनी मिलकियत समझ कर दूसरे मुसाफिरोंसे लड़ते-भिड़ते और उनको चढ़नेसे रोकते हुए चले जाते हैं, लेकिन तीर्थ पर पहुँच कर तीर्थके पंडोंको, और यात्रासे घर वापिस आकर अपने संघवालों और विरादरीके लोगोंको खूब तर माल खिलाने और वाह वाह लूटनेमें थैलीका मुँह खोल देते हैं और रुपयेको पानीकी तरह बहानेमें जरा भी संकोच नहीं करते।

और देखो कि सबही धर्मोंमें परमेश्वरकी पूजा-अर्चा और स्तुति-भक्ति इसी वास्ते बताई है कि, इससे अपना हृदय उज्ज्वल होकर, परिणामोंमें निर्मलता आकर अपने पापोंका नाश हो और पुण्यकी प्राप्ति हो। किसी भी धर्ममें यह नहीं लिखा है कि पूजा या प्रार्थनाके बिना परमेश्वरका कोई काम अटका पड़ा रहता है, या चढ़ावा मिले बिना परमेश्वर भूखा रह जाता है। परन्तु ये दुनियाके लोग ऐसा ही समझते हैं। इसी वास्ते ये लोग अपने आप पूजन या जाप करके अपने भावोंको पवित्र करनेके स्थानमें पुजारियोंके द्वारा पूजा-पाठ कराते हैं, जिससे परमेश्वरका कार्य अटका न पड़ा रहे—किसी न किसीके द्वारा हो ही जावे, और परमेश्वरकी यह बेगार उनके सिरसे उतर जावे।

प्यारी बहनो, अब तुम ही विचारो कि अगर ये लोग रोटी खानेके वास्ते भी अपनी तरफसे किसी दूसरेको ही बिठा दिया करते, तब तो मान भी लिया जाता कि पूजा—पाठ और स्तुति-भक्तिका काम भी दूसरोंकी मार्फत चल जाता होगा, पर दुनियाके कामोंमें तो ये लोग ऐसा नहीं करते; क्यों कि दुनियामें तो जब इनको किसी छोटे मोटे हाकिमकी भी खुशामद करनेकी जरूरत होती है तो ये लोग हाकिमके पास अपनी तरफसे सलाम कर आनेके वास्ते किसी नौकरको नहीं भेज देते हैं, बल्कि खुद ही उन हाकिमोंके पीछे पीछे दौड़े फिरते हैं। हाँ, तीन लोकके बादशाह श्रीभगवान्‌की

पूजा-पाठका महान् कार्य नौकरों और पुजारियोंसे ही करा-कर संतुष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार ये दुनियाके लोग जप भी टका देकर ही करा लेते हैं, अर्थात् धर्मक्रियाओंको ये लोग ऐसी तुच्छ समझते हैं जैसे बाजारकी साग भाजी, जब टका दिया तब ही मोल ले ली, या टकेके मजदूरोंसे करा ली।

धर्मके नामसे रुपया भी जो कुछ ये लोग खर्च करते हैं उसमें धर्मका भाव एक रत्ती भर भी नहीं होता है, उसमें भी इनकी असली मंशा लोक-दिखावा और वाह वाह प्राप्त करना ही होती है। जब ये लोग कोई मन्दिर, धर्मशाला या कुआ-बावड़ी बनानेका इरादा करते हैं, उस वक्त अगर इनको कोई समझावे कि भाई साहब, तुम्हारे गाँवमें तो ये चीजें जरूरतसे भी ज्यादा मौजूद हैं, इस गाँवमें ही और बनवा कर क्या करोगे? यदि तुम इस रुपयेसे और और स्थानोंकी ऐसी धर्मशालाओं, मंदिरों और कुए-बावड़ियोंकी मरम्मत करा दो जो टूटी पड़ी हैं और बिल्कुल बेकार हो रही हैं, तो ऐसा करनेसे तुम्हें दस गुना पुण्य होगा, क्यों कि थोड़े थोड़े रुपयेमें मरम्मत होनेसे बहुतोंकी मरम्मत हो जावेगी और सब काम आने लगे। लेकिन ऐसी बातोंको ये लोग कदाचित् भी नहीं सुनते हैं। क्यों कि इनकी तो धर्मकी कुछ भी गरज नहीं है, बल्कि गरज है नाम प्राप्त करनेकी, और नाम तब ही होगा जब अपने ही नामकी अलग चीज अपने ही गाँवमें बने। इसवास्ते चाहे कुछ भी जरूरत न हो और चाहे उनकी बनाई चीज सदा बेकार ही

पड़ी रहे, लेकिन उनको तो जो कुछ बनाना होगा वह अपने गाँवमें ही बनावेंगे।

और देखो कि बे-ईमानीसे रुपया कमाकर धर्ममें लगानेसे धर्म नहीं होता है, बल्कि उलटा पाप ही होता है। लेकिन जो लोग हजारों और लाखों रुपया धर्ममें लगाते हैं और सदाव्रत बाँटते हैं, उनको अगर यह समझाया जाय कि बे-ईमानीसे बहुत रुपया कमा कर उसको इस प्रकार लुटानेकी जगह अगर तुम ईमानदारीसे ही कमाई करो और ईमानदारी रखते हुए चाहे तुमको इतनी थोड़ी कमाई हो कि एक पैसा भी धर्मके वास्ते न बचा सको और न एक पैसा धर्ममें खर्च कर सको, तो भी तुमको बहुत ज्यादा धर्मका लाभ हो। लेकिन ये लोग ऐसे उपदेशको किसी तरह भी नहीं मान सकते। क्यों कि ईमानदारीसे थोड़ा रुपया कमानेमें धर्म-चाहे कितना ही ज्यादा होता हो, लेकिन दुनियाकी वाह वाह तो अधिक रुपया खर्चनेसे ही मिलती है। इसवास्ते बेई-मानीसे रुपया कमाकर धर्मके नाम पर लुटा देनेमें चाहे कितना ही पाप हो, लेकिन इन्हें तो वह ही करना है, जिसमें दुनियाकी बड़ाई मिले।

ये दुनियाके लोग दान-पुण्य भी इस ही रीतिसे करते हैं, जिसमें इनकी बड़ाई हो। अगर कोई इनको समझापे कि जो पैसा तुम दान-पुण्यमें लगाते हो वह सब संडे मुसटंडे ही खा जाते हैं और दुक्खित भुक्खितको कुछ भी नहीं मिलता;

तुम्हारे गाँवमें और आसपासके गाँवोंमें भी ऐसी अनेक विधवायें मौजूद हैं, जिनका कोई 'नाम लेवा' या 'पानी देवा' नहीं है, जो बेचारी मेरा तेरा कूट-पीस कर और किसीकी टहल-टकोरी करके ही अपना पेट पालती रही हैं, पर अब बुढ़ापा आ जाने पर जिनसे यह भी नहीं हो सकता है, इसवास्ते अब उन बेचारियोंको एक वक्त भी टुकड़ा नहीं मिलता और अब उनको अक्सर दो दो दिन तक पेट मसोस कर भूखे ही पड़ा रहना पड़ता है, लाजके मारे उन बेचारियोंसे घर घर भीख भी नहीं माँगी जाती, क्योंकि भीख माँगनेको खड़ा होने पर अव्वल तो उनके कुटुम्बी ही उनसे लड़नेको तय्यार हो जावें कि अब तू भीख माँग कर हमारा नाम डुबोवेगी और अपने पतिके नामको धब्बा लगावेगी, और यदि आँखों पर ठीकरी रख कर वे बेचारी माँगनेको निकलें भी तो उनको दे कौन ? इसवास्ते तुम अपने दानपुण्यके रुपयेको इन विधवाओंकी पालनामें लगाओ और इनके घर जाकर जो कुछ बन पड़े चुपके ही उनको दे आओ, जिससे किसीको कानोंकान भी खबर न हो और इन बेचारियोंको भी लेनेमें कुछ शरम मालूम न हो। इस प्रकारके उपदेशको ये दानपुण्य करनेवाले एक रत्ती भर भी नहीं सुनते हैं। क्योंकि इनको तो धर्म नहीं करना है, बल्कि इनको तो ढोल बजा कर रुपया लुटाना है, जिससे ये लोग बड़े भारी दाता प्रसिद्ध हो जायँ।

इसी प्रकार जब ये गृहस्थ कोई व्रत उपवास करते हैं, तो

दुनियामें अपने व्रतोंको उजग्गर करनेके वास्ते उद्यापन करते हैं और उसमें खूब रुपया लगाते हैं। अगर इनसे कहा जाय कि भाई, चाहे तुम अपने उद्यापनमें एक कौड़ी भी मत लगाना, लेकिन कमसे कम व्रतोंके दिनोंमें तो बेईमानी करना और झूठ फरेब करना छोड़ दो, जिससे तुम्हारा व्रत करना सुफल हो जाय। लेकिन ये लोग एक नहीं सुनते हैं और वह ही करते हैं जिसमें इनकी दुनिया सधे। स्तुति-प्रार्थना, जाप और पाठ आदिक भी ये लोग संस्कृत जैसी अति कठिन भाषाके ही कंठ याद कर लेते हैं और सुबह शाम उनहीको गा लेते हैं, परन्तु उनका अर्थ समझनेकी कोशिश बिल्कुल नहीं करते। अगर उनको समझाया जाता है, कि बिना समझे तोतेकी तरह बोलने या फोनोग्राफ बाजेकी तरह गीत गानेसे कुछ नहीं होता है, इस वास्ते इनका अर्थ जरूर सीखना चाहिए तो ये लोग कुछ ध्यान नहीं देते हैं। क्यों कि इनको तो न किसीकी स्तुति करनी है और न अपने भाव ठीक करने हैं, बल्कि इनको तो सिर्फ दुनियाको यह दिखाना है कि हम भी स्तुति-प्रार्थना किया करते हैं।

गरज कहाँतक कहें, दुनियाके लोगोंके तो सबही काम—जिनको वे धर्मके नामसे करते हैं—बिल्कुल लोकदिखावेके ही हैं और उनमें धर्मका अंश जरा भी नहीं है। इसवास्ते दुनियाके लोगोंके मुताबिक धर्म करनेसे तुम्हारा कुछ भी मतलब

सिद्ध नहीं हो सकता है। उनके ही अनुसार करनेसे तो व्यर्थ ही कष्ट उठाना और विना चावलकी भूसीका कूटना है, जिस-मेंसे सारा दिन कूटने पर भी एक कण नहीं निकल सकता है। मेरी बहनो, तुम्हें लोक-दिखावा नहीं करना है और न दुनियाकी वाह वाह लेनी है। इसवास्ते तुम दुनियाके लोगोंकी रीस मत करो और दुनिया तुम्हें भला कहे चाहे बुरा, इसकी तुम कुछ परवाह मत करो; बल्कि जिस धर्मका तुम्हें श्रद्धान है उसही धर्ममें यह बात मालूम करनेकी कोशिश करो कि अपनी आत्मामें लगे हुए पापोंके मैलको हटाकर उसको शुद्ध और पवित्र बनानेका सच्चा और सीधा रास्ता क्या है, और यह बात मालूम करके फिर सच्चे हृदयसे उसहीके अनुसार चलने लगो, जिससे वास्तवमें तुम्हारा कल्याण हो।

मोह और अहंकार ही पाप है, और दया और परोपकार ही धर्म है।

मेरी बहनो, चाहे तुम्हारा कोई भी धर्म हो, सभी धर्मोंमेंसे तुमको एक यही बात मिलेगी कि मोह और अहंकार ही पापकी जड़ है और दया और परोपकार ही पुण्यप्राप्तिका मार्ग है। देखो महात्मा तुलसीदासजी कहते हैं—

दया धरमको मूल है, पापमूल अभिमान।
तुलसी दया न छाँड़िये, जबलग घटमें प्रान॥

मतलब इसका यह है कि धर्मकी जड़ दया है और पाप-

की जड़ अभिमान है; इस कारण जबतक तनमें प्राण है, तबतक दया करना। इसीप्रकार और एक महातमाने कहा है—

आधे दोहेमें कहूँ, कोड़ि ग्रन्थको सार।
पर पीड़ा सो पाप है, पुन्य सो पर उपकार॥

इसका मतलब यह है कि करोड़ों ग्रन्थोंके सारको मैं आधे दोहेमें कहता हूँ,—किसीको दुःख पहुँचानेमें तो पाप है और किसीका भला करनेमें पुण्य। इस प्रकार और भी अनेक महात्माओंके वचन हैं, जिन सबको यहाँ लिखनेकी जरूरत नहीं हैं। इस वास्ते अब तुम उन सब आडम्बरोंको छोड़कर जो दुनियाके लोग धर्मके नामसे करते हैं, सिर्फ अपने मोह और अहंकारको दूर करने और दया धर्म पालने अर्थात् परोकार करनेमें लग जाओ।

मोह और अहंकारहीसे सर्व प्रकारके दुःख हैं।

मेरी बहनो, तुम अच्छी तरह विचार कर देख लो कि दुनियामें जितना भी दुख है वह सब मोह और अहंकारके ही कारण है। मोह और अहंकारके ही कारण दुनियाके लोग अनेक प्रकारके कष्ट भोग रहे हैं, तरह तरहके संकटोंमें फँसे हुए हैं, और तड़प तड़पकर जान गँवा रहे हैं। इस संसारमें जिसको दुनियाकी सब वस्तुयें प्राप्त हैं, वह भी दुःखी है अगर उसको मोह और अहंकार है और जिसके पास कुछ भी नहीं है वह

सुखी है अगर उसको मोह और अहंकार नहीं है। एक बादशाहकी सवारी सुबह ही सुबह कहीं बाहर जारही थी। रास्तेमें बादशाहने देखा कि जंगलमें एक नंग धड़ंग फकीर बिना बिस्तरा बिछाये कंकरों-पत्थरोंकी धरती पर पड़ा है। बादशाह तो सदा मुलायम मुलायम बिस्तरों पर पड़ा करता था, जिसमें कभी एक जरासा सलवट रह जाने पर भी उसको रातभर नींद नहीं आती थी। इस वास्ते फकीरको इस तरह डलों पर पड़ा देखकर बादशाहको बहुत आश्चर्य हुआ और उसने फकीरके पास जाकर बड़े अचंभेके साथ पूछा कि रात किस तरह कटी? फकीरने बड़ी शान्तिके साथ जवाब दिया कि हे बादशाह, कुछ तो तेरे ही समान कटी और कुछ तेरेसे भी अच्छी। यह सुनकर बादशाहको और भी ज्यादा आश्चर्य हुआ। वह बोला रें मूर्ख, मैं तो रातभर फूलोंकी सेज पर पड़ा रहा हूँ और अनेक रानियाँ और बाँदियाँ मेरी टहल करती रही हैं, और तू नंगेबदन इन पत्थरों पर पड़ा रहा है, भला तुझे मेरे बराबर सुख कहाँ मिल सकता था? और इस पर भी तू कहता है कि कुछ रात तेरेसे भी अच्छी कटी। फकीरने उत्तर दिया कि हे बादशाह, जितनी देरतक मैं और तू दोनों सोते रहे हैं उतनी देरतक तो दोनों ही बराबर ही थे, क्योंकि सोतेमें न तुझे यह खबर रही कि मेरे नीचे फूलोंकी सेज बिछी है और न मुझे यह विचार रहा कि मैं कंकरों पत्थरों पर पड़ा हूँ। और जितनी देर तक दोनों जागते रहे

उतनी देर तू तो मोह और अहंकारके कारण संसारकी अनेक चिन्ताओंमें फँसा रहा, इसवास्ते दुःखी ही रहा और मुझे कोई भी चिन्ता नहीं थी। क्योंकि मुझे न किसी चीजका मोह है और न अहंकार। मैं अपनी मौजमें रहा। इस वजहसे यह रात कुछ तो तेरे समान कटी है और कुछ तुझसे भी अच्छी। फकीरका यह जवाब सुनकर बादशाह कायल हो गया, फकीरके पैरोंमें पड़ गया और हाथ जोड़कर कहने लगा कि महाराज, आपका कहना सत्य है। हम लोग दुनियाके कुत्ते हैं और मोह और अहंकारकी जंजीरोंमें बँधे हुए ख्वाम-ख्वाह ही भौं भौं कर रहे हैं। हमको सुख कहाँ? सुख तो बेशक आप जैसोंको ही है जिनको न किसी चीजका मोह है और न किसी बातका अहंकार, और इसी कारण न किसी प्रकारका फिकर। बेशक आपके पास तो किसी प्रकारका भी दुख नहीं आ सकता है, आपको तो हरवक्त आनन्द ही आनन्द है।

मेरी बहनो, इस तरह तुम भी यकीन मानो कि जितना जितना तुम अपने मोह और अहंकारको कम करती रहोगी उतना ही उतना आनंद तुमको भी प्राप्त होता रहेगा, और इससे पापकर्मोंकी उत्पत्ति कम होकर आगेके वास्ते भी आनन्दके ही सामान बनते रहेंगे। मोह और अहंकारके दूर होनेसे जो परम आनन्द प्राप्त होता है, जो आत्मिक सच्चा सुख मिलता है, उसको प्राप्त करनेके वास्ते अनेक राजा महाराजाओंने धन

दौलत, सुख सम्पदा, हाथी घोड़े, महल अटारी, लाओ लश्कर, नौकर चाकर, रानियाँ बाँदियाँ, और राज पाट सभी कुछ छोड़ दिया है, फिर तुम्हारे पास तो ऐसी कौनसी बढ़िया चीज है, जिसका मोह तुम नहीं छोड़ सकती हो। सच तो यह है कि गिरस्तिन स्त्रियाँ तो अपने और अपने बाल बच्चोंके मोहमें ऐसी फँसी रहती हैं कि उनको एक पल भरके लिए भी इस मोहका त्यागना भारी है। उनको तो अपनी इज्जत आबरू, छुटाई बढ़ाई, ऊँच नीच, नेकनामी बदनामी आदिका खयाल ऐसा घेरे रहता है कि उनको जरा देरके लिए भी इस फिकरसे छुटकारा पाना महाल है। इसके सिवाय पतिको राजी रखना, उसकी आज्ञा मानना, उसकी खोटी खरी सहना, उसके दुखमें दुखी होना, ऐसी ही ऐसी और भी अनेक बातें हैं, जिनकी चिन्तामें गिरास्तिन स्त्रियोंको रातादिन फँसा रहना पड़ता है। इस वास्ते वे बेचारियाँ किस तरह सच्चा धर्म पालें और किस तरह अपनी आतमाको शुद्ध करके सच्चा आनन्द पावें? वे तो गृहस्थकी बेड़ियोंमें बँधी पड़ी हुई दुनियाके दुखोंके ही हिंडोलेमें झूल रही हैं। उन बेचारियोंके तो आठों पहर दुनियाकी ही चिन्तामें बीतते हैं। उनको तो हरवक्त चिन्ताओंका एक ताव आता है और एक जाता है। उनके हृदयमें तो हर वक्त चिन्ताओंकी एक लहर उठती है और एक दबती है। इस वास्ते उनको शान्ति कहाँ, और इस कारण सच्चा आनन्द कहाँ? इसही वास्ते वे बेचारियाँ लाचारीको नाममात्रका बाहर-

के दिखानेका ही धर्म कर लेती हैं। इसके सिवाय वे बेचारी और करें ही क्या ?

परन्तु मेरी विधवा बहनो, तुम्हारे सिरपरसे तो कुदरतने आपसे आप यह सारा बोझ उतार दिया है। तुम जबरदस्ती अपने आप ही मोहमें बँधना चाहो और ख्वामख्वाह ही अहं-कारमें फँसने लगो तो इसका तो कुछ इलाज ही नहीं है। नहीं तो तुम्हें तो दुनियाका कोई भी बंधन नहीं है जिसमें तुम अटकी रहो, और ऐसी कोई बात ही नहीं है जिसके कारण तुम किसी कामके करनेसे लाचार हो जाओ। इसवास्ते अपने हृदयसे मोह और अहंकारके मैलको धो डालने और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनाकर सच्चा आनन्द प्राप्त कर-नेका तुमको यह बहुत ही अच्छा अवसर मिला है। विश्वास रक्खो और निश्चय जानो कि सच्चे धर्मसाधनका ऐसा शुभ अवसर राजा महाराजाओंको भी प्राप्त नहीं होता है। वे भी इसके लिए भटकते रहते हैं। इसवास्ते अपनी इस अवस्थाको धर्मसाधनके वास्ते गनीमत जानकर एकदम अपने कर्मोंकी बेड़ियोंके काटनेमें लग जाओ और महान् पद पाओ।

मेरी बहनो, तुम जरा यह भी तो सोचो कि मोहमें फँस-नेसे सिवाय तड़पने और दुःख उठानेके और कुछ हाथ भी तो नहीं आता है। और तुम्हारा तो दुनियामें कुछ धरा भी नहीं है, जिसका मोह करके तुम इस जन्मका भी आनन्द खोओ

और अपना अगन्त भी बिगाड़ो। इस जन्ममें दुनियाके किसी सुखभोगके मिलनेकी आशा तो तुमको कुछ है ही नहीं, इसवास्ते तुम तो बहुत करके अपनी पिछली बातोंको ही याद करके रोया करती हो। यह ही तुम्हारा मोह है और यह ही तुम्हारा अहंकार; परन्तु यह तुम्हारी बड़ी भारी भूल है। क्योंकि जब गई बात हाथ ही नहीं आ सकती है तो उसके वास्ते रोना और तड़पना मूर्खता नहीं तो और क्या है? तुमको तो यह समझना चाहिए कि जैसे रेलमें इधर उधरके मुसाफिर मिल जाते हैं और घड़ी दो घड़ी आपसमें बातचीत करके कोई पहले उतर जाता है और कोई पीछे, कोई इधर चल देता है और कोई उधर, बिल्कुल इस ही तरह इस दुनियाके लोगोंका मेल है। इस कारण जिसप्रकार रेलमें एक मुसाफिरके उतरने पर दूसरा मुसाफिर दुखी नहीं होता और न रोने बैठ जाता है, उसही प्रकार इस दुनियामें भी किसी एकके चले जाने पर दूसरोंको तड़पना और जान खोना मुनासिब नहीं है। हाँ, अगर रोने कलपने और लोटने पीटनेसे वह जानेवाला लौट आया करता, तब तो कुछ बात भी थी; पर यह तो हो नहीं सकता। वह जानेवाला तो ऐसी जगह गया ही नहीं, जहाँसे लौटकर आ सके; फिर कैसा मोह और कैसा तड़पना, यह तो निरी मूर्खता और पागलपन ही नहीं है।

पिछले भोग-विलासोंको याद करना पाप है।

मेरी बहनो, हिन्दुस्तानके सब ही धर्म यह बात कहते हैं कि जीवकी ८४ लाख योनियोंमेंसे एक मनुष्य—योनि ही ऐसी है, जिसमें धर्म साधन हो सकता है। मनुष्यजन्म सिवाय और किसी भी जन्ममें धर्मसाधन नहीं हो सकता है और साथ ही इसके यह भी कहते हैं कि मनुष्यपर्याय पाना भी कोई आसान बात नहीं है, बल्कि बहुत ही भारी पुण्य कर्मोंसे कदाचित् यह मनुष्य-जन्म मिल सकता है। इस वास्ते अगर इस उत्तम मनुष्य जन्म-को ऐसी बातोंके याद करनेमें गँवा दिया जावे जो किसी तरह भी प्राप्त नहीं हो सकती हैं तो यह महा मूर्खताकी बात नहीं तो और क्या है ? इस वास्ते मेरी बहनो, अब तुम पिछले मोहको छोड़ो और कड़ा मन करके सच्चे तौर पर अपना अगन्त सुधारनेमें लग जाओ। जब जब तुमको पिछली बातोंकी याद आवे तब तब तुम अपने मनको इस प्रकार समझाकर इन खयालोंको हटा दो कि जब मैं अब वह ही नहीं रही हूँ जो पहले थी, तो अब पहली बातोंके खयाल भी मेरे पास क्यों आते हैं? पहले मैं सधवा थी और अब विधवा हूँ। पहले इस संसारके सब ही भोग विलास मेरे वास्ते शोभाकी बात थे, पर अब वे ही भोगविलास मेरे लिए कलंककी बात हैं। इस वास्ते अब मेरे हृदयमें पहली बातोंका खयाल आना बिलकुल ही अनुचित और बहुत ही शर्मकी बात है। इसके

सिवाय अब तो मैंने सब ही प्रकारके मोहको त्याग-कर अपने कर्मोंको काटने और अपनी आत्माकी सच्ची उन्नति करनेका बीड़ा उठाया है । इसवास्ते अब मुझे पुराने स्वाँगके याद करनेसे क्या मतलब और गई गुजरी बातोंको खयालमें लानेकी क्या जरूरत । अब तो उन बातोंका और मेरा पूरा पूरा वैर है, आग और पानीकी लड़ाई है । क्योंकि पहली बातें तो मोहकी तरंग और भोग-विलासकी उमंगके सिवाय और कुछ भी नहीं हैं, और अब मैंने मोहका तो सत्यानाश करना शुरू कर रक्खा है और भोगविलासकी बातोंको जहर समझ रक्खा है । इसवास्ते अब पुरानी बातोंसे मेरा क्या वास्ता और उनके मेरे ध्यानमें आनेकी क्या गरज । पुरानी बातें तो अब अगर एक पलभरके वास्ते भी मेरे मनमें आ जावेंगी तो मेरे सारे बने बनाये कामको ढा-फोड़ जावेंगी, अर्थात् मेरे शान्त परिणामोंको ऐसा बिगाड़ जावेंगी कि फिर इन परिणामोंको सुधारनेके वास्ते मुझे नये सिरेसे ही कोशिश करनी पड़ेगी । इसवास्ते पुरानी बातोंको तो अब मेरे खयालके पास भी नहीं फटकना चाहिए । दुनियाके लोग जिसप्रकार अपने चौकेको झाड़-बुहारकर और लीप-पोत कर पवित्र बनाते हैं उसी तरह मैंने अपने हृदयको पवित्र बनाया है, और जिसप्रकार दुनियाके लोगोंका चौका किसी अपवित्र वस्तुके छूनेसे अशुद्ध हो जाता है, और दोबारा चौका लगानेकी जरूरत पड़ जाती है, उसीप्रकार मेरा पवित्र

हृदय भी पुरानी गंदी बातोंके याद आनेसे अशुद्ध हो जाता है, जिसको फिर दोबारा शुद्ध करनेकी जरूरत पड़ जाती है। इसवास्ते पुरानी बातोंसे तो अब मुझे दूर ही रहना चाहिए। पुरानी बातें तो अब मेरे लिए बहुत ही घिनावनी और हानि करनेवाली हो गई हैं।

शोक और विलाप करना महापाप है।

मेरी बहनो, यह मोह ऐसी बुरी बला है कि इसमें फँसकर आदमी बिल्कुल ही अंधा हो जाता है और अपना ही सत्यानाश कर डालता है। देखो, आपघात करना सब ही धर्मोंमें महापाप बताया है, तो भी पिछले दिनों बहुत सी स्त्रियाँ पतिके साथ ही जल मरती थीं और इस उत्तम मनुष्यजन्मको व्यर्थ ही गँवा देती थीं। अब अँगरेज सरकारने विधवाओंके जल मरनेकी इस चालको बिल्कुल ही बन्द कर दिया है। लेकिन उसी मोहके वश होकर अब विधवा स्त्रियाँ सारी उमर रोरोकर और मछलीकी तरह तड़प-तड़पकर अपना जन्म गँवाती हैं और अगले जन्ममें दुख पानेके वास्ते पापोंकी भारी पोट बाँध लेती हैं।

मेरी बहनो, शायद तुम्हें यह मालूम नहीं है कि शोक या विलाप करने और रोने-झींकनेसे महान् पाप बँधते हैं। इसी कारण तुम निडर होकर रात दिन शोक करनेमें ही लगी रहती हो। खैर अबतक तो जो हुआ सो हुआ, पर आगेको सँभल

जाओ और शोक करना बिल्कुल ही छोड़ दो। शोक वही करता है जो मोहमें बावला हो जाता है, बेबस होकर जिसकी अक्ल ठिकाने नहीं रहती है, मन जिसका बेकाबू हो जाता है और जो इस बातका विचार ही नहीं कर सकता है कि शोक करनेसे कुछ लाभ भी होगा कि नहीं। धर्मात्मा पुरुष मोहमें डूबकर अपनी अक्ल नहीं खो बैठता है। इसवास्ते वह कभी शोक नहीं करता है। बल्कि वह भली बुरी सब ही दशाओंमें संतोष करता है और दुख सुखकी सर्व अवस्थाओंमें एक समान रहता है। धर्मात्मा पुरुष खूब समझता है कि इस दुनियामें पापपुण्यके सिवाय और कुछ भी नहीं मिलता है। इसवास्ते वह हमेशा पापोंसे बचने और पुण्य प्राप्त करनेकी ही कोशिशमें लगा रहता है। वह यह बात भी अच्छी तरह जानता है कि पापपुण्य सब अपने ही अच्छे बुरे परिणामोंसे पैदा होता है। इसवास्ते वह हरवक्त अपने परिणामोंकी ही सँभाल और देखभाल रखता है और ऐसे विचार किसी तरह भी अपने हृदयमें नहीं आने देता है, जिससे मोह उत्पन्न हो और मन बेकाबू हो जाय।

पिछले सुखोंका बार बार चिन्तवन करना, किसी अपने प्यारेको याद कर करके रोना, अपनी इच्छाके अनुसार सुख भोग न मिलनेके कारण तड़पना, ये सब बातें परिणामोंको गँद्-लाकर देनेवाली और महापाप पैदा करनेवाली हैं। इस वास्ते मोहको दूर करने और परिणामोंको शुद्ध और पवित्र बनानेके

लिए सबसे पहले शोक करने, हृदयको तड़पाने और दुख माननेको त्यागना चाहिए, और हरवक्त शांत परिणाम रखने और सर्व अवस्थाओंमें आनन्द रहनेका अभ्यास करना चाहिए और समझना चाहिए कि इस दुनियामें यह उमर तो बितानी ही है; हँसकर बिताई तो भी बीतेगी और रोकर बिताई तो भी बीतेगी। हँसकर बितानेसे कुछ खोया नहीं जायगा और रोकर बितानेसे कुछ मिल नहीं जायगा। हाँ, यह बात जरूर होगी कि रोकर बितानेमें तो पाप बँधेंगे, जिससे आगेको भी रोना ही मिलेगा और सन्तोष करके हँसकर बितानेमें पुण्यबंध होगा, जिससे आगेको भी सुख ही मिलेगा।

अहंकार भी दुःखदायक है।

मेरी बहनो, जिस तरह यह मोह दुखदायक है उसी तरह अहंकार भी महादुखदायक है। इस अहंकारके ही बस होकर बहुतसी विधवा बहनें यह विचार कर करके तड़पती रहती हैं कि हाय अब हमें दूसरोंके अधीन रहना पड़ेगा और बाजारसे एक पैसेका नमक तक मँगानेके वास्ते मेरे तेरेकी खुशामद करते फिरना पड़ेगा। पहले मैं ही चारके हाथ पर टुकड़ा रखकर खाती थी और अब दूसरे ही मेरे हाथ पर टुकड़ा रक्खा करेंगे। ये मेरी देवरानी जेठानी हैं जिनको मैं ध्यानमें भी नहीं लाती थी, ये एक कहती थीं तो मैं सौ सुनाती थी, हाय! क्या अब मुझे इनहीके आसरे रहना पड़ेगा। पहले मैं जिनको मुँह भी

नहीं लगाती थी, क्या वे ही अब मेरे सामने इतरा इतरा कर बात करेंगी। पहले सबही मुझसे दबते थे, पर अब सभी मुझे दबाया करेंगे। गली-मुहल्लेमें और बिरादरीकी औरतोंमें पहले मेरी कितनी पूछ थी पर अब मुझे कोई कुछ भी नहीं बदेगी। अब तक चाहे मैंने घरमें बैठकर रूखी खाई थी या सूखी, पर बिरादरीके देन-लेनमें और बाँट—बरारमें मैं किसीसे कम नहीं रही थी; औरोंने दो पैसे दिये तो मैंने चार ही दिये होंगे। पर क्या अब मुझे सबसे छोटी बनकर रहना होगा। हाय, अब मैं किस बिर्ते पर बड़े बोल बोलूँगी और किसके सहारे पर अकड़ूँगी इतराऊँगी। अब तो मुझे हरएक बातमें नमानी ही बन कर रहना पड़ेगा।

इसही प्रकार और भी सैकड़ों अहंकारभरे विचार उठा उठाकर हमारी विधवा बहनें दुखी होती रहती हैं, अपने जीको जलाती रहती हैं और उनकी माँ-बहनें रिश्तेदार और मिलने जुलनेवालियाँ भी उनके सामने ऐसी ही ऐसी बातें कर करके उनके अहंकारको भड़काती रहती हैं, तथा जलती आगमें लकड़ियाँ डाल-डाल कर इस आगको दूनी दूनी भड़काती रहती हैं। प्यारी बहनो, तुम्हारे अहंकारको इस तरह भड़काते रहनेसे तुम्हारे सम्बंधियों और मिलनेवालियोंका तो कुछ नहीं बिगड़ता है, बल्कि उनका तो यह फ़ायदा होता है कि वे तुम्हारी दर्दी और गर्जी समझी जाने लगती हैं और ऐसी

बातोंके करनेसे उनका दो घड़ीका एक खेल सा भी हो जाता है; लेकिन इन बातोंसे तुम्हें बहुत दुःख होता है। क्यों कि तुम्हारे हृदयमें ये सब बातें शूलकी तरह चुभती रहती हैं और व्यर्थ ही तुम्हें तड़पाती रहती हैं। इसके सिवाय अहंकार करनेका महा पाप जो तुम्हारे सिर चढ़ता रहता है वह रहा अलग।

मेरी बहनो, कभी तुमने यह भी सोचा है कि अहंकार करके इस प्रकार तड़पनेसे हमें कुछ लाभ भी होगा, या अपने हृदयको वृथा दुखी करनेके सिवाय और कुछ भी नहीं मिलेगा। आदमीको काम वह ही करना चाहिए, जिसमें कुछ फायदा हो। दुख उसी कामके वास्ते उठाना चाहिए जिससे कुछ हाथ पल्ले पड़े। पर तुम्हारे इस अहंकारसे तो अपने दुखोंको और ज्यादा बढा लेनेके सिवाय और कुछ भी नहीं मिल सकता है। विधवा बहनो, तुम अच्छी तरह समझ रक्खो कि तुम्हारे कर्मोंने जो अवस्था तुम्हारी बना दी है वह अहंकार करनेसे एक रत्तीभर भी नहीं सँवर सकती, बल्कि और ज्यादा ज्यादा बिगड़ती है। हाँ, संतोष करने और जैसी भी अवस्था हो वैसा ही बन जाने और वैसा ही अपनेको समझ लेनेसे दुख बहुत हल्का हो जाता है और इससे आगेके वास्ते भी अच्छे ही कर्म बँधते हैं।

मेरी विधवा बहनो, तुम्हें यह भी तो विचारना चाहिए कि

आदमी अहंकार करे भी तो किस बिर्ते पर करे। इस मनुष्यकी हस्ती ही क्या है जिसके ऊपर यह अकड़े और मान करे। पानीके बुलबुलेके समान तो इसकी सारी करामात है। जो पल बीत रहा है उससे दूसरे पलका तो निश्चय नहीं कि मैं दुनियामें भी रहूँगा या नहीं। नित्य अपनी आँखोंसे देखनेमें आता है कि कभी कहीं धूप है और कहीं छाया, कभी कहीं दिन है और कहीं रात। आज जो हाथीका सवार था कल उसहीको रोटीका टुकड़ा भी अच्छी तरह खानेको नहीं मिलता और कल जो दो पैसेके रोजगारके वास्ते जनेजनेकी खुशामद करता फिरता था वही आज धन्नासेठ बना बैठा है। गरज दुनियाका हाल सदा उलटता पलटता ही रहता है, एक हालतमें किसी तरह भी नहीं रह सकता है। फिर आदमी किस भरोसे पर तो घमंड करे और किस खूँटेके सहारे तिंघड़े। आदमीको तो यह ही मुनासिब है कि जो भी उसकी अवस्था हो उसहीको गनीमत समझे, उसहीमें संतोष करे, और सदा यह विचार करता रहे कि अगर कलको यह भी अवस्था न रही और इससे भी ज्यादा बिगड़ गई तो मैं क्या कर लूँगा। ऐसा ऐसा विचार करके आदमीको हरवक्त ही धीरज रखना चाहिए और मनमें अहंकार लाकर कभी दुखी नहीं होना चाहिए।

विधवा बहनो, तुम जो अपनी पिछली बातोंका अहंकार कर रही हो और ऐसा विचार कर करके जो तुम दुखी हो रही

हो कि पहले मैं इस बातमें बड़ी थी और उस बातमें ऊँची थी, तो क्या तुम उसवक्त दुनियामें सबसे ही बड़ी और सबसे ही ऊँची थीं ? जरा आँखें खोलो और अक्कको ठिकाने करके विचारो कि अव्वल तो तुम्हारे ही गाँवमें हरएक बातमें तुम्हारेसे ऊँची अनेक मौजूद थीं और दूसरे शहरोंमें तो एकसे एक बढ़िया ऐसी मौजूद हैं जिनके नौकरों और बाँदियोंकी भी तुम बराबरी नहीं कर सकती थीं। गरज पहले भी तुम हजारों और लाखोंसे घटिया थीं और हरबातमें घटिया थीं, फिर तुम अहंकार किस बातका कर रही हो और इस वक्त अपनेको घटिया समझकर क्यों अपनी जान गँवा रही हो। यह बात तुम खूब अच्छी तरह समझ रक्खो कि दुनिया में सब ही घटिया हैं और सब ही बढ़िया हैं। क्योंकि हरएक आदमी लाखोंसे तो घटिया है और लाखोंसे बढ़िया। इस वास्ते पहले भी तुम लाखोंसे घटिया थीं और लाखोंसे बढ़िया, और अब भी तुम लाखोंसे घटिया हो और लाखोंसे बढ़िया। इसवास्ते अहंकार करना बिल्कुल व्यर्थ और झूठा है। याद रक्खो कि आसमानका थूका मूँह पर पड़ता है और घमंडका सिर टूटता है। इसवास्ते पिछली बातोंका अहंकार करते वक्त मनमें सोचो और डरो कि अगर कलको यह भी हालत न रहे और इस वक्तसे भी बहुत घटिया अवस्था हो जावे तो हम क्या कर लेंगी। वह हालत भी तो भुगतनी ही पड़ेगी। इसवास्ते हम अपनी इस वक्तकी ही अवस्थाको अच्छी क्यों न समझें, क्यों सब्र और संतोषके साथ

अपने दिन न बितावें, और क्यों वृथा अहंकार करके मन-ही-मन तड़पें और दुख उठावें।

मेरी विधवा बहनो, इस मामलेमें तुम्हारे लिए सबसे मुश्किलकी बात यह आन पड़ी है कि अगर तुम अपने मनको संतोष भी देती हो, तो दुनियाकी औरतें तुमको संतोष करने नहीं देती हैं। और तो और तुम्हारी नाइन धोबिन, कहारी कुम्हारी और चूढ़ी चमारी भी तुम्हारी पिछली बातोंको छोड़ कर और तुम्हारे अहंकारको भड़का कर जब चाहें तुम्हें रुला जाती हैं और तुम्हारे चित्तमें गड़बड़ मचा जाती हैं। जहाँ उन्होंने तुम्हारी तारीफ करनी शुरू की कि बहूजी, तुम्हारा तो बहुत बड़ा हाथ था, तुम्हारे यहाँसे तो हमको सब कुछ मिला है, तुम्हारे ही हाथोंसे बहुतेरा कुछ खाया पिया है, पर कर्मोंकी रेखको कोई क्या करे, और तुम तो अब भी हमारे देनेमें कुछ कसर नहीं रखती हो। हमने अपनी इन्हीं आँखोंसे क्या कुछ नहीं देखा है। इतनी चीज तो तुम्हारे कुत्ते खाजाते थे जितनी अब सारी बनती है। इतनी इतनी चजिें तो तुम्हारे यहाँ आलों-दिवालोंमें पड़ी रहती थीं जितनी अब सारी आती हैं। कभी किसी बातका खयाल ही नहीं किया। हमने एक चीज माँगी तो दो दे दीं। हमही तो हैं जो नित्य पल्ले भर भर ले जाया करती थीं, क्या भूल थोड़ा ही जा सकती हैं ऐसी बातें, खैर अब भी भगवान्का शुकर है, हमारे लिए तो अब भी कसर नहीं रखती हो।

प्यारी बहनो, जहाँ तुमने इन कमीनोंकी ऐसी बातें सुनीं और तुम्हें अहंकार आया। इनकी ऐसी बातें मिलानेसे इनको तो तुम अभिमानमें आकर एक चीज देती हुई दो दे देती हो, इस वास्ते ये तो अपना खूब काम बना ले जाती हैं, मगर तुम्हारा काम बिल्कुल ही बिगाड़ जाती हैं। क्योंकि उसी वक्तसे तुम्हारी आँखोंसे टप टप आँसू पड़ने शुरू हो जाते हैं। हृदयमें अनेक विचार उठकर चित्त बिल्कुल ही उथल पथल हो जाता है। मनकी शान्ति भंग होकर एक खयाल आने लगता है। और एक जाने। इस तरह हृदयमें एक भारी गड़बड़ मचकर तुम्हारे भाव बिगड़ जाते हैं और परिणाम मैले हो जाते हैं। इस वास्ते तुमको अपनी सँभाल हरवक्त रखनी चाहिए और ऐसा कच्चा मन नहीं रखना चाहिए कि ऐसे ऐसे कमीनोंके भड़कानेसे भी भड़क उठे। इसके सिवाय तुम ऐसी बातें बनानेवाले कमीनोंके कभी मुँह मत लगो और उनकी बातों पर कभी ध्यान मत दो। बल्कि उनको अच्छी तरह समझा दो जिससे वे फिर ऐसी बातें करके तुम्हारे दिल-को न दुखाया करें, और तुम्हारे परिणामोंको बिगाड़कर तुम्हारे धर्मसाधनमें हर्ज न डाला करें। अच्छी तरह याद रक्खो कि अपने परिणामोंका सुधारना और मनमें शान्ति रखना ही सच्चा धर्मसाधन है। इस वास्ते अपने परिणामोंकी सँभाल हर वक्त रखनी चाहिए और इन्हें किसी वक्त भी बिगड़ने नहीं देना चाहिए।

ईर्ष्या डाह करना महामूर्खता है।

मेरी बहनो, अहंकार बहुत बुरी बला है! इस अहंकार-से ही क्रोध उत्पन्न होता है और इसहीसे डाह पैदा होती है। क्रोध आनेपर आदमी बिल्कुल पागल हो जाता है। उसे अपने परायेकी कुछ खबर नहीं रहती है। यहाँ तक कि क्रोधमें आकर वह अपना भी नाश करने लग जाता है। इस वास्ते क्रोध करना बहुत ही भारी पाप है। लेकिन क्रोध बहुत करके कमजोरोंको ही आता है। क्यों कि कमजोरीके कारण वह अपने मनको नहीं थाम सकता है। पर वह दूसरेका तो कुछ कर सकता नहीं, इस वास्ते अपने ही आपेमें जल-जल कर, अपना ही सिर फोड-फोड़ कर और अपनी ही चीजोंको फेंक-पटककर वह अपमा ही नुकसान करता रहता है, किसी दूसरेका कुछ नहीं बिगाड़ता। मेरी विधवा बहनो, तुमको अपने हृदयमें कभी क्रोध नहीं आने देना चाहिए। बल्कि सब कुछ सहन करने और मनको सदा शान्त बनाये रखनेकी ही आदत डालनी चाहिए, जिससे तुम्हारे धर्मसाधन और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनानेमें कुछ हर्ज न पड़े।

अब रही ईर्षा डाहकी बात, सो यह तो सबसे ही ज्यादा बुरी बात और अत्यंत ही मूर्खताका काम है। क्योंकि डाह करनेवाला तो अपनी बढ़ती नहीं चाहता, बल्कि दूसरोंकी बढ़ती देखकर दुखी होता है। अपनेको चाहे कुछ भी प्राप्त न हो,

पर वह तो दूसरोंको सुखी देखकर जल मरता है। इसवास्ते डाह करनेके बराबर तो दुनियामें और कोई पागलपनकी बात ही नहीं है। एक सेठजी किसी कारणसे बहुत गरीब हो गये और अपनी पहली बातोंको याद कर करके खूब तड़पने और दुख उठाने लगे। होते होते उनको कोई महात्मा मिल गये, जिन्होंने किसी कारणसे उनको एक ऐसा मंत्र बता दिया, जिसके जपनेसे जो चाहे प्राप्त हो जाय। लेकिन उस मंत्रमें एक अद्भुत शक्ति यह भी थी कि मंत्र जपनेवाला उस मंत्रसे जो भी चीज अपने वास्ते प्राप्त करे उससे दुगनी दुगनी चीजें उसके पड़ौसियोंके यहाँ होती रहें। सेठजी मंत्रको सीखकर खुश होते हुए घर आये और मंत्र जपकर प्रार्थना करने लगे कि मेरे यहाँ इतने महल, इतने घोड़े, इतने हाथी और इतना धन हो जाय। मंत्रके जोरसे तुरंत यही सब चीजें प्राप्त हो गईं, लेकिन उनके पड़ौसियोंके यहाँ भी ये चीजें दुगनी दुगनी हो गईं। मतलब इसका यह हुआ कि उसके यहाँ अमीरी ठाठ भी लग गये; वह मालदार भी हो गया और सुखभोगकी सब चीजें भी उसको मिल गईं; लेकिन औरोंके यहाँ भी वे सब चीजें दुगनी दुगनी हो जानेसे उसकी हैसियत उसके पड़ौसियोंसे आधी ही रही। एक बार तो वह इन चीजोंके पानेसे बहुत खुश हुआ, लेकिन जब घरसे बाहर निकलने पर उसको यह मालूम हुआ कि पड़ौसियोंके यहाँ ये सब चीजें मेरेसे भी दुगनी हो गई हैं और मैं उनसे घटिया ही रहा हूँ तो वह अहंकारके

वश होकर बहुत दुखी हुआ। अब वह सोचने लगा कि मैं अपने मंत्रके जोरसे और भी चाहे जितनी चीजें प्राप्त कर लूँ तो भी मैं तो उनसे कम ही रहूँगा। क्योंकि जितनी जितनी चीजें मैं प्राप्त करता जाऊँगा उससे दुगुनी दुगुनी उनके यहाँ होती रहेंगी। इस वास्ते यह मंत्र तो मुझे सुख देनेवाला नहीं है, बल्कि दुख देनेवाला है। क्योंकि घटती बढ़ती ही तो दुनियामें एक बात है और बातहीका दुनियामें मोल है। जब इस मंत्रसे मेरी बात ही बढ़िया न हो सकी, बल्कि मैं घटिया ही रहा तो फिर क्या मैं इस मंत्रको चाँटूँ!

इस प्रकार अहंकारमें बावला होकर वह विचारने लगा कि आदमी सौ फरेब और सौ बेईमानी करके, रात दिन अपनी हड्डियाँ पेलकर, जान जोखममें डालकर और खून पसीना एक करके जो कुछ कमाई उमर भर करता है, उसको न आप खाता है और न अपने घरवालोंको खाने देता है। बल्कि ज्यों त्यों गुजारा करके कौड़ी कौड़ी जोड़ता है और सब बेटा-बेटियोंके विवाहोंमें झोक देता है या धर्मके नाम पर लुटा देता है। ये सब काम वह क्यों करता है? बस एक बात हाथ आनेके वास्ते ही तो; सो वह ही बात मेरे हाथ न आई। मैं तो ऐसा बढ़िया मंत्र मिलने पर भी घटिया ही रहा, और मेरे पड़ौसी मुझसे दुगने होकर मुफ्तमें ही बात उड़ा ले गये। इस प्रकार पड़ौसियोंकी बढ़ती देख देख कर उस सेठको आग लगी जाती थी और वह बहुत बेचैन होता था।

आखिर उसने विचार किया कि मुझे चाहे एक भी चीज न मिले यह तो मैं सह लूँगा, पर इन पड़ौसियोंके यहाँ अपनेसे दुगनी दुगनी चीजोंका हो जाना मुझसे सहन नहीं हो सकता। इस वास्ते उसने अपने मंत्रसे कहा—"मेरे पास एक भी चीज न रहे।" ऐसा कहते ही तुरंत उसकी सब चीजें नष्ट हो गईं और वह पहलेकी तरह कंगाल हो गया और उसके पड़ौसि-योंके यहाँ भी जो चीजें मंत्रके प्रभावसे हो गई थीं वे भी जाती रहीं, और वे भी वैसे ही रह गये जैसे कि वे पहले थे। ऐसा हो जाने पर सेठका चित्त कुछ ठिकाने आया और वह मनमें कहने लगा कि अब मैं अपनी कंगाली तो ज्यों त्यों काट लूँगा, पर अपने पड़ौसियोंकी ऐसी बढ़वारी मेरेसे किसी तरह भी नहीं देखी जा सकती थी!

सेठ इस प्रकार अपने दिन कंगालीमें काटने लगा। फिर कुछ दिन पीछे वे ही महात्मा जिन्होंने उसको मंत्र दिया था वहाँ आनिकले और सेठको कंगालीमें देख कर अचंभा करने लगे। सेठने उनको अपना सब हाल सुनाया और उलाहना देकर कहा—"महाराज, तुमने तो अपना मंत्र देकर मेरी बात ही आधी कर दी थी और मुझे किसी जोग भी नहीं रक्खा था।" महात्माको उसकी बात सुनकर बहुत हँसी आई। उन्होंने सेठसे कहा कि "भाई, मैंने तो तुझको कंगाल देखकर दया करके वह मंत्र दिया था जिससे तुझको दुनियाकी सब चीजें प्राप्त होती रहें और तू सर्व प्रका-

रका सुख भोगे, और तेरे पड़ौसियोंके यहाँ दुगनी दुगनी चीजें पैदा करनेकी शक्ति इस मंत्रमें इसवास्ते रख दी थी कि वे लोग तेरे सुखभोगको देखकर तेरे साथ डाह न करने लगें। पर अब तेरी इन बातोंसे मालूम हुआ कि तुझको तो संसारके भोगोंकी दरकार नहीं है, बल्कि तू तो अपनी डाह पूरी करना चाहता है, अर्थात् तुझे चाहे कितना ही दुख मिले, परंतु औरोंको तू सुखी नहीं देख सकता है। बल्कि उनको अपनेसे ज्यादा दुखी देखनेमें ही सुख मानता है। पर भाई, तेरी यह बात भी तो इसी मंत्रसे पूरी हो सकती थी। क्योंकि जब तू इस मंत्रसे कहता कि मेरी एक टाँग टूट जा, तो तेरी तो एक टूटती और तेरे पड़ौसियोंकी दो दो टूट जातीं। इसी प्रकार जो जो दुख तू अपनेको देता उससे दुगना दुगना दुख तेरे पड़ौसियोंको हो जाता।"

यह बात सुनकर सेठ बहुत खुश हुआ और उसने तुरन्त ही अपने मंत्रसे कहा कि "मेरी एक आँख फूट जा" और चट वह काना हो गया, फिर वह दौड़ा दौड़ा अपने मुहल्लेमें गया और अपने सब पड़ौसियोंको निपट अंधे बने हुए देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ और खुशीके मारे अंगमें फूला न समाया। फिर उसने मंत्रके द्वारा अपनी एक टाँग और बाँह भी तुड़वाकर अपने पड़ौसियोंको बिल्कुल ही टुंटमुंड बनवा दिया! उसने उस मंत्रके द्वारा इसी प्रकारके और भी बहुतसे काम किये, जिसमें अपनेको तो आधी तकलीफ हो और पड़ौसियोंको

पूरी। इस तरह उसने अपने आपको महाकष्टमें डालकर परन्तु अपने पड़ौसियोंको अपनेसे दुगना कष्ट देकर बहुत ही आनन्द मनाया और अपने जन्मको सफल जाना।

मेरी बहनो, यद्यपि यह कहानी बिल्कुल बनावटी है, लेकिन इससे यह बात अच्छी तरह मालूम हो जाती है कि डाह करनेवालेके विचार कैसे होते हैं और उसकी क्या गति होती है। बहनो, तुमको यह कहानी सुनकर आश्चर्य होता होगा कि ऐसा कौन बेवकूफ होगा जो अपना नुकसान करके दूसरोंको दुख देना चाहता हो और फिर आप खुश भी होता हो। मगर मेरी बहनो, जब तुम दुनियाके लोगोंकी चालको गौरके साथ देखोगी तो तुमको मालूम हो जायगा कि अपनी नाक कटा कर दूसरोंका अपशकुन मनानेवाले बहुत हैं। चाहे मेरा ईंटका घर मिट्टीका हो जाय, चाहे मेरे सूतके बिनौले हो जायँ, पर एक बार तेरी ईंटसे ईंट बजा देनी है। चाहे मेरा कितना ही नुकसान हो, चाहे मुझे कितनी ही मुसीबत उठानी पड़े पर एक दफे तुझे तेरे घमंडका मजा चखा देना है। चाहे मुझे कैद भुगतनी पड़े, चाहे पीछेसे मैं फाँसी ही पाऊँ, पर एक दफै तेरी शेखी ढीली कर देनी है। इस प्रकारकी अनेक बातें और इसी तरहके अनेक काम नित्य देखनेमें आते हैं, जिनमें गुस्सा और डाह दोनों मिले हुए होते हैं। खालिस डाह बहुत करके निर्बल हृदयवालोंको

हीं होती है, जो कर तो कुछ सकते नहीं, सिर्फ दूसरोंको देख-कर ही जलते रहते हैं।

बहुत रोने और तड़पनेसे विधवाओंका हृदय बहुत कमजोर हो जाता है। आशा किसी बातकी रहती नहीं, कर कुछ सकतीं नहीं, इस वास्ते विधवाओंमें डाह बहुत बढ़ जाती है। यह सच है कि पाँचों उँगलियाँ एकसीं नहीं होतीं, लेकिन कोई कोई तो ऐसी कठोर हृदयकी होती हैं कि अपने ही कुटुम्ब-वालोंको देख देख कर जलती रहती हैं और मनमें ऐसी बुरी बुरी भावनायें करती रहती हैं जिनको सुन कर भी दिल दहलने लगे। वे अपनी देवरानी, जेठानी और कुटुम्बके लोगोंको भोग-विलासोंमें लगे हुए और आनन्दमें मग्न देखकर जी-ही-जीमें जलने लगती हैं और मन-ही-मन कोसने लगती हैं कि इन पर भी रँडापा आवे और इनके भी पति मर जावें, तब जानें ये पराई पीरको। आपसमें हँस खेल कर और प्यार मुह-ब्बतमें घुल-मिलकर जैसा यह मेरे जीको जला रही हैं, ऐसा ही जी इनका भी जले तब जानें ये रँडापेकी हकीकत। हाय हाय, इनका कैसा पत्थरका हिया है कि जिस घरमें मेरे जैसी कर्मोंकी फूटी और रामकी खोई एक तरफ पड़ी मछलीकी तरह तड़प रही हो और जलते अंगारों पर लोट रही हो, उस ही घरमें ये लोग ऐसी रंग-रलियाँ करें। हे परमेश्वर, अगर तेरेमें शक्ति है तो एक दफे तो तू इन सबको रँडापेका मजा चखा दे, जिससे इनकी आँखें तो खुलें, जिससे फिर ये मेरे जीको

न जलाया करें और आपसमें हँस-बोलकर मेरे सूखे हृदयमें दियासलाई न लगाया करें। हे परमेश्वर, एक बार तो तू ऐसा कर दे, फिर जो तेरे जीमें आवे सो करना, पर एक दफे तो तू जरूर तमाशा दिखा दे।

हे भगवन्, तू ही इन्साफ कर कि जब ये लोग अपने बालबच्चोंके साथ प्यार करते हैं, गोदीमें लेकर उनका मुँह चूमते हैं, मुहब्बतके साथ उनको छातीसे लगाते हैं, उनकी तोतली बोली और मीठी मीठी बातें सुनते हैं, उनके साथ अनेक प्रकारका लाड़-चाव करके अपनी छाती ठंडी करते हैं और उनका ब्याह सगाई करके अपने दिलकी उमंग निकालते हैं, तब क्या मेरे हृदयमें आग न लगे! यह रँडापा न मिलता तो क्या इसी तरह मैं भी न खिलाती अपने बालकोंको; मेरे तो अबतक तीन चार हो लिये होते। हे परमेश्वर, या तो तूने हमें राँड न बनाया होता और जो राँड ही बनाया था तो औरों जैसा हृदय न दिया होता और न हमारे हृदयमें भी औरों जैसी चाह पैदा करी होती, और अब जब तूने हमको राँड भी बनाया है और हृदय भी औरों ही जैसा दे रक्खा है और हृदयमें चाह भी सबके ही समान उत्पन्न कर रक्खी है, तो तू हमारे सामनेसे यह सब तमाशे हटा दे, जो हमारे देखनेमें आ रहे हैं। अर्थात् या तो सारी दुनियाको हमारे जैसा बना दे, या हम राँडोंकी दुनिया ही अलग बसा दे! बस, फिर न कुत्ता देखेगा और न भौंकेगा। वह अपने घर राजी

और हम अपने घर राजी। वह अपनी दुनियामें रह कर स्वर्ग सुख भोगो और हम अपनी अलग दुनिया बसा कर नरकके त्रास झेलें, इसमें कुछ हर्ज नहीं है। क्यों कि न हम उनके भोग देखेंगी और न वे हमारे त्रास। उनके भोगोंको न देखनेसे न हमारे हृदयमें आग लगेगी और न हमारे त्रास देखकर उनके आनन्दमें खलल पड़ेगा। और हे भगवान्, तू और भी जितना चाहे दुख हम पर डाल दे वह हम सब झेल लेंगीं; पर अपनी आँखोंके सामने औरोंको मौज उड़ाते, आनन्द मनाते और चैन करते हमसे नहीं देखा जाता है। इसको सहन करना हमारी शक्तिसे बाहर है।

प्यारी बहनो, मूर्ख विधवाओंके हृदयके ये खोटे खोटे विचार मैं उनकी निंदा करनेके वास्ते नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि यह दिखलाना चाहता हूँ कि पूर्व जन्मके पापकर्मोंका खोटा फल भोगता हुआ भी यह मनुष्य इस बातकी तो कोशिश करता नहीं कि आगेको तो पापोंसे बचूँ; बल्कि अपने परिणामोंको बिगाड़ बिगाड़ कर और भी ज्यादा ज्यादा पाप बटोरने लग जाता है। हमारी सभी विधवा बहनोंको यह तो निश्चय है कि पूर्व जन्मके पाप कर्मोंसे ही उनकी यह दुर्दशा हुई है और वे यह भी जानती हैं कि किसीका बुरा मनाना, किसीके लिए खोटा चिन्तवन करना, और किसीके नुकसानकी भावना करना बहुत ही भारी पाप है, और ऐसे ही पापोंसे रंडापा मिलता है या नरककी घोर वेदना भोगती पड़ती है; लेकिन

तो भी विधवा हो जाने पर वे ऐसे खोटे खोटे परिणाम दुगना दुगना करती हैं और सदा दूसरोंकी बुराईहीका विचार रखती हैं। वे खूब जानती हैं कि ऐसे ऐसे पापरूप परिणामोंसे, ऐसे ऐसे खोटे विचारोंसे किसी दूसरेका तो कुछ भी बिगाड़ नहीं होता, हाँ खोटा चिन्तवन करनेवालेकी आत्मा जरूर खोटी हो जाती है और पापोंकी भारी गठड़ी जरूर ही सिर पर धरी जाती है, जिसके कारण आगेको भी न मालूम कितनी बार विधवा बनना पड़े, और कैसे कैसे त्रास भोगने पड़ें। परन्तु यह सब कुछ जानती हुई भी वे पापोंसे नहीं डरती हैं और अपने अन्तःकरणको, अपने हृदयको और अपने परिणामोंको शुद्ध और पवित्र रखनेका कुछ भी विचार नहीं करती हैं।

विधवा बहनो, इस मौके पर शायद तुम यह कहने लगोगी कि ऐसी पापिनी ऐसी डाकिनी और ऐसी डायन कौन होगी जो ख्वामख्वाह भी दूसरेका बुरा चिन्तवन करे, जो सबहीको अपने जैसी राँड बनाना चाहे, जो सबहीको अपने जैसी ऊती-नपूती और बे-औलादी बनावे और दूसरोंको दुखी देख कर राजी होती हो। परन्तु मेरी प्यारी बहनो, तुम बुरा मत मानो और क्रोध मत लाओ। क्योंकि अव्वल तो मैंने ही लिख दिया है कि सब ऐसी नहीं हैं, दूसरे यह भी ठीक है कि जितनी बातें मैंने लिखी हैं वे सबकी सब बातें किसीमें भी न हों, पर इतनी बात मैं जरूर कहता हूँ कि अपने कुटम्बि-

योंको आनन्दमें मग्न देखकर बहुत सी विधवाओंके हृदयमें जलन जरूर पैदा होती है और हृदयकी उस जलनमें विचार भी खोटे ही खोटे आते हैं; किसीको कुछ और किसीको कुछ। हमने तो समझानेके वास्ते वे सब खोटे भाव एक जगह लिख दिये हैं, इसी वास्ते वे तुम्हें बुरे मालूम होते हैं। और इस बात पर हमको ज्यादा बहस करनेकी जरूरत भी तो नहीं है। क्योंकि अगर किसीके हृदयमें ऐसे खोटे भाव नहीं आते हैं तो हमें और चाहिए ही क्या, वह तो जरूर सच्ची धर्मात्मा और हमारे पूजनेलायक साक्षात् देवी ही है; उससे तो हम हाथ जोड़कर क्षमा माँगते हैं। परन्तु जिनके हृदयमें ऐसे खोटे भाव आते हों उनको समझाते हैं कि तुम भी अपने परिणामोंको शुद्ध करो और अहंकार और डाहके भाव अपने हृदयसे निकालकर सब्र और संतोषके साथ अपने रँडापेको झेलो और सबका ही भला चाहो, जिससे दयाधर्मका पालन होकर तुमको पुण्यकी प्राप्त हो और आगे सुख भोगो।

सदा सबका ही भला चाहो और कभी किसीका बुरा मत विचारो।

मेरी विधवा बहनो, यह बात तुम जानती हो और मुँहसे भी सदा कहती रहती हो कि दया ही परम धर्म है और दया ही पुण्यप्राप्तिका मूल कारण है; परन्तु धर्म तो तबही होगा और पुण्य भी तबही प्राप्त होगा जब तुम दयाधर्मका पालन करोगी।

याद रक्खो, जिस प्रकार लड्डू लड्डू कहनेसे मुँह मीठा नहीं होता है, उसी तरह दयाधर्मके गीत गानेसे भी कुछ नहीं होता है, जब तक उस पर अमल न किया जाय। इस वास्ते दयाधर्मके स्वरूपको अच्छी तरह समझकर उस पर पूरी तरहसे चलनेकी कोशिश करो; जिससे तुम्हारे पुण्यके भंडार भरें और इस जन्ममें भी और अगले जन्ममें भी तुमको आत्मिक सच्चे आनन्दकी प्राप्ति हो। तुम ध्यान देकर समझ लो कि किसीको किसी प्रकारका दुखिया देखकर हृदयमें उसके दुख दूर होनेका भाव पैदा होनेहीको दया कहते हैं और उसके दुख दूर करनेकी कोशिश करना ही दयाधर्मका पालन है। दयाधर्मका पालन करनेवाला संसार भरके सभी प्राणियोंका भला चाहता है और सदा हृदयमें यही भाव रखता है कि कभी किसी जीवको किसी प्रकारका भी दुख न हो। दयाधर्मका पालन करनेवाला आप चाहे कैसी ही घटिया अवस्थामें हो, आप चाहे कैसा ही कष्ट सह रहा हो; परन्तु वह दूसरोंकी बढ़वारी देखकर और दूसरोंको सुख शान्तिमें मग्न पाकर खुश होता है और सदा यही मनाता रहता है कि सबहीकी वृद्धि हो और सबहीको सदा सर्व प्रकारका आनन्द प्राप्त होता रहे।

परन्तु मेरी विधवा बहनो, "परमेश्वर सदा सबका भला करे" यह बोल सुननेमें तो बहुत ही मनोहर और बोलनेमें बहुत ही मीठा मालूम होता है और इसी वास्ते सब स्त्रियाँ बात बातमें यह बोल बोलती भी रहा करती हैं; परन्तु पालन

इस बोलका वे ही करती हैं, जो सच्ची धर्मात्मा हैं और जिनको अपनी आत्माको सँवार कर अपना अगन्त सुधारना है। दयाधर्मका पालन करनेवाला दुनियाभरके प्राणियों-को अपने सगे भाई बन्धु और अपने कुटुम्बी समझता है और सबकी सर्व प्रकारकी बढ़वारी और सबके लिए सब तरहके सुख और आनन्दकी प्राप्ति उसी तरह चाहता है, जिस तरह माँ अपने बेटेके वास्ते। जिस प्रकार माता हजार कष्ट सहती हुई और दुख दर्दमें तड़पती हुई भी अपने बेटा-बेटीको सुख पहुँचानेमें लगी रहती है, मरती मरती भी उनके सुख-की कोशिश करती है और उनको सुख मिलने पर खुशीके मारे अपना दुख भी भूल जाती है, उसी तरह दया धर्मके पालनेवाले और सबका भला चाहनेवाले भी आप कैसे ही कष्टमें हों, पर दूसरोंको सुखी देखकर अपना सब कष्ट भूल जाते हैं।

इसी तरह मेरी विधवा बहनो, तुम भी विचार लो कि अगर तुमको पुण्य कमाना है और दयाधर्म पालन करके सच्चे हृदयसे सबका भला चाहना है तो तुम अपने आप चाहे कैसी ही मुसीबतमें रहो, मगर अपनी देवरानी जेठानी अपने अड़ौस-पड़ौस और गली मुहल्ले वालों और सभी लोगोंको जिनसे तुम्हारा वास्ता पड़े सुखी देखकर आनन्द मनाओ और उनके सुखमें सुखी हो कर अपनी मुसीबत भूल जाओ। पापोंकी गठड़ी बाँधनेवालीं और अपना अगंत बिगाड़नेवालीं विधवायें तो अपने कुटुम्बियों-

को आनन्दमें मग्न देखकर अपने हृदयमें जलन पैदा करती हैं, उनको मौज करते और हँसते बोलते देखकर रोती और तड़पती हैं और उनके बाल बच्चोंको खेलते कूदते देखकर डाह करती हैं; मगर जिन विधवा बहनोंको अपनी आत्मासे कर्म-कलंक हटाकर अपना अगन्त सुधारना और पुण्य कमाना है, उनको अपने कुटुम्बियोंका सुखभोग देखकर जलन पैदा होनेकी जगह आनन्द पैदा होना चाहिए, रोने तड़पने-के बदले खुशी होनी चाहिए, डाह करनेके स्थानमें उनके लिए ज्यादा ज्यादा बढ़वारीकी इच्छा करनी चाहिए और उनके सुखको ही अपना सुख समझना चाहिए।

लेकिन मेरी बहनो, यह बात मुझे फिर कहनी पड़ती है कि ऊपरके मनसे या सिर्फ लोक-दिखावेके वास्ते ये बातें मत करो। क्योंकि इससे तो तुम्हारी आत्माको कुछ भी फायदा नहीं पहुँचेगा, बल्कि सच्चे हृदयसे ही सबकी भलाईकी कोशिश करती रहो, और सदा अपने हृदयको टटोल कर देखती रहो कि कभी किसकि वास्ते कोई बुराईका भाव तो पैदा नहीं हो गया है। याद रक्खो कि जब और जितना तुम्हारे हृदयमें किसीके वास्ते बुराईका भाव आता है उतना ही उतना तुमको पाप लगता जाता है। इस वास्ते हरवक्त अपने हृदयकी सँभाल रक्खो और कभी किसीके भी वास्ते बुरा भाव अपने हृदयमें न आने दो। सच तो यह है कि

बुरा तो तुम अपने वैरीका भी मत चितारो, क्योंकि इससे भी तुम्हारे परिणाम बिगड़ते हैं और आत्मा मलीन होती है।

कभी अपने वैरीका भी बुरा मत चाहो।

विधवा बहनो, ऐसे अवसर तुम पर अनेक बार आवेंगे और आते रहते होंगे, जब तुम भी लोगोंके हाथसे ठगी जाती होंगी, तुम्हारे भी हक छीने जाते होंगे और अपाहज समझकर तुमको अनेक प्रकारके दुख दिये जाते होंगे; परन्तु ऐसे अवसरों पर भी तुमको अपने हृदयको मैला नहीं होने देना चाहिए, और इन दुष्टोंके वास्ते भी बुरा भाव अपने चित्तमें नहीं आने देना चाहिए। दुनियामें सभी तरहके लोग होते हैं, भले भी और बुरे भी, धर्मात्मा भी और पापी भी, दयावान् भी और हत्यारे भी; जिनमें ईमानदार तो कम और बेईमान ज्यादा होते हैं। इनमें इनेगिने सच्चे धर्मात्माओंको छोड़कर बाकी सब दुनियाके कुत्ते हैं, जो बेचारी विधवाओंको भी धोखा देने और लूटनेसे नहीं चूकते हैं। यहाँ तक कि कभी कभी तो बहुत ही नजदीकके ऐसे रिश्तेदार भी—जो खुद ही उस विधवाकी पालनाके जिम्मेदार होते हैं—उसको लूट खसोट लेते हैं, उसको बिल्कुल नंगी बुच्ची और खाली हाथ करके उससे बिल्कुल बे-गरज और बे-मतलब हो बैठते हैं और उलटे सौ सौ इलजाम उस बेचारी पर ही लगा देते हैं। इनमें कोई कोई तो ऐसे निर्दय देखनेमें आये हैं, जो ऐसी गरीब विधवाको भी लूट खसोट लेते हैं जो बेचारी

पीसना पीसकर और किसी की टहल-टकोरी करके ही अपना गुजारा करती हो और जिसने सौ तरह अपना पेट मसोसकर वक्त बे-वक्तके वास्ते सौ पचास रुपये जोड़ रक्खे हों या अपना सौ पचास रुपयेका गहना जिस तिस तरह थाम रक्खा हो । ये वज्रहृदय लोग इन बेचारियोंका धन क्या हरते हैं सचमुच उनका कलेजा ही निकाल ले जाते हैं और जन्मभरके वास्ते उनको अधमरी कर जाते हैं । परन्तु क्या किया जाय, इन बेचारियोंको तो अपने भाई भतीजोंसे, अपने प्यारों और एतबारवालोंसे नित्य ही ऐसे ऐसे नुकसान उठाने पड़ते है । ये लोग सौ सौ बातें बनाकर, तरह तरहके लालच दिखाकर और पेटमें घुसकर उनका माल ले लेते हैं और फिर तोते कैसी आँख फेरकर बिल्कुल बेवास्ता हो जाते हैं और पहले कुछ दिन टालमटोल करके फिर कोरा जवाब दे बैठते हैं । ये बेबस विधवायें इन दुष्टोंका कुछ कर तो सकती नहीं, इस कारण कुछ दिनों हाय हल्ला मचाकर आखिरको इन्हें चुप होकर ही बैठना पड़ता है ।

किसीको कोसने या उसका बुरा चितारनेसे किसीका कुछ नहीं बिगड़ता है ।

परन्तु विधवा स्त्रियोंको कुछ ऐसा विश्वास होता है और दुनिया भी कुछ ऐसा ही कहती है कि दुखियाकी आहमें कुछ ऐसी जबरदस्त शक्ति है, जिससे धरती फट जाय और आकाशके टुकड़े टुकड़े हो जायँ । इस कारण ये दुखिया स्त्रियाँ

अपने दुख देनेवालेको खूब कोसती हैं और हृदयसे आगके भभ-कारे निकाल निकालकर कहती रहती हैं कि जिसने मुझे नुक-सान पहुँचाया है और जिसने मेरा कलेजा दुखाया है उस पर मेरा ऐसा शाप पड़े कि वह भी मेरी चीजको सुखसे न भोग सके, राम करे वह कोढ़ी हो जाय, उसकी देहमें कीड़े पड़ जायँ और वह बरसों सड़ सड़कर मरे, उसके घरमें कोई 'नाम लेवा' और 'पानी देवा' भी न रहे, मैड़ा फिर जाय उसके घर पर, जोहड़ खुद जाय उसके घरकी जगहमें, उसकी जवान जवान बेटियाँ और बेटेकी बहुयें सब राँड हो जायँ और एक एक दानेको तरसती फिरें। इसी तरहकी और बहुतसी धूँआँधार गालियाँ ये विधवा स्त्रियाँ किचकिची खा-खाकर अपने धधकते हुए हृदयसे देती रहती हैं और परम परमात्मा परमेश्वर या अपने किसी अन्य देवींदेवताको भी इस काममें सहायता देनेके वास्ते पुकारती रहती हैं। वे गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर और आकाशकी तरफ हाथ उठा उठाकर प्रार्थना करती रहती हैं कि हे तीन लोकके नाथ, अगर तेरेमें शक्ति है तो जिन लोगोंने मुझ दुखियाको दुख दिया है और मुझ अभागिनीको सताया है उसका अच्छी तरह सत्यानाश कर दे। हे भगवन्, हे सर्वशक्तिमान्, मैं तेरेसे और कुछ नहीं माँगती, सिर्फ इतना चाहती हूँ कि जितना इन्होंने मुझे दुख दिया है वह सौ सौ गुना होकर इन्हें और हजार हजार गुना होकर इनकी सात पीढ़ियोंको भोगना पड़े।

प्यारी बहनो, दूसरोंके वास्ते ऐसे खोटे खोटे विचार करके ये दुखिया स्त्रियाँ अपने हृदयको स्याह करके और अपनी आत्माको मैली बनाकर बे-हद् पाप कमाती हैं। लेकिन इनके कोसने और रोने झीकनेसे उन हत्यारोंका कुछ भी नहीं बिगड़ता जिन्होंने इनको दुख दिया था और सताया था। प्यारी बहनो, तुम खूब अच्छी तरह समझ रक्खो और निश्चय जानो कि दूसरेका बुरा मनाकर कोई अपनी आत्माको जितना चाहे बिगाड़ ले, लेकिन उसकी आहसे दूसरेका कुछ भी बिगाड़ नहीं हो सकता है और न किसीके प्रार्थना करने या कहने सुननेसे परमेश्वर या कोई देवीदेवता किसीको कुछ नुकसान पहुँचाता है, बल्कि उसका तो पाप ही उसको दुख मिलनेके वास्ते बहुतेरा होता है। किसी महात्माका वचन भी है कि "**पापीके मारवेको पाप ही बहुतेरो है।**" अर्थात् पापीको तो उसके पापके बदलेमें ही बहुतेरा दुख मिलेगा, तू उसका बुरा चिन्तवन करके ख्वामख्वाह क्यों अपनी आत्माको खराब करता है?

प्यारी बहनो, तुम्हीं विचारो कि क्या दुनियाका सारा धन्धा तुम्हारे कहनेके मुताबिक चल रहा है, जो तुम्हारे कोसनेसे किसीका नुकसान हो जाय। अगर दुनिया तुम्हारे कहने पर ही चलती होती तो सबसे पहले तुम अपना ही दुख निकालकर न फेंक दिया करतीं और अपने ही वास्ते बढ़ियासे बढ़िया आनन्दके सामान न जोड़ लिया करतीं। इसवास्ते सच

मानो कि तुम्हारे चाहेसे कुछ नहीं होता है, तुम्हारी आहसे किसीका कुछ नहीं बिगड़ता है। अगर हमारी बात तुमको सच्ची प्रतीत न हो तो अपने कोसने और अपनी आहकी शक्तिकी परीक्षा तुम इस तरह कर सकती हो कि अगर कभी तुम्हारे कोई काँटा कंकरी या सूई चुभ जावे, तो तुम उसको निकाल कर अपने सामने रख लो और हृदयसे आह निकालकर खूब कोसने लगो कि इस काँटे वा कंकरीका नाश हो जाय जिसने मुझे ऐसी पीड़ा दी, यह जल जाय, भस्म हो जाय, इसके टुकड़े टुकड़े हो जायँ। और भी जो कुछ मुँहमें आवे खूब किचकिचाकर और दाँत पीस पीस कर कहती रहो और खूब गौरके साथ देखती रहो कि उस काँटे वा कंकरीका कुछ बिगाड़ होता है या नहीं। अगर सचमुच ही कुछ बिगाड़ हो जावे तब तो बेशक तुम यह भी मान लो कि तुम्हारे कोसनेसे तुम्हारे बैरीका भी बिगाड़ हो जावेगा और अगर तुम्हारे कोसनेसे एक जरासे काँटे या कंकरीका भी कुछ नुकसान नहीं हो सकता है—एक जरासे तिनके पर भी तुम्हारा कहा नहीं चलता है तो फिर पाँच हाथके आदमी पर तो तुम्हारे कोसनेका क्या असर हो सकता है?

रही परमेश्वरसे प्रार्थना करनेकी बात, सो परमेश्वर कोई तुम्हारा नौकर गुलाम तो है ही नहीं जो तुम्हारे कहनेके मुताबिक करे, और जो वह तुम्हारा नौकर गुलाम ही होता तो तुमको ऐसा दुखियासी ही क्यों बनाता और जो बना भी दिया

तो दुखिया रहने क्यों देता ? जरा तो विचारो कि अगर वह परमेश्वर जीवोंके बुरे भले कर्मोंका फल देनेवाला है तो वह तुम्हारे दुख देनेवाले पापीको उसके पाप कर्मोंका फल आप ही नहीं देगा, वह परमेश्वर तुम्हारे कोसने और आह निकाल-नेकी इन्तजारी ही क्यों देखेगा, और तुम्हारे बार बार कहने और इस बातकी सलाह बतानेकी जरूरत ही क्या रक्खेगा कि हे परमेश्वर इस पापीको यह दुख दे और इसको इस तरह सता। तुम यह भी तो सोचो कि अगर पापीको उसके पाप कर्मोंके मुताबिक फल नहीं मिलता है बल्कि तुम्हारे कोसनेके मुताबिक ही मिलता है तो जिस पापीको तुम किसी वक्त कम कोसती होगी, जिसके वास्ते परमेश्वरसे कम प्रार्थना करती होगी, उसको परमेश्वरके यहाँसे कम दंड मिलता होगा और जिसको तुम ज्यादा कोसती होगी उसको ज्यादा दंड मिलता होगा, और अगर किसी जरूरी काममें फँसे रहनेके कारण तुमको किसी पापीके कोसनेकी फुरसत ही न मिलती होगी तो उसको परमेश्वरके यहाँसे कुछ भी दंड न मिलता होगा। अर्थात् यह तुम्हारे अधिकारमें रहा कि चाहे तुम थोड़ा पाप करनेवालेको ज्यादा कोस कर ज्यादा सजा दिलवा दो, चाहे ज्यादा पाप करनेवालेको थोड़ा कोसकर थोड़ी सजा दिलवा दो और अगर कोसनेमें भूल हो जाय तो उसको कुछ भी दंड न मिले। लेकिन अगर ऐसा होने लगे तो क्या दुनिया-भरमें अंधेर न मच जाय ?

मेरी बहनो, इससे तुम समझ गई होगी कि तुम्हारे कोसने और रामजीसे प्रार्थना करनेसे किसीका कुछ नहीं बिगड़ता है, बल्कि तुम्हारे कहे विना ही पापीको उसके पापकी सजा मिल जाती है। हाँ, तुम्हारे कोसनेसे इतना जरूर होता है कि उसका बुरा चिन्तवन करके तुम भी उसकी तरह पापी बन जाती हो और तुमको भी किसी न किसी तरह इस कोसनेके महापापकी सजा भुगतती पड़ती है। मेरी बहनो, तुम यकीन मानो और निश्चय जानो कि छोटेसे छोटा और बड़ेसे बड़ा, बुरा भला ऐसा कोई भी कर्म नहीं हो सकता है जिसका फल न भोगना पड़े। हाँ, इतनी बात जरूर है कि " आजके पाथे आज ही नहीं जलते हैं। " अर्थात् सब ही कर्मोंका फल तुरंत ही नहीं मिलता है, बल्कि हर एक कर्म अपने अपने वक्त पर ही फल देता है। किसीने कहा भी है—

धीरे मन धीरे रहो, धीरे सब कछु होय,
माली सींचे सौ घड़ा, रुत आयें फल होय।

अर्थात्— जिस प्रकार खेतमें किसी प्रकारके पौधेपर तो तो दो ही महीनेमें फल आ जाता है और किसी पर दस दस बरसके पीछे फल आता है, उसी प्रकार किसी कर्मका जल्दी फल मिलता है और किसीका देरमें, लेकिन खाली कोई नहीं जाता है। '**जैसी करनी वैसी भरनी**' का ऐसा अटल सिद्धान्त है कि इसमें बाल बराबर भी फरक नहीं आ सकता है।

इस वास्ते जिसने तुम्हें दुख दिया है, जिसने तुम्हें कमजोर और लाचार देखकर तुम्हारा हक छीना है, जो तुम पर जबरदस्ती करता है, या जिसने तुम्हारा माल मार लिया है, या जो तुम्हें दबाना और सताना चाहता है उसको भी उसके पापकर्मोंका फल मिलेगा और अगर तुमने भी उसका बुरा विचारा है और उसको कोसा पीटा है तो तुमको भी इन बुरे परिणामोंकी सजा मिले बिना न रहेगी।

प्यारी बहनो, इस मौके पर बेशक तुम यह कहोगी कि किसीका बुरा चितारने और कोसनेसे अपने भाव तो बेशक बिगड़ते ही होंगे और कुछ न कुछ पाप भी जरूर लगता ही होगा, पर जो कोई किसीका हृदय कलपावे और जी दुखावे उसके वास्ते तो मनमें बुरा ही विचार आवेगा, और मुँहसे भी उसके वास्ते तो बुरा ही बोल निकलेगा। भला जिसका कोई कलेजा निकालकर ले जावे उसके मनमें उस कसाईके वास्ते अच्छा विचार कैसे आवे! जब यही लोग कसाईसे भी ज्यादा हत्यारे बनकर हम जैसी दुखियाओंको भी सताते हैं तो हम भी ऐसा हृदय कहाँसे लावें जिसमें फिर भी उनके वास्ते भलाई ही उपजे और बुराई न उठ सके। मेरी बहनो, इस मौके पर तुम्हारा ऐसा खयाल होना, और ऐसा शुद्ध हृदय बना लेनेको असम्भव समझना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। क्योंकि अभी तुमने इसका कुछ भी अभ्यास नहीं किया है; परन्तु यकीन मानो और निश्चय जानो कि अगर तुम धीरे धीरे इसका अभ्यास करती रहोगी,

अपने वैरी दुश्मनका भी बुरा नहीं चितारोगी और सबका ही भला चाहती रहोगी, तो थोड़े ही दिनोंमें तुम्हारा हृदय आइने-के समान ऐसा निर्मल और पवित्र हो जावेगा कि फिर उसमें किसीकी बुराईका भाव ही नहीं आ सकेगा। और तब बेशक तुमको सब जगह और सब अवस्थाओंमें आनन्द ही आनन्द नजर आने लगेगा। इस वक्त सबसे ज्यादा मुश्किलकी बात तो यह हो रही है कि तुम्हारा मन ही काबूमें नहीं है, वह तुम्हारा कुछ भी कहा नहीं मानता है और तुमको ही अपने रास्ते पर चलाना चाहता है; उसको तो खोटे ही खोटे विचार करनेका अभ्यास है। इस वास्ते एकदम बुरे विचार आने तुम्हारे मनसे नहीं छूट सकते हैं और न एकदम यह बात हो सकती है कि तुम्हारे मनमें भले ही विचार आया करें। हाँ, धीरे धीरे अभ्यास करनेसे और हरवक्त खयाल रखने और मनको टोकते रहनेसे जब तुम्हारा मन तुम्हारे काबूमें आ जावेगा तब सब कुछ होने लगेगा, और तभी तुमको सच्चा आनन्द भी प्राप्त हो जावेगा।

देखो, तुम सदा इस बातका खयाल रक्खो कि कमबख्त वही है, जो पाप कर्म उपजाता है और पापकर्म पैदा होते हैं किसीको दुख देने, सताने, तड़पाने या किसीका बुरा चितारनेसे। इस वास्ते जो तुमको सताता है वह भी पापकर्म बाँधता है और अगर तुम उसका बुरा चाहती हो तो तुम भी

पाप कमाती हो। इस वास्ते तुमको कोई कितना ही सतावे, लेकिन् तुम अपने मनमें बुरा चितारकर और उसको कोस-पीटकर उस जैसी मत बनो। बल्कि जहाँ तक हो सके अपने मनमें शान्ति रखने और बुरा करनेवालेका भी भला चाहनेकी ही आदत डालती रहो। याद् रक्खो और खूब याद् रक्खो कि अगर तुम अपने हृदयको नहीं सँभाल सकती हो, अगर तुमसे अपने इस चंचल मनकी बागडोर नहीं थमती है, अगर तुम अपने चित्तको खोटे विचारोंकी तरफ़ जानेसे नहीं रोक सकती हो, तो तुम्हारा जप तप, पूजा पाठ, व्रत उपवास और शुचिक्रिया सब निष्फल हैं। जिस प्रकार थोथे धानोंके कूटनेसे चावल नहीं निकल सकते, सारी मेहनत बर्बाद् ही जाती है, उसी प्रकार मन शुद्ध किये विना किसी भी धर्मक्रियासे न तो पाप ही कट सकते हैं न पुण्यकी ही प्राप्ति हो सकती है, और न परमेश्वर ही राजी हो सकता है। किन्तु मनको शुद्ध रखनेसे सब ही काम ठीक बैठ जाते हैं और सब ही कार्य सिद्ध हो जाते हैं। इस वास्ते मनको शुद्ध रखनेकी तरफ़ पूरा पूरा ध्यान दो, भर सक कोशिश करके उसको काबूमें लाओ और किसी किसमका भी बुरा विचार पैदा न होने दो, बल्कि ऐसी आदत डालो जिससे इस मनमें हर वक्त अच्छी ही अच्छी तरंगें उठती रहें और अच्छे ही अच्छे भाव पैदा होते रहें।

अपने जान मालकी रक्षा करना और अपराधीको दंड दिलाना।

मेरी बहनो, इस लिखनेसे मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि, तुम अपनी चीजकी रक्षा भी न करो और गई चीजके मिल जानेकी कोशिश भी न करो। नहीं, नहीं मेरा यह अभिप्राय हर्गिज नहीं है, क्यों कि ऐसा बढ़िया संतोष करना न तो गृहस्थका कर्तव्य ही है और न गृहस्थसे ऐसा संतोष निभ ही सकता है। क्योंकि यह दुनिया ऐसी बुरी है और इस दुनियाके लोग ऐसे दुष्ट हैं कि ऐसे महासंतोषीको तो वे दिन-दहाड़े लूट लें और उसके तन पर एक चीथड़ा तक न छोड़ें। इस वास्ते अपनी और अपने मालकी सर्व प्रकारकी रक्षा करनी तो गृहस्थका परम कर्तव्य है और जिन्होंने अपना माल हड़प कर लिया हो उनके हलकमेंसे उस मालके वापिस निकालनेकी कोशिश करनी भी बहुत ही जरूरी है। लेकिन उन दुष्टोंका बुरा चिन्तवन करना, बदला लेनेकी नियतसे उनको किसी किसमका नुकसान पहुँचाना और हृदयमें उनसे वैरभाव रखना पाप है और महापाप है, जिसका बुरा फल जरूर भोगना पड़ेगा। जिनका हृदय साफ है, जो पापसे डरते हैं और जो सच्चे धर्मात्मा हैं वे कभी अपने वैरीका भी बुरा नहीं तकते हैं; बल्कि जिसने उनको दुख दिया हो उसका भी भला दिलसे चाहते रहते हैं; उसकी भी कुशल मंगल मनाते हैं, और अपने नुकसानको दिलसे भुलाकर और वैरका

खयाल छोड़कर जहाँ तक अपनेसे बन पड़ता है उसके सुख-दुखमें उसके काम भी आते हैं और दुख दर्दमें उसको सहायता भी पहुँचाते हैं।

प्यारी बहनो, गृहस्थका यह काम है कि वह अपने मालको चोरोंसे बचानेके वास्ते पूरा पहरा रक्खे, और अगर कोई चोर डाकू घरमें घुस कर जबरदस्ती करने लगे तो उसका मुकाबला ईंट पत्थर लाठी सोटा तलवार और बंदूकस करे। अगर उस डाकूका सिर फोड़ने या जानसे मार डालनेके बिना अपने जान मालकी रक्षा न होती हो तो उसको जानसे भी मार डाले और अगर वह डाकू माल उड़ा ले जावे तो जब तक अपना माल न मिले तब तक उसका पीछा करे तथा गली-मुहल्लेवालों और पुलिसके सिपाहियोंसे भी इस काममें मदद ले; परन्तु उस चोरसे सदाके लिए वैर बाँध लेना, हमेशा उसको नुकसान पहुँचानेकी फिकरमें रहना और जब जब काबू लगे तबही उसको नुकसान पहुँचाना, ये सब काम उसके गृहस्थपनेकी जरूरतसे ज्यादा और महा पापोंकी जड़ है। जो गृहस्थ अपने आपको इस प्रकार व्यर्थ वैर बाँधनेसे बचाता है और अपने हृदयको बे-मतलब मैला नहीं करता है, वही धर्मात्मा है, और वही इस जन्ममें भी आनन्द भोगता है और अगले जन्ममें भी। इसके विपरीत जो आदमी इस प्रकार ख्वामख्वाहका बैर भाव रखकर अपने हृदयको स्याह करता रहता है और अपनी आत्मामें कालिमा लगाता

रहता है वह इस जन्ममें भी दुखी रहता है और अगले जन्ममें भी। इसवास्ते मेरी बहनो, अगर तुमको धर्मात्मा बनना है और अपना अगन्त सुधारना है, तो तुम उन लोगोंका भी भला ही मनाओ, जो तुमको नुकसान पहुँचावे और दुःख दे और मनमें धारणा कर लो कि किसीके वास्ते बुरा चिन्तवन करना या किसीको कोसना या गाली देना महापाप है। तुमसे जिस तरह बन पड़े ऐसी बातोंकी आदतको बिल्कुल दूर करके और शुभ भावनाओंके द्वारा अपने मनको पवित्र बनाकर ऐसे पापी लोगोंके वास्ते भी यही मनाती रहो कि इनकी भी हियेकी आँखें खुलें, इनको भी भले बुरेकी तमीज हो और ये लोग भी पाप पुण्यको पहचान कर दूसरोंको दुख देना और किसीका माल मारना या हक दबाना छोड़ दें।

प्यारी बहनो, इस बातको तुम अच्छी तरह समझ लो कि हाकिम भी अपराधीको नुकसान पहुँचाने या उसके बुरे कामका बदला चुकानेके वास्ते उसको दंड नहीं देता है और न हाकिमको अपराधी पर किसी प्रकारका क्रोध ही आता है; बल्कि हाकिमको तो अपराधी पर हर वक्त दया ही आती रहती है कि यह कैसा मूर्ख है जो ऐसे ऐसे घोर अपराध करनेको भी बुरा नहीं समझता है। इसी वास्ते हाकिम लोग अपने शांत हृदयसे अपराधीके वास्ते ऐसा दंड तजबीज करते हैं, जिससे उस अपराधीकी अक्ल ठिकाने आ जावे और वह फिर ऐसा अपराध न करे। हाँ कभी कभी

हाकिमोंको दंड तजवीज करते वक्त ऐसा भी खयाल करना पड़ जाता है कि दंड ऐसा देना चाहिए जिससे और लोगोंके भी कान खड़े हो जावें और वे भी अपराध करनेसे बचे रहें। देखो, मां बाप भी अपनी औलादको और गुरु भी अपने चेलोंको सजा देते हैं, लेकिन ये लोग नुकसान पहुँचाने या बदला लेनेकी नियतसे सजा नहीं देते, बल्कि बालकको सुधारनेकी ही नियतसे सजा देते हैं, जिससे वह फिर उलटे उलटे काम न करे। बालक चाहे कोई भारीसे भारी भी कुसूर कर दे और मां बाप चाहे उसको कड़ीसे कड़ी सजा भी दें, लेकिन उनके हृदयमें उस बालकके साथ किसी प्रकारका वैरभाव पैदा नहीं हो जाता है और न वह बालकका किसी किसमका नुकसान ही चाहने लगते हैं, बल्कि बालकसे कोई भारी अपराध हो जाने पर भी वे बालकका भला ही चाहते रहते हैं और उसको दण्ड भी उसकी भलाईके ही वास्ते देते हैं।

इसी प्रकार मेरी बहनो, तुम भी अपने किसी अपराधीका बुरा मत चितारो, बल्कि जो तुमको नुकसान पहुँचावे या किसी प्रकारका दुख दे, तुम अपने हृदयसे उसकी भी भलाई चाहती रहो, और किसीसे भी वैरभाव मत रक्खो। और अगर कोई ऐसा ही सिर बाहरा हो गया है कि बिना सजा पाये, उसकी अक्ल ही ठिकाने नहीं आ सकती है, या उसकी देखादेखी औरोंकी आदत बिगड़ती है, तो बेशक उसको सजा

दिलानेकी कोशिश करो। लेकिन ऐसी कोशिश करते हुए भी उसका बुरा मत चितारो, बल्कि यह ही चाहती रहो कि किसी न किसी तरह उसकी अक्ल ठिकाने आकर उससे यह ऐब छूट जावे और वह नेक रास्ते पर लग जावे।

कोसना और गाली देना बहुत बुरा है।

मेरी बहनो, आज कलकी स्त्रियोंमें कुछ ऐसी बुरी आदत पड़ गई है और यह उनका एक स्वभाव सा हो गया है कि वे जरा जरा सी बात पर, एक तिनका भर चीज पर और एक एक कौड़ीके नुकसान पर भी चटाचट कोसने लग जाती हैं। चाहे जिसके बेटा-बेटी बहन-भाईयोंको कोस डालती हैं, हत्यारों जैसी बातें मुँहसे निकालने लग जाती हैं, और ऐसा करती हुई जरा भी नहीं लजाती हैं। बल्कि हुमर-हुमर कर, आगे बढ़-बढ़ कर और हाथ उठा-उठाकर ज्यादा ज्यादा बकती हैं और अपने मुँहको तथा सुननवालेके कानोंको गंदा करती रहती हैं और ख्वामख्वाह पापकी गठड़ी बाँधकर अपनी उज्ज्वल आत्मा पर स्याही-का पोता फेरती रहती हैं। प्यारी बहनो, तुम इन औरतोंकी आदत मत सीखो और तुम उनकी रीस मत करो। क्यों कि तुमको तो अपने पापोंका नाश करके और अपनी आत्मा-को सुधारकर संसाररूपी समुद्रसे बाहर निकालना है। इस वास्ते अगर पहलेसे तुम्हारी आदत भी कोसने और गाली देनेकी पड़ रही हो, तो तुम बहुत जल्द अपनी आदतको ठीक

करो और गाली देना त्याग दो। जहाँ तक तुमसे बन पड़े बहुत नर्म और मीठे वचनोंसे अपनी सधवा बहनोंको भी समझाओ और उनसे भी गालीकी आदत छुड़ाओ।

क्या कहें हिन्दुस्तानी औरतोंमें तो गाली देनेकी आदत यहाँ तक बढ़ गई है कि, बात बातमें माँ अपने प्यारे बेटे तकको ऊता, न पूता, नाश गया, मुँहजला, कलमुँहा, पेट-पटा, आदि और भी ऐसे ही ऐसे अनेक नामोंसे पुकारती हैं, बुरे बुरे बोल बोलती हैं, मुँह आई गालियाँ देती हैं, और कुँवारी बेटीको तो सभी औरतें मुंडी, मुँहजली, नाश-मिटी, और राँड, छिनाल आदि नामोंसे इस प्रकार पुकारती रहती हैं मानो इन स्त्रियोंके पास इस कन्याओंके वास्ते और कोई बोली ही नहीं है। अब तुम ही सोचो कि अपने बेटी-बेठोंके वास्ते ही जब इनका यह हाल है तब औरोंके वास्ते तो पूछना ही क्या है। तुम नित्य ही देखती हो कि ये स्त्रियाँ अपने खाने पीनेकी चीजों, भाँडे-बरतनों, सूई-तागों, कपड़े-लतों और ईंट-पत्थरोंको भी तो कोसती रहती हैं और बिना गाली एक भी बात नहीं कर सकती हैं। इस वास्ते उनकी इस महामूर्खता पर, और उनकी ऐसी गिरी हुई दशा पर तुमको दया आनी चाहिए और इनको आदमी बनानेके वास्ते इनसे यह गालीकी आदत छुड़ानी चाहिए।

यकीन मानो, अगर तुमने औरतोंसे गाली बकने और कोसने पीटनेकी आदत छुड़ा दी, तो तुमने स्त्रीजातिके साथ बहुत बड़ा उपकार कर दिया, जिससे तुमको जरूर पुण्यकी प्राप्ति होगी।

लेकिन गाली देनेकी यह आदत तुम औरोंसे तब ही छुड़ा सकोगी, जब कि सबसे पहले तुम इस आदतको छोड़ दोगी।

जगतभरमें स्त्रियाँ कोमल अंग और नरम हृदयवाली मशहूर हैं, इस वास्ते इनके मुँहसे तो सदा फूल ही झड़ने चाहिए थे, लेकिन आश्चर्य है कि, वर्तमान समयमें हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंका अंग तो कोमल ही रहा और हृदय ऐसा कठोर हो गया कि मुँहसे फूल झड़नेके स्थानमें अंगार बरसने लगे। इसी कारण यह कहावत प्रसिद्ध हो गई है कि आजकलकी स्त्रियोंकी शक्ल तो परियोंकी सी है, पर मिजाज इनके चुड़ेलों कैसे ही हैं। अब तो भारीसे भारी गाली देते भी इनका हृदय नहीं काँपता है, बल्कि गाली देने और कोसनेका इनको एक तरहका चाव सा ही हो गया है। विधवा बहनो, ये गिरस्तिन स्त्रियाँ तो अपने सुखमें मग्न हैं और अपने भाग्यके अहंकारमें मस्त हैं, इस वास्ते इनको तो दूसरोंको गाली देने और कोसनेमें कुछ डर नहीं लगता है, बल्कि अपने बढ़ते हुए अभिमानके कारण इनको तो इसमें एक प्रकारका हुल्लाससा होता है। इस वास्ते अगर वे गाली देना और कोसना न छोड़ें तो न छोड़ो, लेकिन मेरी विधवा बहनो, यह कोसना और गाली देना तुम्हारे मुँह तो किसी तरह भी नहीं शोभता है। कहावत मशहूर है कि "**जिसके पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई।**" अर्थात् जिसने दुख नहीं देखा वह दुखियाके दुखको क्या जाने? लेकिन तुमने तो रँड़ापेका

महान् दुख भोग लिया है; तुम तो दुखोंकी अच्छी तरह जानकार हो, इस कारण तुम्हारा हृदय तो दुखका नाम सुनकर ही काँप जाना चाहिए। फिर तुम्हारे हृदयमें तो किसीके वास्ते बुरा खयाल आना और तुम्हारे मुखसे किसीके वास्ते गालीका वचन निकलना तो बहुत ही आश्चर्यकी बात है। तुम्हारे चोट खाये हृदयमें तो किसीके वास्ते बुरा विचार आना असम्भवसा ही मालूम होता है। परन्तु जब तुम्हारे ही मुखसे दूसरोंको कोसते हुए और भारी भारी गालियाँ देते हुए सुनते हैं तो अचंभा होता है कि, इन औरतोंका कैसे वज्रका हृदय है कि विधवा बन जानेपर भी नरम नहीं हुआ और इतने दुख उठाकर भी दुःखोंसे भीत नहीं हुआ। इस वास्ते मेरी विधवा बहनो, तुम तो एकदम गाली देना और कोसना त्याग दो और सदा यही भावना रक्खो कि कभी किसीको भी किसी प्रकारका दुःख प्राप्त न हो, सदा सबको सुख ही प्राप्त होता रहे। ऐसी भावना रखनेसे हृदय शुद्ध होता है और पुण्यकी प्राप्ति होती है। क्योंकि दया ही धर्मका मूल है और पराया उपकार करना ही पुण्य प्राप्तिका कारण है।

बच्चोंको शिक्षा देनी महान् परोपकार है।

मेरी बहनो, इस पुस्तकको यहाँ तक पढ़कर तुम सोचती होगी कि यह बात तो हम पहलेसे ही सुनती आ रही हैं और खुद भी जानती हैं कि दया ही धर्म है और पराया भला करना

ही पुण्य है; पर एक तो हम औरत जात होनेके कारण किसीका क्या उपकार कर सकती हैं और दूसरे हम तो विधवा होकर आप ही अपाहजोंकी तरह दिन काट रही हैं, तब हमसे किसीका क्या उपकार हो सकता है ? हम बेचारी क्या तो किसीका उपकार करें और क्या पुण्य कमावें ? हमसे तो कुछ भी नहीं हो सकता है। परन्तु मेरी विधवा बहनो, तुम घबराओ मत, हम तुमको परोपकारके इतने काम बतावेंगे कि तुम उनको करती करती थक जाओगी, पर काम खतम न होंगे। और वे सब काम भी हम तुमको ऐसे ही बतावेंगे, जो विधवा-ओंके ही करने योग्य हों और उनहीसे हो सकते हों।

मेरी विधवा बहनो, दुनियाके वास्ते चाहे तुम लाख अयोग्य हो गई हो और चाहे दुनियाके वास्ते तुम बिल्कुल ही मनहूस समझी जाती हो, लेकिन धर्मसाधनके वास्ते तुम अपनेको न तो अपाहिज समझो और न अयोग्य ही मानो; बल्कि सच तो यह है कि सच्चा धर्मसाधन तुमहीसे हो सकता है अगर तुम करना चाहो, और परोपकार भी तुमसे ही बन सकता है और तुम हौसलेके साथ तय्यार हो जाओ। सधवायें बेचारी तो घर-गिरिस्तीके ही कामकी हैं। उनके लिए तो पूरी तरह धर्मसाधन भी मुश्किल है और परोपकार भी असम्भवसा है। इस वास्ते विधवापनेका खयाल करके तुम अपने मनको मत गिराओ, बल्कि हिम्मत करके हमारे लिखे अनुसार परोपकारके कामोंमें लग जाओ और अपार पुण्य कमाओ, जिससे आगेको तुम्हें

जन्म जन्ममें सुख ही सुख मिलता रहे और फिर तुम दुखका नाम भी न सुनो।

मेरी बहनो, तुम्हारे लिए सबसे उत्तम और घर बैठेका परोपकार यह है कि तुम अपने घर पर एक पाठशाला खोल लो और उसमें अपने अड़ौस-पड़ौस और गली-मुहल्लेके सब बच्चे इकट्ठे करो। घबराओ मत। अगर तुम ऐसी पढ़ी लिखी नहीं हो कि पुस्तक पढ़ा सको तो कुछ परवाह मत करो। हम तुमको ऐसी तरकीब बतावेंगे कि अगर तुम एक अक्षर भी न जानती हो और बिल्कुल ही अनपढ़ हो, तब भी तुम्हारी पाठशाला चल जावे, तुम गाँव भरमें साक्षात् देवी मानी जाने लगो और तुम्हारी पूजा होने लगे। तमाशा यह है कि तुम्हारी पाठशालामें खर्च भी एक कौड़ीका नहीं होगा, और न कोई दूसरी पढ़ानेवाली बुलानी पड़ेगी; बल्कि बिना पढ़ी हुई होने पर भी तुम ही अकेली पढ़ाओगी और नन्हें नन्हें बच्चोंको ऐसा विद्वान् बनाओगी कि सब ही देखकर अचम्भा मानें और तुम्हारे गुण गावें। याद रक्खो कि देवता वही है, जो दूसरोंके उपकारमें अपना जीवन बिताता है और दूसरोंकी सेवामें अपना तन मन लगाता है। नहीं तो अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है। संसारमें जितने देवता हुए हैं, सब परोपकार करनेसे ही देवता माने गये हैं और आगेको भी वे ही देवता माने जावेंगे, जो परोपकार करेंगे, अपनेको तुच्छ समझकर दूसरोंकी भलाईमें और दूसरोंकी सेवा-

टहलमें ही अपने शरीरको लगावेंगे और दूसरोंकी भलाईके वास्ते सब प्रकारकी शारीरिक तकलीफें उठावेंगे।

मेरी बहनो, अगर तुम अच्छी लिखी पढ़ी हो और विदुषी हो, तब तो तुम अपनी पाठशालामें बड़ी बड़ी स्त्रियोंको भी बुलाओ और उनको भी पढ़ाओ; परन्तु उनके आनेका कोई समय मत बाँधो। क्यों कि घर गिरस्तिनोंको और बाल-बच्चे-वालियोंको बँधे समय पर आना बहुत कठिन होता है। इस वास्ते वक्त बे-वक्त अबेर-सबेर जब भी जो स्त्री आवे उसको सौ काम छोड़कर उसी वक्त पढ़ाओ, जिससे उसको एक पलभर इन्तजारीमें न बैठना पड़े और उसके कामका हर्ज न हो। बर्ताव भी सदा उनके साथ ऐसा ही रक्खो, जिससे उनको यह खयाल न हो कि पढ़नेके वास्ते आनेके कारण हम तो नीची हो गई हैं और यह पढ़ानेवाली ऊँची बन गई है, बल्कि उनसे सदा ऐसी हँसी चुहल और मेलजोल रक्खो, जिससे उनका जी ख्वामख्वाह भी तुम्हारे पास आनेको चाहे और छुटाई बड़ाईका ख्याल भी पैदा न होने पावे।

अगर तुम विदुषी हो और अच्छी तरह पढ़ाना जानती हो, तो अपने गाँवकी ब्याही और बिनब्याही बड़ी बड़ी लड़कियोंको भी अपनी पाठशालामें बुलाओ और उनको खूब जी लगाकर पढ़ाओ। गिरस्तिन स्त्रियोंकी ये बड़ी लड़कियाँ तुम्हारे पास ज्यादा देर तक ठहर सकती हैं, लेकिन समयका बंधान इनसे भी नहीं हो सकता। क्योंकि

इनको घरके अनेक धंधे सीखना और अपनी माँ भावजोंको घरके कामोंमें मदद देना भी जरूरी है। इस वास्ते इनको भी घरके कामोंमें उसी तरह लगा रहना पड़ता है, जिस तरह घर गिरस्तिनोंको। इस कारण इनके आने जानेके नियम बनाओ तो जरूर, लेकिन ऐसे आसान और ऐसे ढीले बनाओ कि तुमको तो चाहे कितनी ही तकलीफ उठानी पड़े, पर इनको तुम्हारे पास आनेमें दिक्कत न हो। और इनको भी तुम ऐसे प्यार मुहब्बतसे पढ़ाओ और इनके साथ भी ऐसा हँसी खेलका सम्बन्ध रक्खो कि इनको भी तुम्हारी पाठशालामें पढ़ना एक प्रकारका खेल और दिलबहलावा ही मालूम हो। और इन बड़ी लड़कियोंके सामने तुम हरगिज भी बहुत गम्भीर और बड़ी बूढ़ी बनकर मत बैठ जाओ, जिससे ये तुम्हारे पास ज्यादा देरतक बैठनेमें घबराने लगें और इनका जी उच्चाट हो जावे। इनके साथ बेशक इतनी तो मत खुलो जिससे तुम भी छिछोरी ही बन जाओ, लेकिन इतनी जरूर खुल जाओ जिससे ये बेधड़क अपने दिलकी बात तुमसे कह सकें और हँसी खुशी मना सकें।

थोड़ी पढ़ी हुई विधवायें अपनी पाठशाला कैसे चलावें ?

प्यारी बहनो, चाहे तुम विदुषी हो चाहे नहीं, लेकिन अगर तुम थोड़ासा भी पढ़ना लिखना जानती हो तो तुम्हारी पाठशालामें ऐसी भी कन्यायें जरूर आनी

चाहिए जो अभी अक्षर ही सीखती हैं और सिर्फ कन्यायें ही नहीं, बल्कि सात आठ बरससे कम उमरके बालक भी आने चाहिए और इन सब लड़के लड़कियोंके आनेका ऐसा समय मुकर्रिर कर देना चाहिए, जिससे इनको दिक्कत न हो। ये बच्चे तुम्हारे पास सारा दिन ठहर सकते हैं, क्योंकि इनको खेलने और खानेके सिवाय और कोई काम ही नहीं होता है। इस वास्ते इनका तुम ऐसा बंदोबस्त कर दो, जिससे ये तुम्हारे पास ही पढ़ें और तुम्हारे पास ही खेलें। तुम्हारे पास ही इनके खेलनेसे यह फायदा होगा कि न तो ये बुरे बुरे खेल खेल सकेंगे, न बुरे बालकोंकी संगतिहीमें रहेंगे और न लड़ना भिड़ना, गाली गलौज देना और कोसना कुसवाना ही सीखेंगे। बल्कि अच्छे अच्छे खेल खेलकर अपना दिल भी बहलाते रहेंगे और आपसमें मिल जुल कर रहना, प्यार मुहब्बत रखना, एक दूसरेकी सहायता करना, खेलमें भी सचाई और ईमानदारी वर्तना आदि अनेक अच्छी अच्छी आदतें भी सीखते रहेंगे। और पढ़ानेका इनके यह प्रबन्ध हो सकता है कि अव्वल तो इनको भी तुम ही पढ़ाओ और अगर तुम बहुत पढ़ी लिखी हो इस कारण स्त्रियों और बड़ी लड़कियोंके पढ़ानेमें ही तुम्हारा सारा समय लग जाता है, तो पाठ तो इनको बड़ी लड़कियोंसे दिलवा दो, परन्तु याद कर लेने पर उनके पाठको सुन लिया करो खुद, जिससे उनका हौसला बढ़ता रहे।

ऐसी छोटी लड़कियोंके साथ उनके छोटे छोटी बहन भाई जरूर ही आवेंगे, क्योंकि छोटे छोटे बच्चोंको गोदी रखना— खिलाना इन लड़कियोंके ही जिम्मे होता है । अगर ये लड़कियाँ नन्हें बच्चोंको सारा दिन न खिलाती रहें तो इनकी माँ-भावजोंका नाकमें दम आ जावे, और घरके सभी काम पट हो जावें। इस वास्ते यह हो ही नहीं सकता है कि ये छोटी लड़कियाँ नन्हें बच्चोंको साथ न लावें । तुम इस बातको खूब समझ रक्खो कि इन लड़कियोंकी मातायें बच्चोंका खिलाना तो इनका पहला काम समझती हैं और पढ़ना दूसरा; इस वास्ते इनके साथ नन्हें बच्चे भी जरूर आने चाहिए और इनको उन बच्चोंके खिलानेका मौका भी जरूर देना चाहिए ।

यह जरूर है कि ये बच्चे कभी कभी तुम्हारी पाठशालामें टट्टी भी फिर देंगे और मूत भी देगें; लेकिन तुमको इनकी इस बातसे जरा भी घृणा नहीं होनी चाहिए। अव्वल तो वे लड़कियाँ जिनके साथ ये बच्चे आते हैं टट्टी उठा देंगी और धो-पोंछ कर जगह साफ कर देंगी; और अगर तुमको ही यह काम करना पड़े तो तुम जरा भी बुरा मत मानो । क्योंकि यह अपना शरीर ही हाड़ मांस जैसी अपवित्र चीजोंका बना हुआ है और इसके अन्दर भी हर वक्त मैला भरा रहता है । यह शरीर तो किसी प्रकार भी पवित्र नहीं हो सकता है, लेकिन दुनियाका काम चलानेके वास्ते इसको धो-पोंछकर लाचारी-से पवित्र मान लिया जाता है और ऐसे अपवित्र शरीरको इस-

ही वास्ते पाला पोसा जाता है कि इससे दुनियाके लोगोंका उपकार हो और इस शरीरके द्वारा दुनियाकी टहल करके अपनेको पुण्यकी प्राप्ति हो। इस वास्ते अपनी पाठशालामें आये हुए गाँवके बच्चोंका मल-मूत्र उठाने और धोने-पोंछनेमें अगर यह अपना शरीर काम आवे, तो इससे अच्छी और कौन बात है ? नित्य सुबहके वक्त अपनी टट्टीमें भी तो हाथ खराब होते हैं और धो-माँज कर साफ कर लिये जाते हैं। इसी प्रकार इन बच्चोंके कारण खराब हो जाने पर भी धो डालनेसे पवित्र हो जावेंगे, तो फिर घृणा किस बातकी ?

इसके सिवाय यह भी तो विचारो कि माँ जो दिनरात अपने बच्चेका मैला साफ करती रहती है, क्या वह इस प्रकार बारबार अपवित्र होते रहनेसे पाप कमाती है ? नहीं, हर्गिज नहीं। बल्कि वह अपना कर्तव्य पालन करती है और पुण्य कमाती है। अगर मातायें अपने बच्चोंके मलमूत्रसे घृणा करने लगें, तो बच्चोंकी पालना असम्भव हो जावे और दुनिया चलनी बन्द हो जावे। इस वास्ते माताका इस प्रकार हरवक्त अपवित्र होते रहना किसी प्रकार भी पापकार्य नहीं हो सकता है, बल्कि पर-उपकार होनेसे पुण्यका ही कार्य है। इसी प्रकार मेरी विधवा बहनो, पाठशालाके बच्चोंके कारण बारबार तुम्हारे हाथोंका खराब होना भी महान् परोपकार और बड़े भारी पुण्यका काम है। बच्चोंवाली कोई कोई मातायें कभी कभी ऐसा विचार करने लगा करती हैं कि जो स्त्रियाँ बाँझ हैं या विधवा हो गई

हैं, वे शायद इसी कारण बाँझ या विधवा बनाई गई हैं कि उन्होंने पहले जन्ममें बच्चोंके मलमूत्रसे घृणा करी होगी और वे सदा अपने शरीरके शुद्ध और पवित्र रहनेकी ही भावना रखती होंगी। उनके पहले जन्मकी इस भावनाके स्वीकार हो जानेके कारण ही इस जन्ममें उनके सन्तान नहीं हो सकती है, जिससे वे बिल्कुल ही पवित्र बनी बैठी रहें। ऐसे ही ऐसे विचार करके वे बच्चोंवाली स्त्रियाँ डरती हैं और बच्चोंके मल मूत्रसे किंचित् भी घृणा नहीं करती हैं तथा यही भावना करती रहती हैं कि आगेको भी हमको जन्म जन्ममें इसी प्रकार बच्चोंके मल-मूत्र उठानेका अवसर मिलता रहे और इस बातसे हमको कभी घृणा न हो।

बिना पढ़ी विधवायें अपनी पाठशाला कैसे चलावें ?

विधवा बहनो, ऐसी तो तुममें इनी गिनी ही होंगी, जो पढ़ानेका काम कर सकें; ज्यादा तो तुममें अनपढ़ ही होंगी या मामूली तौर पर अक्षरोंकी पहचान करनेवाली और अटक अटक कर कोई छोटी मोटी किताब पढ़ लेनेवाली होंगी। इस वास्ते तुम सब तो अपने अपने घर पर ऐसी ही पाठशाला खोलो, जिसमें दो बरसकी उमरसे लेकर पाँच वरस तककी उमरके बच्चे आया करें और अपने अड़ौस-पड़ौस और गली-मुहल्लेसे सभी विधवाओंको ऐसे पाँच पाँच सात

सात बच्चे मिल भी जरूर सकते हैं, और ऐसे ही बच्चोंकी पाठशाला अलग अलग सब ही विधवाओंके घर पर बड़ी आसानीसे बैठ भी सकती है। हाँ ऐसी पाठशालाके जारी करनेमें इस बातका खयाल बिल्कुल नहीं होना चाहिए कि वे बच्चे अमीरके हैं या गरीबके और ऊँच जातिके हैं या नीचके; क्योंकि तुम्हें इनसे कुछ लेना थोड़ा ही है जो तुम ऐसी बातें ढूँढो, तुम्हें तो पराया उपकार करना है। इस वास्ते तुम्हारी तरफसे कोई हो, तुम्हें तो सभी एक समान हैं।

इन बच्चोंके साथ मगज मार-मारकर और एक एक बोलको सौ सौ दफे कहकर और इनकी तोतली जवानको तोड़कर तुम इनको बोलना सिखाओ, खेलने कूदने और बैठने उठनेकी तमीज बताओ, बात बात पर लड़ पड़ने, जिद करने, रोने और कहना न माननेकी जो जो बुरी आदतें माँ-बापके लाड़के कारण इनमें पड़ गई हों वे सब आदतें कोशिश करके इनसे छुड़ाओ और नई नई बातें बताकर उनकी अक्लको बढ़ाओ। दुनियाकी चीजोंको देखकर बच्चोंमें यह पूछनेकी आदत बहुत होती है कि यह क्या है और क्यों है। इस प्रकार पूछनेमें ये बच्चे बिल्कुल नहीं थकते हैं, बल्कि ऊपरवाले ही जवाब देते देते थक जाते हैं। माँ बापको इतनी फुर्सत कहाँ जो बच्चोंके साथ इस प्रकार दिन भर मगज मारते रहें और उनकी सब बातोंका जवाब देते रहें। इस वास्ते गृहस्थ लोग तो उनकी एक आध बातका जवाब देकर

फिर उनको झिड़ककर ही बन्द कर देते हैं और अगर बच्चा झिड़कने पर भी बन्द नहीं होता है तो अटकलपच्चू जवाब देने लगते हैं। इस वास्ते इन बच्चोंकी बुद्धि जल्दी नहीं बढ़ने पाती है। अगर इन बच्चोंको उनकी सब बातोंका जवाब ठीक ठीक मिलता रहे तो उनकी बुद्धि बहुत जल्द बढ़ सकती है, और फिर आगे वे बच्चे बहुत विद्या हासिल कर सकते हैं, और बहुत ऊँचे चढ़ सकते हैं।

विधवा बहनो, अगर तुममेंसे एक एक विधवा इस प्रकार किसी एक एक बालकका भी उपकार कर दे, तो तुम ही सोचो कि दुनियाका कितना उपकार होजावे। क्योंकि तुम्हारे सधाये हुए ये बालक बड़े होकर जरूर बहुत बड़े बुद्धिमान् बनेंगे और अनेक प्रकारसे दुनियाका उपकार करेंगे। और तुम तो एक एक बालकको क्या, अगर हिम्मत करो तो इस तरह इकट्ठा आठ आठ दस दस बालकोंको सधा सकती हो और जगतका बड़ा भारी उपकार कर सकती हो। मेरी बहनो, अब तुम ही अपने मनमें सोचो कि जो विधवा अपने गली-मुहल्लेके ऐसे छोटे छोटे आठ दस बालकोंको घेरकर दिन भर उनके साथ मगज मारे, बच्चोंकी तरह उनके साथ खेले, माताकी तरह उनके सब कष्ट सहे, हजार मुसीबतें उठाकर उनको सब तरह राजी रखनेकी कोशिश करती रहे, उनका नाक पोंछना, टट्टी उठाना, पेशाब धोना आदि गलीज काम करती रहे और जरा

भी घिन न माने, तो क्या वह जगतमाता और साक्षात् देवी नहीं है। बेशक वह सचमुचकी देवी और नित्य ही दर्शन करने और पूजन करनेके योग्य है। बेशक सब लोग उसकी पूजा करेंगे और अगर उसके जीतेजी उसकी पूजा नहीं होगी तो मरे पीछे तो जरूर ही लोग उनकी मूर्ति बनाकर पूजेंगे, और उसके नाम पर जय-जयकार करेंगे।

विधवा बहनो, हिन्दुस्तानके गृहस्थ लोगोंको आजकल बात बातमें झूठ बोलनेकी आदत हो रही है और मर्दोंको तो बातबातमें गंदी गालियाँ बकनेका और स्त्रियोंको बात बातमें कोसनेका बड़ा भारी अभ्यास पड़ रहा है। इस वास्ते ये लोग अपने बच्चोंके सामने भी झूठ बोलते रहते हैं, गंदी गंदी गालियाँ देते रहते हैं और बुरी तरह कोसते पीटते रहते हैं। उनके बच्चे उनकी ये सब बातें देखते और खुद भी इसी प्रकार बकना सीख जाते हैं। इसी वास्ते इस अभागे हिन्दु-स्तानकी उन्नति किसी तरह भी नहीं होने पाती है। बल्कि आजकल तो इस हिन्दुस्तानके लोग यहाँ तक नीचे गिरे हुए हैं कि खुद अपने बच्चोंके साथ भी झूठ बोलते हैं, बात बातमें उनसे फरेब करते हैं, और उनको झूठ-मूठ बहकाते रहते हैं जिससे बालक झूठ बोलनेमें खूब ही पक्के हो जाते हैं, और सिर्फ यही नहीं बल्कि आजकलके मर्द तो अपने छोटे छोटे बालकोंको भी गंदीं गंदीं गालियाँ देते रहते हैं और आजकलकी स्त्रियाँ अपनी

नन्हीं नन्हीं सन्तानको भी बातबातमें बुरी तरह कोसती रहती हैं जिससे इन बच्चोंके कोमल हृदय बिल्कुल गंदे और कठोर बनते रहते हैं, और इनकी बोली और विचार भी गंदे ही बनते रहते हैं। इस कारण जबान होने पर शास्त्रोंके उपदेश और बड़ोंकी नसीहतका इन पर कुछ भी असर नहीं होता है, और बचपनके समयका बड़ा हुआ बिगाड़ फिर आगे जाकर दूर होना असम्भव ही हो जाता है। यही कारण है कि यह हिन्दुस्तान दिन पर दिन नीचेको ही गिरता चला जाता है और इसमें कुछ भी उन्नति होने पाती है। इस हेतु इस समय इस हिन्दुस्तानके सुधारका इसके सिवाय और कोई उपाय ही नहीं है कि सब विधवा स्त्रियाँ अपने अपने घरों पर पाठशाला खोलें और दो वर्षकी उमरसे लेकर पाँचवर्ष तककी उमरके बच्चोंको सिवाय खाना खाने और रातको जाकर सो रहनेसे और किसी समयमें उनके माता पिता की संगतिमें न रहने दें, और सौ कष्ट उठाकर दिनभर उनको शिक्षा दें। यह कार्य जैसा जरूरी, जैसा पवित्र और जितना लाभदायक है, उतना और कोई कार्य हो ही नहीं सकता है। इस वास्ते धन्य है उन विधवाओं-को जो ऐसे उत्तम कार्यको शुरू करके अपने जन्मको सफल करें और इस दुनियामें भी जस लें तथा आगेको भी जस पावें।

विधवा बहनो, अगर तुम्हें अपना अगन्त सुधारना है तो हिम्मत करो और पाँच सात दस जितने भी बच्चे तुमसे सँभल सकें

उनको इकट्ठा करके उनके साथ सारा दिन बच्चोंकी तरह खेलो और हर वक्त सच्ची ही सच्ची बातें करके और मनोहर ही बोल अपने मुखसे निकाल कर उनको बहुत नेक और सच्चा आदमी बनाओ जिससे फिर आगेकी दुनिया बिल्कुल भली और धर्मात्मा हो जावे। मेरी बहनो, जरा सोचो तो सही कि क्या इससे बढ़िया कोई तप और क्या इससे भी ज्यादा ऊँचे दर्जे-का धर्म साधन हो सकता है? नहीं, कदापि नहीं। यह सबसे बढ़िया तप और सबसे ऊँचे दर्जेका धर्मसाधन है। इस वास्ते अगर ऐसा काम करनेमें तुम्हारे अन्य धर्मसाधनोंमें कुछ हर्ज भी पड़े तो तुम उसकी कुछ परवाह मत करो, और जिस तरह बन पड़े इस कामको ऐसी उत्तम विधिसे करके दिखाओ जिससे तुम्हारे सधाये हुए बालक दुनियामें सबसे निराले ही नजर आवें और सभी लोग उनको देखकर अचं-भेके साथ कहने लगें कि धन्य इनकी शिक्षा देनेवालीको, जिसने ऐसे ऐसे छोटे बच्चोंमें क्या क्या गुण भर दिये हैं। वह तो जरूर कोई देवीका ही अवतार है और दर्शन करनेके योग्य है। धन्य है। हे माता, धन्य है जो तूने छोटे छोटे बालकोंको भी कुछका कुछ बना दिया है।

बीमारोंकी सेवा करना बहुत बड़ा परोपकार है।

परोपकारकी दूसरी बात तुम्हारे करने योग्य यह है कि जो कोई भी तुम्हारे कुटुम्बमें बीमार हो उसकी टहल सेवाका काम

तुम अपने ही जिम्मे लो। परदेके रिवाजके कारण अगर तुम किसीकी टहल नहीं कर सकती हो तो उसकी तो लाचारी है, नहीं तो तुम्हारे कुटुम्बमें जो कोई भी बीमार हो उसकी टहल तुम अवश्य ही करो। आजकल दुनियामें कुछ ऐसा दस्तूर है कि कमाऊ और दो पैसेवालेकी पूछ तो घरवाले भी करते हैं और बाहरवाले भी। उनको तो कोई मामूलीसी तकलीफ हो जाने पर भी सारा घर सेवाके वास्ते खड़ा हो जाता है और बाहरके लोग भी हाल पूछनेको आने लगते हैं। लेकिन घरमें ऐसे भी बहुतसे स्त्री-पुरुष होते हैं जिनको भारीसे भारी बीमारी हो जाने पर भी कोई नहीं पूछता कि वे कहाँ पड़े हैं और उनका क्या हाल है। लेकिन तुम मेरी बहनो, इस प्रकारका कोई भेदभाव अपने मनमें मत रक्खो, बल्कि ऐसों की टहल करना अपने ऊपर सबसे ही ज्यादा जरूरी समझो जिनको और कोई नहीं पूछता है।

मेरी बहनो, यह बात तुम भली भाँति जानती हो कि बीमारकी टहल करना बहुत ही मुश्किल काम है। क्यों कि बीमारकी टहलमें पित्ता मारकर बमारके पास चुपचाप रात-दिन बैठा रहना पड़ता है, बीमारके सौ नखरे और सौ झिड़कियाँ सहनी होती हैं, घड़ी घड़ी उठना बैठना पड़ता है, रातों जागना होता है, उसका पाखाना पेशाब थूक कफ उठाना पड़ता है, उसके मैले कपड़े, फोड़े फुनसियाँ, जखमोंका खून और राध धोनी होती है, उसके मैले कुचैले

गंदे कपड़ोंकी, उसके शरीरकी और साँसकी दुर्गंध सहनी होती है और उड़ कर लगजानेवाली बीमारियोंकी भी कुछ परवाह नहीं करनी होती है। अब तुम ही विचारो कि बीमारकी टहल क्या उन स्त्रियों और पुरुषोंको करनी चाहिए जो दुनियाके अनेक प्रकारके भोगोंमें लगे हुए हैं, जो अपने आनन्दमें मग्न हैं और जिन्होंने अपना मिजाज बहुत ही नाजुक और फूलकी तरह बहुत कोमल बना रक्खा है, या तुम जैसी विधवा स्त्रियोंको करनी चाहिए जिन्होंने सर्व प्रकारका कष्ट उठाकर भी दूसरोंकी टहल करना अपना परम कर्तव्य समझ रक्खा है और जो दूसरोंकी सेवामें लगी रहनेसे ही अपना जन्म सफल मानती हैं।

विधवा बहनो, सच तो यह है कि दुनियाकी मौज उड़ाते हुए और अपनी ऐश अशरतमें लगे हुए गृहस्थोंको तो अपने बेटी-बेटोंकी बीमारीकी टहल करना भी वबाल ही मालूम होता है। पर जो धर्मात्मा लोग पराई सेवा करना ही परम धर्म समझते हैं और जिनको अपने कर्मोंके नाश करने और पुण्य प्राप्त करनेकी फिकर है वे गैरसे गैरकी टहल करनेमें भी आनन्द मानते हैं, हाड़-मांससे बने हुए, खून राध थूक सिनक मल-मूत्र आदिसे भरे हुए और ऊपरसे चमड़ा लिपटे हुए महा अपवित्र महा अशुद्ध अपने इस शरीरको पराये उपकारमें लगे रहनेसे ही कुछ कामका समझते हैं और बीमारोंका मैला साफ करने, उनकी गंदगी धोने और उनकी सर्व प्रकारकी टहल सेवा

करनेसे अपने पापोंका नाश होना और इसी कारण इस टहल-सेवाके द्वारा अपने महा अपवित्र शरीरका पवित्र हो जाना भी मानते हैं। इसवास्ते विधवा बहनो, तुम भी अपने इस महा अपवित्र शरीरसे परोपकारका ही काम लो, पराई टहलमें लगे रहनेसे ही इस शरीरको कुछ कार्यकारी और पवित्र समझो और जिस शरीरसे परोपकार न होता हो, जो दूसरोंकी टहल-सेवामें काम न आता हो उस शरीरको अति घिनावना एक मांसका लोथड़ा समझो जो हजार बार धोने माँजनेसे भी पवित्र नहीं हो सकता है।

विधवा बहनो, परोपकारके इस कार्य्यमें तुम कभी इस बात-का खयाल मत करना कि जो लोग हमारे काम नहीं आते और जिनसे इतना भी नहीं हो सकता कि हमारे बीमार पड़ने पर घड़ेसे पानी ही ओज कर दे दें, उनकी बीमारीमें हम भी क्यों उनकी टहल करें। क्योंकि अगर तुम उनहीके काम आना चाहती हो जो तुम्हारे काम आवे, तो यह तो परोपकार न हुआ बल्कि अदला बदला हो गया। परोपकार तो तब ही हो जब तुम ऐसोंकी भी टहल करो जो तुम्हारे काम तो क्या आते हों बल्कि उलटा तुमको नुकसान पहुँचाते हों और कष्ट देते हों।

दूसरी बात इस टहल-सेवाके काममें यह भी ध्यान रखनेके लायक है कि जिनकी तुम टहल करो उनको यह मालूम न हो कि तुम उन पर कोई एहसान कर रही हो, बल्कि अपना

कुछ ऐसा वर्ताव रक्खो, जिससे उनको यह खयाल हो जावे कि यह कुछ हमारे ही काम नहीं आ रही है बल्कि बीमारोंकी टहल करनेका तो इसका कुछ स्वभाव सा ही पड़ गया है। इसके सिवाय अगर वे लोग जिनकी बीमारीमें तुमने बड़ी भारी टहल की हो, कभी तुम्हारी जरूरतमें भी तुम्हारे काम न आवें, बल्कि अपना काम निकलने पीछे तुम्हारी शक्ल देखनेके भी रवादार न रहें, तो भी अपने मनमें बुरा मत मानो। क्योंकि तुमने तो बदला लेनेके वास्ते उनकी टहल नहीं की थी, बल्कि अपना धर्म समझकर की थी।

विधवा बहनो,आज कल हिन्दुस्तानकी स्त्रियाँ बहुत ही ज्यादा कठोरहृदय और मूर्ख हो रही हैं। उन्हें दूसरोंको रुलाने और तड़पानेमें बहुत खुशी होती है। इसी कारण वे बीमारसे या बीमारकी टहल करनेवालोंसे बड़ी करुणाभरी बातें करती हैं और जो जो भी दुःख उस बीमारका हो रहा है उसको खूब बखान करके और उसके बीमार पड़ जानेसे घर भरको जो-जो नुकसान हो रहा है उसको सब एक एक करके गिनवा कर और यह बात खूब अच्छी तरह जताकर कि घर भरके लिए उस बीमारका जीता रहना कितना जरूरी है और परमेश्वर न करे अगर वह चल बसा तो सारे ही घर पर कैसी भारी मुसीबत आ पड़ेगी, इसका एक बहुत डरावना दृश्य दिखाकर और आखिरमें उसके जल्दी अच्छा हो जानेके वास्ते बार बार भगवानसे प्रार्थना करके सुननेवालोंको रुलाये बिना नहीं छोड़ती

हैं। उनकी ऐसी बातोंसे बीमारको बहुत दुख पहुँचता है, बीमारी बढ़ जाती है और आराम होता होता रुक जाता है।

मेरी बहनो, तुम अपना हृदय ऐसा कठोर मत रखना और सुघड़ भलाई लेनेके वास्ते लोक-दिखावेकी ऐसी बातें तुम हर्गिज भी मत करना। बल्कि बीमारको और उसके घर-वालोंको भी सदा तसल्ली ही देते रहना, और हर वक्त हँसी खुशीकी बातें करके उनके हृदयसे बीमारीका खयाल ही भुलाती रहना। अगर कभी कोई घबराहटकी बातें करे भी, तो उसको इधर उधरकी बातोंमें टलाती रहा करना, बीमारको ऐसे बीमा-रोंकी कहानियाँ सुनाकर जो बहुत ज्यादा ज्यादा बीमार होकर भी अच्छे हो गये हैं धीरज बँधाती रहना, फिकरका खयाल उसके दिलसे दूर करके बीमारी और उसके नुकसानकी भूलभुलैयासी ही कराती रहा करना, इधर उधरकी बातें सुना-कर उसकी बीमारीको एक बहुत ही मामूलीसी बात बनाती रहा करना और बीमारके हरवक्त खुश और बेफिकर रहने-की ही कोशिश करती रहा करना।

हिन्दुस्तानकी कठोरहृदय स्त्रियाँ आज कल तो ऐसी लोक-दिखावेके बस हो रही हैं कि अपने बहुत ही प्यारेके भी बीमार पड़ने पर जहाँ तक उनका बस चलता है उसको अनेक प्रका-रका पथ्य कुपथ्य खिलाकर बीमारीका परहेज तुड़वाती रहती हैं और इस प्रकार उसकी बीमारीको बढ़ाती रहती हैं—आराम नहीं होने देतीं। यदि कोई उनको उलाहना देता है कि तुमने

बीमारको ऐसी चीजें क्यों खिला दीं जिससे इसकी बीमारी बढ़ गई, तो बड़ी करुणाभरी बातें बनाकर कहने लगती हैं कि जब दिन भरमें सत्तर प्रकारकी चीजें हमारे खानेमें आती हैं, रात दिन बकरीकी तरह हमारा मुँह चलता रहता है और यह बेचारा मुँह-सियाँ सा पड़ा रहता है, तब मेरा तो जी नहीं रह सकता है कि इसको एक आध चीज चाखनेको भी न मिले। और इस बेचारेको रत्ती भर भूख तो लगती नहीं, रोटीका एक टुकड़ा तक तो इसके हलकके नीचे उतरता नहीं, फिर हमारी ही दी हुई चीज क्या यह कोई सेर दो सेर खा लेगा। जरा जीभ पर रखकर थूक देता है जिससे इसकी जीभको थोड़ासा खट्टे मीठेका स्वाद आकर मनकी भटक मिट जावे। और मुझे क्या ऐसी चीजोंके खिलानेकी कुछ हविस है? पर जब इसको बिनाखाये पीये तीन तीन दिन बीत जाते हैं, जब दालके पानी तकका एक घूँट भी मुँहमें नहीं जाता है, तब लाचार होकर ये चीजें देकर देखती हूँ जिससे इसी बहानेसे रत्ती दो रत्ती चीज पेटमें पड़े और कुछ सहारा हो। अन्नका जीव तो अन्न ही खाकर जीता है। भला जब अन्न ही इसके पेटमें नहीं जावेगा तो फिर उठेगा ही किसके सहारेसे, और ऐसी दशामें अकेली दवा ही क्या सहारा लगा देगी?

प्यारी बहनो, इन स्त्रियोंकी ये सब बातें बनावटी ही होती हैं। बीमारी घटे या बढ़े, बीमारको दुख भोगना पड़े चाहे सुख, इस बातकी इनको एक रत्ती भर भी परवाह नहीं होती है।

इनको तो सिर्फ इतनी बातका खयाल रहता है कि बीमार भी और दूसरे लोग भी यह समझ लें कि इसको इस बीमारका बड़ा प्यार है और इसके हृदयमें बीमारके वास्ते बड़ी दया और तड़प है । इसी वास्ते ये कठोरहृदय स्त्रियाँ बीमारको उसकी ख्वाहिशके मुताबिक ठंडा गर्म पानी दे देती हैं, उसकी ही इच्छाके अनुसार उसको सर्दी गर्मीमें बिठा देती हैं और इसी प्रकारकी और भी बहुतसी बद-इहतियाती और बद-परहेजियाँ बीमारकी खुशीके मुताबिक कराती रहती हैं, वैद्यकी आज्ञा और रोकटोकका कुछ भी खयाल नहीं करती हैं । क्योंकि इनको तो बीमारके जल्दी आराम हो जानेका ज्यादा खयाल नहीं होता है, बल्कि इनको तो बाहरी दिखावेके द्वारा बीमार पर अपना प्यार सिद्ध कर देनेकी ही ज्यादा चिन्ता रहती है । ये कठोरहृदय स्त्रियाँ अपना झूठा प्यार यहाँ तक दिखाती हैं कि अगर दवा कड़वी कसेली हो और उसके पीनेमें बीमारको मुश्किल पड़ती हो, तो ये दवाका पीना भी टला देती हैं और कहने लगती हैं कि ऐसी तैसीमें जाय यह दवा और दारू, देखो तो कैसा बुरा हाल हो जाता है, इसको पीकर घंटों हौ हौ करनी पड़ती है, कल तो सच मुच ही कै हो गई थी। इसवास्ते जाने दे मत पी इस वक्त, शामको देखी जावेगी । गरज इस तरहकी बातें बना-कर ये औरतें बीमारको चार दफेकी जगह दो ही दफे दवा पीने देती हैं और उसके जल्दी आराम हो जानेमें हर्ज डालती रहती हैं ।

आज कलकी स्त्रियाँ यहाँ तक कठोर होती हैं कि अगर दूसरे गाँवका कोई इनका रिश्तेदार एक आध दिनके वास्ते इनके यहाँ आकर ठहर जाय और परहेजी खाना खाता हो, तो चाहे वह बेचारा मूँगकी दालरोटी मिलनेके वास्ते कितनी ही खुशामद करे और कचौरी पूरी खानेसे अपनी बीमारीके बढ़ जानेका चाहे कितना ही भय दिखावे, परन्तु ये स्त्रियाँ उसकी एक न सुनेंगी और उसकी बीमारीके बढ़ जानेका कुछ भी भय न मानकर उसको वही बढ़िया खाना खिलावेंगी, जो तन्दुरुस्तीकी हालतमें खिलातीं। वह पाहुना चाहे कैसा ही उनका प्यारा हो और बढ़िया खाना खानेसे चाहे बीमारीके बढ़ जानेकी कितनी ही ज्यादा आशंका हो, लेकिन इनको उस बेचारे पर जरा भी दया न आवेगी और इनका कठोर हृदय जरा भी मुलायम न होगा। झूठी मूठी बातें बनाकर बीमारको इस बातका ही निश्चय करानेकी कोशिश करेंगी कि आजका खाना हर्गिज भी नुकसान नहीं करेगा। इस प्रकार बीमारको बहकाफुसला कर और उसको अपनी मर्जीके मुताबिक खाना खिलाकर फिर अपने पेटकी असली बात भी सुना देंगी कि इतने दिनोंके बाद बड़ी मुश्किलसे तो तुम्हारा आना हुआ है। उसहीमें मैं तुम्हारे आगे बनाकर रख देती मूँगकी दाल और रोटी; भला क्या कुछ अच्छी भी लगती मैं ऐसा करती हुई, और कोई मुझे क्या कहता कि भली खातिरदारी करी पाहुनेकी, इस वास्ते यह खाना तुम्हें करेगा तो नुकसान ही; पर क्या

किया जाय, हमारे वास्ते तुम आज यह नुकसान ही उठा लेना। और लो यह बहुत बढ़िया चूर्ण है, इसको खा लेना, सब हजम हो जावेगा इससे।

विधवा बहनो, बीमारकी सेवा करनेमें तुम अपना हृदय ऐसा कठोर मत रखना और न इस बातका खयाल रखना कि बीमार राजी होता है या नाराज, लोग भलाई देंगे या बुराई, बल्कि सदा बीमारके जल्द आराम हो जानेका ही खयाल रखना और वैद्यकी ही आज्ञाके अनुसार चलना। क्योंकि न तो तुमको लोक-दिखावा करना है, और न सुघड़ भलाई लेनी है; बल्कि धर्म कमाना है, दया पालनी है और परोपकारका सच्चा फल भी ऐसा ही करनेसे मिलता है। लोक-दिखावेके तौर पर करनेसे तो तुमको उलटा पापका ही बंध होगा। इस वास्ते लोक-दिखावेकी सेवा करनेसे तो न करनी अच्छी।

जच्चाकी सेवा करना भी महान् परोपकार है।

विधवा बहनो, आजकलकी स्त्रियोंमें कुछ ऐसी मूर्खता फैल रही है कि वे आपसमें जरा भी सलूक और मेल-जोल नहीं रखती हैं। यहाँ तक कि जिनमें रहकर ही सारी उमर बितानी होती है ऐसी देवरानियों जेठानियोंके साथ भी सलूक नहीं रखती हैं, जिससे दुःख दर्दमें एक दूसरेके काम आवें। इस वास्ते जब इनके कोई बाल बच्चा होनेको होता है, तो सगी देवरानी जेठानीके होते हुए भी इनको अपनी किसी

ननदको ही उसकी सुसरालसे बुलवाना होता है। वह बेचारी लोकलाजके कारण आनेको तो जरूर आती है, लेकिन पराये बस होनेसे बड़ी दिक्कत उठाकर आती है, और आकर ज्यादा दिन ठहर भी नहीं सकती है। लेकिन बाल बच्चा होनेका गुम मामला, कौन जाने कब हो, इस वास्ते कभी कभी ननदके आने पीछे भी बाल बच्चा होनेमें दो दो महीने निकल जाते हैं, जिससे उस बेचारीको मन-ही-मन अपने घरकी चिन्ता रखते हुए बेकार ही पड़ा रहना पड़ता है और बच्चा हो जानेके पीछे जल्द ही वापिस भागना सूझता है। कभी कभी तो उसको अधरमें ही चला जाना पड़ता है।

मेरी विधवा बहनो, अपने कुटुम्बकी सब जच्चाओं (प्रसूता स्त्रियों) की सेवा करनेका यह उत्तम काम भी अगर तुम अपने जिम्मे ले लो, तो तुम्हारा बड़ा भारी उपकार हो और तुमको बहुत ही ज्यादा पुण्यकी प्राप्ति हो। जच्चाकी सेवा भी जैसी अच्छी तुम कर सकती हो, वैसी घर गिरस्तिन नहीं कर सकती हैं। क्योंकि एक तो तुम्हें प्रसूतकी कोई बीमारी लग जानेका भय नहीं हो सकता है, इस कारण तुम वक्त बेवक्त जच्चाखानेके (सोरके) अन्दर भी जा सकती हो। इसके सिवाय सधवा स्त्रियाँ अपना मिजाज जितना नाजुक बनाये रखती हैं उतना ही तुमने अपना मिजाज कड़ा बना लिया है और तुमने अपने इस अति घिनावने और अपवित्र शरीरसे पराई सेवा करने का व्रत भीले रक्खा है, इस वास्ते तुमको जच्चाकी किसी प्रकारकी

भी टहल करने में दिक्कत नहीं हो सकती है, बल्कि एक प्रकार-का आनन्द ही है।

इसके सिवाय तुम यह भी जानती हो कि ननदें अपनी भावजोंकी यह सेवा सिर्फ लोकलाजके ही कारण करती हैं, असलमें उनको अपनी भावजोंसे कुछ प्रीति नहीं होती है। क्यों कि उनकी भावजें भी उनके साथ प्रीति नहीं करती हैं। प्रीतिको ही प्रीति है, यह बात प्रसिद्ध ही है। तुम नित्य देखती हो कि ननद तो अपनी भावजके बालककी टट्टी भी उठा देती है और उसका मैला भी साफ कर देती है, लेकिन भावजें ननदके बच्चोंका मैला हरगिज नहीं उठातीं। इसी प्रकार ननदें अपनी भावजोंके बच्चा जननेमें तो आकर टहल कर जाती हैं, लेकिन अगर वे ननदें भी अपने बच्चा जननेमें भावजोंसे टहल चाहने लगें और उनके घर रह कर ही बच्चा जननेका इरादा करने लगें, तो भावजें सौ सौ मनके पत्थर उठाकर मारने लगें और उनको एक दिन भी न ठहरने दें। इसी कारण ननदों-को अपनी भावजोंसे दिखावेकी ही प्रीति होती है। " जैसी तेरी वार फेर वैसा ही मेरा नाचना कूदना " यह कहावत प्रसिद्ध ही है।

विधवा बहनो, तुम यह जानती हो कि जच्चाका बहुत ही नाजुक मामला होता है, जिसकी टहल और देखभाल कोई बड़ा ही दर्दी कर सकता है। लेकिन ये बेचारी ननदें तो जच्चाका कोई भी काम सच्चे हृदयसे नहीं कर सकती हैं। बल्कि इनको तो

सब काम उसी मुताबिक करना पड़ता है, जिसमें इनकी भावज खुश रहे। इसी वास्ते इन ननदोंसे जच्चाकी पूरी इहतियात नहीं होती है और तब वक्त बे वक्त ठंडा तत्ता पानी मिलने, खाने पीने, और बैठने उठनेमें अनेक प्रकारकी बेपरवाही होनेसे आजकलकी जच्चाओंको सौ सौ बीमारियाँ लगने लगी हैं। ननदोंके हाथसे जच्चाकी मरजीके मुताबिक ही काम होनेसे आजकल जच्चाखानेके प्रायः सभी नियम अदल बदल होकर मामला कुछका कुछ हो गया है और बच्चा जनना ही स्त्रियोंके वास्ते भारी भारी बीमारियोंके आनेका एक बड़ा पक्का रास्ता हो गया है। देखो, आजकल दस दिनकी जगह सात सात दिनमें ही सूतक निकालनेकी प्रथा चल पड़ी है। आजकल जच्चायें जच्चाखानेमें रोटी नहीं खाती हैं, बल्कि उनको बच्चा जननेके अगले दिनसे ही खस्ता पूरियाँ खानेको मिलने लगी हैं। गुडसूती अर्थात् गुड़की छुआनी पीना जच्चाओंने बिल्कुल ही छोड़ दिया है। इसके स्थानमें पहले तो खाँड बूरेकी छुआनी मिली और अब बादामका हरीरा बनने लगा है। बायबिडंग और अजवायनके काढ़ेकी जगह अब जच्चाको सादा पक्का हुआ पानी ही मिलता है और वह भी बिल्कुल ठंडा करके। इसी प्रकार और भी अनेक बातें हैं जो अपनी भावजोंको राजी करनेके वास्ते ननदोंने चला दी हैं, परन्तु इसका जैसा भयंकर फल निकल रहा है और इससे जो जो रोग हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंको लग गये हैं तथा लगते जाते हैं वे तुमसे छिपे हुए नहीं हैं।

विधवा बहनो, अगर तुम्हारी जैसी सच्ची धर्मात्मा स्त्रियाँ अपने अपने कुटम्बकी जच्चाओंकी सेवाका काम अपने हाथमें ले लें, तो फिर किसी तरह भी जच्चाकी न चले और फिर सब काम कायदेके ही मुआफिक हों, सब जच्चा तन्दु-रुस्त होकर उठें और इस तरह दुनियाका बड़ा भारी उपकार हो जिससे तुमको जस भी मिले और पुण्य भी।

प्यारी बहनो, इसी प्रकारके परोपकारके हजारों काम हैं, जिनको करके तुम अपना जन्म सफल कर सकती हो, अपनी इस घिनावनी और अपवित्र देहको महाकार्यकारी बना सकती हो और इस प्रकार इससे टहल लेकर महान् पुण्य उपार्जन कर सकती हो। सच तो यह है कि, तुमको एक पल भर भी खाली नहीं बैठना चाहिए, बल्कि रात दिन परोपकार-में ही लगा रहना चाहिए। क्योंकि खाली बैठनेसे मन इधर उधर घूमता है, परिणाम खराब होते हैं, और काममें लगे रहनेसे मन भी उसी काममें फँसा रहता है--इधर उधर भटकता हुआ नहीं फिरता। परोपकार करने, पराये काम आने, पराई सेवा करने और इस प्रकार दया धर्म पालन करनेका तुमको बहुत अच्छा अवसर मिला हुआ है। इस समय तुम जितना चाहो पुण्य कमा सकती हो और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बना सकती हो। इस वास्ते तुम इस अवसरको बहुत गनीमत जानो। बेचारी सुहागिन स्त्रियोंको तो अपने घर गिरिस्तीके ही धंधोंमें ऐसा फँसा रहना पड़ता है कि वे कुछ भी परोपकार नहीं कर

सकती हैं और इसी वास्ते कुछ पुण्य भी नहीं कमा सकती हैं। इस कारण मेरी बहनो, पुण्य प्राप्तिका जो महान् अवसर तुमको मिला है उसमें मत चूको और खूब जी जानसे मेहनत करके और इस शरीरसे पूरी तरह काम लेकर पराये उपकारमें ही लगी रहो। यही सच्चा धर्म है और यही देवी देवताओंको काबू करके अपनी मर्जीके मुताबिक चलानेका महा मंत्र है। इसीसे दुनियामें नेकनामी मिलती है, संसारमें यश प्राप्त होता है, दुनियाके सब लोग ताबेदार बनते हैं और अन्तमें स्वर्ग मोक्षकी प्राप्ति होती है।

तुमको अपनी तन्दुरुस्ती रखना भी बहुत जरूरी है।

मेरी विधवा बहनो, अब तुमने भली भाँति जान लिया है कि यद्यपि यह शरीर अति घिनावना और अपवित्र है, लेकिन अगर इससे परोपकार और दया धर्मका काम लिया जावे, तो यही शरीर बड़े कामका है। इस वास्ते तुमको इस अपने शरीरका तन्दुरुस्त रखना भी बहुत जरूरी है। जो विधवा बहनें इस शरीरसे परोपकारका काम लेना नहीं चाहती हैं और जिनको अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र करके अपना अगन्त सुधारना मंजूर नहीं है, वे अपनी देहको जैसी चाहें रक्खें; लेकिन मेरी धर्मात्मा बहनो, तुमको अपने इस शरीरकी तरफसे कभी असावधान नहीं होना चाहिए। बल्कि जहाँतक बन

पड़े इसको मजबूत और तन्दुरुस्त बनाये रखनेकी ही कोशिश करनी चाहिए। क्यों कि शरीरमें किसी प्रकारका भी रोग हो जानेसे फिर किसी भी काममें चित्त नहीं लगता है और अगर मर-मारकर कोई काम किया भी, तो बहुत क्लेश उठाना पड़ता है।

याद रक्खो कि मनका व्याकुल रहना ही पापोंका मूल कारण है और रोगीका मन सदा ही व्याकुल रहता है। इसी कारण उसका स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो जाता है, बात बात पर उसको गुस्सा आने लगता है और अच्छीसे अच्छी बात पर भी वह खिजला जाता है। उसको घरके सभी लोग बैरी दिखाई देने लगते हैं और ख्वामख्वाह ही वह अपने मनसे रंजकी बातें उठा उठाकर अपने हृदयको दुखी करता रहता है। चित्तमें इस प्रकार निरन्तर अशान्ति ही रहनेसे बीमार आदमी हरवक्त पाप ही संचय करता रहता है, और धर्म कमानेसे वंचित रह जाता है।

मेरी विधवा बहनो, अगर सधवा सुहागिनी स्त्रियाँ अपनी तन्दुरुस्तीकी कुछ परवाह नहीं करती हैं, अपनी इन्द्रियोंके बस होकर जो चाहे खाती पीती हैं और सर्दी गर्मी हवा वायुका कुछ खयाल न करके मन आया करती हैं, अर्थात् अगर वे अपने मनकी मौजके वास्ते अपनी तन्दुरुस्तीका सत्या-नाश करती हैं, तो तुम उनकी रीस मत करो। क्योंकि वे तो अपनी इन्द्रियोंके विषय-भोगोंमें अन्धी हो रही हैं और समझ

रही हैं कि खाने पीने आदिकी जो मौज उड़ाई जा सके, वह जल्दी जल्दी उड़ा लो, फिर आगेको नहीं मालूम किस योनिमें जाना पड़े और नहीं मालूम फिर वहाँ यह मौज मिले या न मिले। इन्द्रियोंके विषय-भोगोंमें दुनियादारोंकी हविस तो इतनी बढ़ी रहती है कि उनको अपने आराम तकलीफ और दुख दर्दका भी कुछ खयाल नहीं रहता है। इस वास्ते वे तो अपनी इंद्रियोंके दास बनकर अपने आपेहीमें नहीं रहते हैं। वे ऐसे बेसुध और बावले हो जाते हैं कि खाने पीनेकी मामूली चीजों पर भी गिरे पड़ते हैं और अपने दिलपर जरा भी काबू न पाकर ऐसी ऐसी बातें बनाते रहते हैं कि देखी जावेगी जब कोई रोग होगा, और अगर रोगको आना ही होगा तो हमारे रोकनेसे क्या वह आनेसे रुक जावेगा? रोग तो कर्मोंके उदयसे होता है, कुछ खाने पीनेसे थोड़ा ही होता है। इस कारण जो कुछ होना होगा, वह तो होगा ही, फिर हम पहलेसे ही क्यों अपनी मौज उड़ाने और खाने पनिको छोड़ दें और भले चंगे ही क्यों बीमार बन बैठें।

प्यारी बहनो, ये सब बातें उनहींके मुँहको शोभा देती हैं जिन्होंने दुनियाकी मौज उड़ाना ही अपने जीतव्यका मुख्य काम समझ रक्खा है। लेकिन तुमने तो दुनियाके सभी विषय-भोगोंको लात मार दी है, तुमने तो अपनी इन्द्रियोंको बस करना और अपने मनको काबूमें रखना ही अपने जीवनका मुख्य कर्तव्य बनाया है, तुमने तो अपने हृदयसे विषय-

वासनाओंकी कालिमाको धोकर अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनाना ही अपना धर्म मान रक्खा है। इस वास्ते तुमसे सुहागिनोंकी रीस कैसे हो सकती है ? उनका रास्ता और है और तुम्हारा रास्ता और। वे तो यह समझ रही हैं कि चौरासी लाख योनियोंमें एक मनुष्य योनि ही ऐसी है जिसमें सत्तर प्रकारके स्वादिष्ट भोजन खानेको और पाँचों इन्द्रियोंके अनेक प्रकारके सुंदर सुंदर भोग भोगनेको मिलते हैं। इस वास्ते जो कुछ खाया पीया जा सके सो जल्दी जल्दी खा-पी लो और जो भी मौज उड़ाई जा सके वह जल्दी जल्दी उड़ा लो। इस वास्ते वे तो इस मनुष्यजन्मको गनीमत जानकर अपनी इन्द्रियोंके भोगमें लग रहे हैं और इसके विरुद्ध तुम यह मान रही हो कि ८४ लाख योनियोंमें एक मनुष्य योनि ही ऐसी है जिसमें आत्माका ज्ञान हो सकता है, भले बुरेकी पहचान होकर धर्म साधन किया जा सकता है और मन पर काबू पाकर आत्माकी उन्नतिमें लगा जा सकता है। इस वास्ते तुम इस मनुष्यजन्मको गनीमत समझ कर रातादिन अपनी इन्द्रियोंको काबू करने और मनको बसमें लाने और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनानेमें ही लगी रहती हो।

इस प्रकार तुम्हारी और सधवाओंकी बातमें तो धरती आकाशका अंतर है। क्यों कि वे तो संसारके विषय भोगोंमें फँसकर और अपनी इन्द्रियोंके बस होकर इस अति उत्तम मनुष्यजन्मको खो रही हैं और पाप बटोरकर अपना अगन्त

बिगाड़ रही हैं। पर तुम विषय-भोगोंसे अलग होकर अपनी इन्द्रियोंको अपने बसमें करके इस मनुष्यजन्मको सुफल कर रही हो और पुण्य संचय करके अपना अगंत सँवार रही हो। इस वास्ते तुम्हारा और उनका रास्ता किसी तरह भी एक नहीं हो सकता है। वे अपनी जीभके बस होकर अगर बीमारीमें कड़वी कसैली ओषधि नही खा सकती हैं तो तुमको अपनी जिह्वा इन्द्रियको ऐसा बसमें करना चाहिए कि बीमारीमें कड़वी कसैली दवा खा लेना तो कोई बात ही न हो, बल्कि अगर चाहो तो तन्दुरुस्तीमें भी कुनैनसे भी कड़वी चीजको खुशीके साथ अपनी जीभ पर रख सको। इसी प्रकार बीमारीमें मूँग-की दाल या रूखी सूखी रोटी खाना और मिरच मसाला, खटाई मिठाई, घी तेल, दूध दही, कचौरी पूरी और साग भाजीसे परहेज रखना तो तुम्हारे लिए बहुत ही साधारण बात हो। बल्कि तन्दुरुस्तीमें भी तुम बरसों तक ऐसा ही परहेज रख सको, और रूखी सूखी खाकर ही आनन्दसे अपना गुजारा कर सको। अर्थात् साक्षात् करके यह बात दिखा सको कि खानापीना शरीरको बनाये रखनेके वास्ते है न कि जीभका स्वाद लेने-को। इस वास्ते खाने पीनेमें तुमको कभी इस बातका खयाल नहीं करना चाहिए कि इस खानेको हमारी जीभ भी पसन्द करती है कि नहीं, बल्कि सदा ऐसा ही खाना खाना चाहिए, जिससे शरीर तन्दुरुस्त और मन सावधान रहे।

तन्दुरुस्तीका जिकर आने पर कोई कोई विधवा बहनें यह

कह दिया करती हैं कि हमको क्या कहीं हलमें जुतना है, या हमारे बिना क्या दुनियाका कोई काम अटक रहा है जो हम भी अपनी तन्दुरुस्तीका इतना खयाल रक्खें और मौतसे बचनेकी कोशिश करें। हमारा जीना तो इस दुनियामें बिल्कुल ही बेकार और बेफायदा है। हम तो इस दुनिया पर एक बोझा हैं, इस वास्ते हमारे मरनेसे जितनी जल्दी यह बोझा टले उतना ही अच्छा है। पर हमसे तो अपना जी अपने आप नहीं निकाला जाता है, इस वास्ते लाचार हैं और ज्यों त्यों अपनी साँस पूरी कर रही हैं। हमें तो न तन्दुरुस्तीकी इच्छा है और न बीमारीसे डर।

मगर मेरी प्यारी बहनो, यह खयाल उन्हीं औरतोंका है जो दुनियाके ऐशोआरामको ही सब कुछ समझ रही हैं, जिनके खयालके मुताबिक अगर ऐशोआराम नहीं है तो मनुष्यका जीवन ही नहीं है। ऐसी बातें वे ही बनाती हैं जिनकी जीभ उनके काबूमें नहीं है, मन जिनका उनके बसमें नहीं है, जो बिल्कुल अपनी इन्द्रियोंकी दासी बन रही हैं, अपनी इच्छाको जरा भी नहीं रोक सकती हैं, बावलोंकी तरह मन आया करती रहती हैं और ऊपरसे ऐसी बातें बना दिया करती हैं। ऐसी बाते बनानेवाली औरतें सख्त बीमार होकर चारपाई पर पड़ जाने पर भी जो जीमें आया अटकल पच्चू खाती पीती रहती हैं, रत्तीपर भी सर्दी गर्मी सहन नहीं कर सकती हैं और उनकी बीमारी चाहे

कितनी ही बढ़ती चली जाय, पर उनसे जरा भी इहतियात नहीं हो सकती है और उनको तो दवाके नामसे ही धुड़धुड़ी आती रहती है। लेकिन शेखीकी मारी ये औरतें फिर भी यह कहती रहा करती हैं कि हम क्या यह देही किसीसे माँग कर लाये हैं जिसके वास्ते इतनी इहतियात करें। हम क्या अपनी देहीके नौकर गुलाम हैं, जो हर वक्त इसहीका ख्याल रक्खें।

ऐसी औरतें बीमार पड़ी पड़ी भी इतरा इतरा कर कहा करती हैं कि जिनको अपनी देही सँभालकर रखनी है, जिनके दस पूछनेवाले हैं, जरासी छींक आने पर भी जिनके वास्ते हकीम और डाक्टर बुलाये जाते हैं, दिन भरमें दस दफे जिनकी दवाई बदली जाती है, पलपलमें जिनका मिजाज पूछा जाता है, जिनके हरकिसमके नखरे सहनेको, आठ पहर पंखा झलनेको और सब तरहका हुकम बजानेको सारा घर हाथ बाँधे खड़ा रहता है, ऐसी नाजुक मिजाजोंको ही चारपाई पर पड़ पड़े हींग हगने और खानेपीने तथा सर्दीगर्मीका परहेज रखनेकी जरूरत है। हमें तो कोई यह भी पूछनेवाला नहीं है कि तू किस खेतकी मूली है। हम तो चाहे बीमार हों चाहे तंदुरुस्त, किसीको इससे कुछ वास्ता ही नहीं है। कोई अपने ही मरने मर जाओ और अपने ही जीने जी जाओ, पर किसी दूसरेको कुछ मतलब ही नहीं है कि हम मर गई हैं या जीती हैं, तकलीफमें हैं या आराममें। इसवास्ते बीमार पड़नेपर हम किसके भरोसे इस बातका नखरा करें कि ठंडे गर्ममें हाथ नहीं देना, गीले सील्हे पर

पैर नहीं रखना और हवा बावमें नहीं बैठना, और किसके सहारे पर हम इस बातका खयाल रक्खें कि यह चीज गर्मी करेगी और यह सर्दी, इससे नफा होगा और उससे नुकसान, यह चीज खानी है और वह नहीं खानी । अगर हम ऐसे नखरे करने लगें तो एक दिनमें सड़कर मर जावें ।

प्यारी बहनो, ये स्त्रियाँ संयमरूप चलनेसे बचनेके वास्ते इसी तरहकी और भी बहुतसी बातें बनाया करती हैं । लेकिन यह सिर्फ इनकी बहानेबाजी और बिल्कुल उलटी बातें हैं । जरा सोचनेकी बात है कि जिन सधवा स्त्रियोंके दस पूछनेवाले हैं और बीमारीमें जिनको सब प्रकारका आराम पहुँचाया जाता है उनको तन्दुरुस्त रहनेकी ज्यादा फिकर होनी चाहिएँ या उन विधवा बेचारियोंको जिनके बीमार पड़ जानेसे दो दो दिन तक मुखमें पानी भी न पड़े, चूल्हेमें आग तक न सुलगे, और जिनको दुखके मारे सारी सारी रात तड़पने, हायहाय करने और चिल्लाने पर भी कोई यों न पूछे कि तेरा क्या हाल है । मेरी प्यारी बहनो, बीमारीसे बचने और तंदुरुस्तीका खयाल रखनेकी जितनी तुमको जरूरत है उतनी सधवाओं को कदापि नहीं है । क्योंकि उनको तो भारी बीमारीमें भी मौज है और तुमको जरासी तकलीफमें भी मौत है । उनको तो महीनों बीमार पड़े रहनेमें भी कोई दिक्कत नहीं है और तुमको एक ही दिनके पड़ जानेमें नानी दादी याद आ जाती है ।

सच तो यह है कि जो विधवा बहनें अपनी तन्दुरुस्तीका खयाल नहीं रखती हैं, वे अपनी तन्दुरुस्तीसे इस कारण बे-परवाह नहीं हैं कि उन्होंने ऋषिमुनियोंके समान अपने शरीर-से ममता छोड़ दी है। बल्कि वे तो अपनी इन्द्रियोंके बस होकर ऐसी लाचार हो रही हैं कि अपनी जीभको जरा भी नहीं रोक सकती हैं, और एक रत्ती भर भी अपने मनको नहीं थाम सकती हैं। इस वास्ते चाहे उनको कितनी ही तकलीफ भुगतनी पड़े, पर जो जिसवक्त उनके मनको भाता है वही करके हटती हैं। प्यारी बहनो, जरा यह भी तो विचारो कि सधवा स्त्रियोंको नखरेबाज और तुनकामिजाज कहकर उनकी हँसी उड़ाना तुमको तब ही शोभा दे सकता है, जब तुम बीमार पड़ने पर कड़वी कैसेली दवाको पीनेसे जरा भी न हिचकिचाओ और हकीमके कहे मुताबिक खानेपीने और सर्दी गर्मी सहन करनेमें जरा भी न घबराओ।

देखो, जिनके दस पूछनेवाले हैं ऐसी सधवा स्त्रियाँ अगर कड़वी कसैली दवा न खावें तो उनके वास्ते अनेक प्रकारके मजेदार शर्बत, चटनी और अर्क तय्यार हो सकते हैं, न जाने कहाँ कहाँसे ढूँढ़ ढूँढ़कर अनेक स्वादिष्ट ओषधियाँ लाई जा सकती हैं, लेकिन तुम्हें तो कोई एक बार बुरी भली ही ला दे तो गनीमत है। इस वास्ते अगर तुम भी दवामें स्वाद ढूँढ़ो और कड़वी कसैली खानेसे इनकार करो, तो तुम तो सधवा स्त्रियों-से भी ज्यादा नखरेबाज और नाजुकमिजाज हो, और

अपनी इन्द्रियोंके बसमें होकर ऐसी अंधी हो रही हो कि तुमको तो अपना भला बुरा भी नहीं सूझता है।

विधवा स्त्रियो, तुम्हारा इस प्रकार अपनी इन्द्रियोंके बसमें होना बड़ी लज्जाकी बात है। क्योंकि सधवा स्त्रियाँ तो अपनी इन्द्रियोंको पुष्ट करने और मन भाया खाने पीनेको ही अपने सौभाग्यका फल और अपने जीवनका सार समझती हैं। इस वास्ते वे अगर हर चीजमें स्वाद ढूँढ़ें और मन माना करें तो करो, मगर तुम तो अपनी इच्छाओंको मार कर और अपनी इन्द्रियोंको बसमें करके अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनाना ही अपने जीवनका कर्तव्य मानती हो, इस वास्ते अगर तुम भी हर चीजमें स्वाद ढूँढ़ती हो, कड़वी कसैली दवा खानेमें नाक भौं चढ़ाती हो, अपनी तन्दुरुस्ती रखनेके वास्ते भी खाने पीनेका परहेज नहीं कर सकती हो और सर्दी गर्मी सहन नहीं कर सकती हो, तो बहुत बड़े आश्चर्यकी बात है।

अगर तुमको अपनी इन्द्रियों और मन पर इतना भी काबू नहीं हुआ है तो तुम्हारे व्रत उपवास, जप तप, यम नियम सब व्यर्थ ही गये और तुमने कुछ भी धर्म साधन नहीं किया। विधवा बहनो, तुम खूब अच्छी तरह समझ रक्खो कि दुनिया भरमें जितने भी मत और जितने भी धर्म प्रचालित हैं, वे सब इन्द्रियों और मनको बस करके आत्माको शुद्ध और पवित्र बनानेके ही भिन्न भिन्न मार्ग हैं। इसवास्ते चाहे

तुम्हारा कोई भी धर्म हो और उस तुम्हारे धर्मके साधन भी कुछ ही हों, परन्तु हैं वे सब आत्माकी ही शुद्धिके वास्ते। इस कारण धर्मसाधनमें तुमने चाहे जितना कष्ट उठाया हो, चाहे जितनी मेहनत की हो, चाहे जितना धन खर्चा हो और चाहे जितना समय लगाया हो; परन्तु असलमें धर्मसाधन उतना ही हुआ है जितना तुमने अपनी इन्द्रियोंको बस करके अपनी आत्मामें शान्ति पैदा कर ली है, और अगर यह नहीं हो सका है तो तुमने व्यर्थ ही डले ढोये हैं-फिजूल ही अपने शरीरको कष्ट दिया है।

कौन आदमी धर्मात्मा है और कौन नहीं, और किसने कितना धर्म साधन किया है, इस बातकी सबसे आसान कसौटी और मोटी पहचान यही है कि उसका मन और उसकी इन्द्रियाँ उसके बसमें हैं या नहीं, और हैं तो कितनीं? प्यारी बहनो, तुम भी नित्य इसी प्रकार अपनी जाँच कर लिया करो। तुम उनही कामोंको करती रहो और उनही तरीकों पर चलती रहो, जिनसे मन और इन्द्रियाँ बसमें हों, और आशा तृष्णाका नाश होकर चित्तमें शान्ति आवे तथा आत्मा पवित्र हो।

सधवा स्त्रियाँ दुनियाके ऐशो आराम पर रीझकर अपने मनुष्य-जन्मको अकारथ खो रही हैं। इस मनुष्य-पर्यायका एक एक पल एक एक अशरफीसे भी ज्यादा कीमती है। परन्तु वे नहीं जानती हैं कि हम अशरफियोंकी थैलियाँ देकर हीरे जवाहरातके धोखेमें रंग-बिरंगे काँचके टुकड़े

मोल ले रही हैं जो एक कौड़ीके भी नहीं हैं। तुमने संसारके भोगोंको काँचके टुकड़े समझ कर दूर फेंक दिया है और अपनी आत्माकी शान्तिको ही सच्चे जवाहरात समझकर इसकी ही प्राप्तिके वास्ते अपनी सारी आयु खपा देनेका बीड़ा उठाया है। इस वास्ते तुम धन्य हो, और साधु महात्माओंकी तरह दर्शन पूजनके योग्य हो। परन्तु याद रक्खो कि यह तुम्हारा काम कोई आसान काम नहीं है, जिसको सब कोई कर सके। यह कोई बच्चोंका खेल नहीं है, जो बाह्य क्रियाओंके ही करनेसे पूरा हो सके। यह तो आत्माकी शुद्धि है जो हृदयमें शान्ति लानेसे ही हो सकती है, और हृदयमें शान्ति आती है मनको काबू करने, इन्द्रियोंको दबाकर अपनी इच्छाओंको कम करने, हर एक अवस्थामें खुश रहने और संतोष धारण करनेसे। इसवास्ते तुमको तो हर वक्त इन्हीं बातोंके साधनमें लगा रहना चाहिए। यही तुम्हारा धर्म है और इसीसे तुम्हारा कल्याण होगा।

इस बातको तुम हर वक्त अपने ध्यानमें रक्खो कि यह मन बहुत ही जबरदस्त और चंचल है जो पल पलमें गिरगिट कैसे रंग बदलता रहता है। कभी तो इस मनमें ऐसी ऊँची तरंगें उठती हैं, मानों सभी प्रकारका मोह त्याग कर परम वैराग्य प्राप्त कर लिया है और फिर जरा ही देरमें यह मन ऐसा नीचे गिर जाता है मानों यह मान माया लोभ क्रोधका साक्षात् पुतला ही है। कभी तो इसको इतना ऊँचा खयाल आता है कि

अगर कोई हमारा सारा माल भी लूट कर ले जायगा और हमारी गर्दन भी काट जायगा, तो भी हम कुछ परवाह नहीं करेंगे और पल भरके ही पीछे यह मन ऐसा तुच्छ हो जाता है कि एक एक तिनके पर भी जान देने और दूसरेकी जान लेनेको तय्यार हो जाता है। इस वास्ते मनपर काबू पाना बहुत ही मुश्किल काम है जो एक दिनमें नहीं हो सकता है, बल्कि इसके लिए सारी उमर अभ्यास करते रहने और हर वक्त संभाल रखनेकी जरूरत है। मस्त हाथीको बस करना और शेरके साथ कुश्ती लड़ना आसान है, लेकिन मनको काबू करना मुश्किल है।

कमजोर आदमी कभी मन पर काबू नहीं पा सकता है। कमजोर आदमी जिस प्रकार चलनेमें बारबार डगमगाता है, कदम कदम पर ठोकरें खाता है और जगह जगह फिसल फिसल कर गिरता जाता है, उसी तरह कमजोर आदमीका हृदय भी हरवक्त डाँवाँडोल रहता है। जरा जरासी चीज पर उसका जी ललचाता है और बात बात पर उसको रंज और गुस्सा आता है। इस प्रकार कमजोर बेचारा तो सदा भटकता ही रहता है, और अपने मनके बस होकर सदा दुःखोंमें ही फँसा रहता है। कमजोरीके ही कारण बूढ़े आदमियोंकी तृष्णा बढ़ जाती है और मन बेकाबू रहता है। कमजोरीके ही कारण बीमारका मिजाज चिड़चिड़ा हो जाता है, खाने पीनेकी चीजों-पर मन चलने लगता है और वह बच्चोंकी तरह सब चीजें

माँगने लगता है। इस वास्ते जिसको अपना मन बस करना हो, जो अपने चित्तको शान्त और हृदयको पवित्र करना चाहती हो, जिसने अपनी आत्माको कर्म-कलंकसे शुद्ध करनेका इरादा किया हो, उसको मजबूत और तन्दुरुस्त रहनेकी भी बहुत जरूरत है। दुनियाके लोग जो अपनी पाँचों इन्द्रियोंके भोगोंको ही अपना जीतव्य समझते हैं वे अगर तन्दुरुस्तीका खयाल न रक्खें तो कोई हर्जकी बात नहीं है। क्योंकि खाना पीना आदि इन्द्रियोंके भोग तो पशु-पर्यायमें भी मिल जाते हैं। इस वास्ते उन लोगोंका मतलब तो सभी योनियोंमें सिद्ध होता रहेगा। परन्तु मेरी विधवा बहनो, अपनी आत्माकी शुद्धिके जिस महान् कामको तुमने उठाया है वह एक मनुष्य-पर्यायमें ही सिद्ध हो सकता है। इस कारण इस अति उत्तम मनुष्य-पर्यायकी रक्षा करना और इसमें किसी प्रकारका भी रोग न आने देना, अर्थात् इसको तन्दुरुस्त बनाये रखना तुम्हारे वास्ते बहुत जरूरी है। इस लिए तुम अपनी तन्दुरुस्तीका पूरा पूरा खयाल रक्खो और व्रत उपवास, जप तप, नियम आखड़ी, दयाधर्म, परोपकार आदि और भी जो कुछ तुम्हें करना हो वह सब इसी रीतिसे करो, जिसमें तुम्हारी तन्दुरुस्तीमें फर्क न आवे और जिससे आगेको भी तुम इन सब कामोंको अच्छी तरह कर सको।

विधवाओंके धर्मसाधनका मार्ग।

मेरी बहनो, दुनिया बहुत बुरी है और सदासे ही बुरी है, लेकिन यह दुनिया जैसी बुरी आजकल हो रही है ऐसी शायद

कभी भी न रही हो। क्योंकि आजकल तो यह गजब हो रहा है कि स्वयम् रक्षक ही भक्षक हो रहे हैं, और खेतकी बाढ़ ही खेतको खा रही है। इस वास्ते आजकल बहुत फूँक फूँक कर कदम रखनेकी जरूरत है। तुम्ही देखो कि दुनियामें धर्म साधुओंके ही द्वारा आसानीसे चल सकता है। वे ही नगर नगर और गाँव गाँव घूमकर दुनियाके झगड़ोंमें फँसे हुए गृहस्थोंको जगाकर धर्मकी तरफ लगा सकते हैं और अपनी सच्ची आत्मासे धर्मका उपदेश देकर मोही जीवोंके हृदयका मोह अन्धकार हटा सकते हैं। लेकिन आजकल यह मुश्किल आ पड़ी है कि हजारों और लाखों ठगोंने साधुओंका भेस धर लिया है और इस भेसके कारण लोगोंमें मान्यता होनेसे इन लोगोंको ठगगी करनेका अच्छा मौका मिलने लगा है। यह लोग साधुका भेस धरकर धर्मके नामसे अनेक प्रकारके जाल फैलाते हैं और अपना काम बना ले जाते हैं।

ऐसे ठगोंका आचरण सभी बातोंमें गिरा हुआ होता है, इस कारण इनकी संगतिसे दुनियाके लोगोंका भी आचरण बिगड़ता है और बड़ी बड़ी खराबियाँ पैदा होती हैं। ये लोग अपना बाहरी स्वरूप और अपनी बाहरकी सब क्रियायें ऐसी बनाते हैं कि सच्चे और झूठे साधुकी पहचान करना अब बहुत ही मुश्किल हो गया है। बातें भी ये लोग ऊँचे दर्जेके वैराग्यकी ऐसी बनाते रहते हैं जिससे बड़े भारी सिद्ध महंत मालूम हों। इसके अलावा ये लोग दुनियादारोंके सामने अपने जोग और अपने तपका ऐसा बड़ा माहात्म्य गाते रहते हैं और अपने पास

ऐसे ऐसे जंतर-मंतरोंका होना भी बताते रहते हैं जिनके द्वारा दुनियाके लोगोंके मुश्किलसे मुश्किल काम भी क्षणभरमें सिद्ध हो सकें। दुनियाके लोग कुछ तो दुनियाके मोहमें पहलेसे ही अन्धे होते हैं और कुछ इन ठगोंकी बातोंसे हो जाते हैं। इस वास्ते दुनियाके लोग इनके पीछे पीछे फिरने लगते हैं और बरसों इनके जालमें फँसे रहते हैं।

मेरी बहनो, जब साधुओंका यह हाल है कि उनमें सच्चे कम हैं और ठग ज्यादा, और जब ये लोग ऐसे चालाक हैं कि बड़े बड़े होशियार आदमियोंकी भी आँखोंमें धूल डालकर अपनेको सच्चे साधुओंके समान पुजवा रहे हैं, तब तुम बेचारी तो क्या पहिचान कर सकती हो कि कौन सच्चा साधु है और कौन बनावटी। मेरी बहनो, तुम यह भी जानती हो कि आदमीकी मोती कैसी आब होती है जो जरासी बातमें बिगड़ती है और फिर नहीं सुधरती। काजलकी कोठड़ीमें घुसकर बिना दाग लगे कोई मुश्किलसे ही निकल सकता है और विधवाका तो बहुत ही मुश्किल मामला है; विधवाको तो अपनी बहुत ही सँभाल रखनेकी जरूरत है। इस वास्ते इस समय तुम्हारे लिए यही मुनासिब है कि तुम साधुओंसे कुछ वास्ता मत रक्खो। चाहे कोई कैसा ही सच्चा साधु हो और चाहे गाँवभरकी सारी स्त्रियाँ उसके दर्शनोंको जाती हों, परन्तु तुम ऐसेके पास भी मत जाओ और न उसको अपने घर बुलाओ, अर्थात् तुम किसी भी साधुसे कुछ गरज़ मत रक्खो।

साधुके पास जानेसे दुनियाके लोग दो ही प्रकारके लाभ उठा सकते हैं, एक तो धर्मोपदेशका और दूसरे अपने दुनियाके कामोंकी सिद्धिका, जैसे औलादका होना, धन दौलतका मिलना, मुकद्मेका जीतना, बैरीका नाश होना आदि। मेरी विधवा बहनो, अव्वल तो तुम्हें दुनियाके किसी कामकी ऐसी भटक ही नहीं है जिसके वास्ते तुम साधुओंकी सेवा करती फिरो और दूसरे वह तो सच्चा साधु ही नहीं है जो दुनियाके धंधोंमें पड़ता है और अपने घरका कारज छोड़कर लोगोंके झूठे सच्चे कारज सिद्ध करता फिरता है। एक कथा प्रसिद्ध है कि किसीकी गाय जंगलको भागी जा रही थी और गायका मालिक पीछे पीछे भागा जा रहा था। इतनेमें सामनेसे कोई साधु आता हुआ दिखाई दिया। गायवालेने आवाज देकर कहा कि बाबाजी हेरियो हेरियो, अर्थात् मेरी गायको रोक लो। बाबाजीने जवाब दिया कि बच्चा अगर हमें ढंगर हेरने होते तो अपने घरके ही न हेरते। मतलब इसका यह है कि जो साधु दुनियाके लोगोंके दुनियादारीके कामोंमें पड़ता है वह साधु ही नहीं है; क्योंकि अगर उसको दुनियाके ही कामोंमें लगना था तो वह अपना घर द्वार त्यागकर साधु ही क्यों बना? इस कारण वह साधु नहीं है, बल्कि बहुरूपिया और ठग है।

रही धर्मोपदेशकी बात, सो अव्वल तो आज कलके बहुतसे साधु धर्मोपदेश करना जानते ही नहीं और जो कुछ थोड़ा बहुत धर्मोपदेश करते भी हैं, तो उसमें भी कामकी

बात बहुत ही थोड़ी होती है। ज्यादा करके तो उसमें भी साधुओंकी प्रशंसा और उनकी सेवा-टहलके महान् फलोंका ही बखान होता है जिससे सुननेवालोंको साधुसेवाकी ही प्रेरणा हो। गृहस्थोंको कार्यकारी सच्चा उपदेश करनेवाले साधु तो आजकल कोई विरले ही होंगे । इस कारण धर्मोपदेशके वास्ते भी साधुओंके पीछे फिरना बिल्कुल ही फिजूल है। आज कल सर्व प्रकारका धर्मोपदेश धर्मशास्त्रों और उपदेशी पुस्तकोंसे बड़ी आसानीके साथ घर बैठे ही मिल सकता है। इस समय तो प्रायः सर्व ही धर्मग्रन्थ और उपदेशी पुस्तकें बहुत ही सरल भाषामें लिखी जा चुकी हैं और छप जानेके कारण बहुत ही कम कीमतको जब चाहें मिल सकती हैं। इस वास्ते सधवा स्त्रियाँ जो चाहे सो करें, लेकिन विधवा स्त्रियो, तुम तो आजकलके साधुओंसे बिल्कुल ही अलग रहो; क्यों कि तुम्हारा मामला बहुत ही नाजुक है।

यही हाल आजकलके तीर्थस्थानोंका हो रहा है। इन तीर्थों पर भी किसी समय बड़े बड़े महात्मा और अच्छे अच्छे ज्ञानी पुरुष मिलते थे, जिनके उपदेशसे दुनियाके लोगोंको बड़ा लाभ होता था, और इसी लालचसे दुनियाके लोग दौड़ दौड़ कर तीर्थस्थानों पर जाते थे, लेकिन आजकल तीर्थोंके पंडोंका जो हाल है और आजकल तीर्थस्थानोंकी जो बद-नामी है वह हम इस पुस्तकमें नहीं लिख सकते हैं, और न हम चाहते हैं कि हमारी बहनोंको तीर्थोंके यह हाल मालूम हों।

हम तो उनसे सिर्फ यह ही कहना चाहते हैं कि समय बहुत खोटा बीत रहा है इस वास्ते आजकलकी दुनियामें न किसी भाई बन्धुका ऐतवार है, न किसी रिश्तेदारका, न नौकर-चाकरका और न अपने मनका। इस वास्ते विधवाओंका घरसे बाहर निकलना ही अच्छा नहीं है, उनको जो कुछ भी धर्म साधन करना हो वह घर बैठे ही कर लें।

विधवा बहनो, यह तुम भली भाँति जानती हो कि धर्मके जितने भी साधन हैं वे सब मनको शुद्ध करने और आत्माको पवित्र बनानेके वास्ते ही ह। इसवास्ते तीर्थयात्राके द्वारा जितना मन शुद्ध हो सकता है और जितनी आत्मा पवित्र बन सकती है उतना तुम घर बैठे ही कर सकती हो। क्योंकि तुम तो घर पर भी सारे दिन धर्मसाधनमें ही लगी रहती हो, और अगर तुम तीर्थभक्तिको ही कोई विशेष आवश्यक धर्म मानती हो तो जिस प्रकार श्रीभगवान् या अन्य देवीदेवताओंका अपने मनमें ध्यान करके उनकी पूजा भक्ति करती रहती हो, उसी प्रकार तीर्थोंका भी ध्यान करके उनकी पूजा भक्ति कर लिया करो। इस विधिसे तुम सभी तीर्थोंकी वंदना कर सकती हो और अनेक बार कर सकती हो।

विधवा बहनो, मैं स्त्रियोंकी बुराई करनेके वास्ते नहीं लिखता हूँ, बल्कि यह बात बिल्कुल सच है कि तीर्थयात्रा करनेका शौक स्त्रियोंको ज्यादा करके इसी वास्ते होता है कि अनेक प्रकारके नगर गाँव, अनेक प्रकारकी नई नई चीजें

और भिन्न भिन्न देशके आदमी देखनेमें आवेंगे। पर मेरी प्यारी बहनो, ऐसे शौक सधवा स्त्रियोंको ही शोभा देते हैं। इसवास्ते अगर वे तीर्थयात्रा करती फिरें तो फिरो; मगर तुम तो अपने घरमें ही जोग साधे बैठी रहो और अपने मन और इन्द्रियोंको काबू करके, मोह और अहंकारका नाश करके, और अपने शरीरको पूरी तरहसे पराई सेवामें लगाकर अपनी आत्माकी ऐसी उन्नति करो कि लोग तुम्हारे ही दर्शनोंको आने लगें और तुम्हारा ही घर तीर्थस्थान बन जावे।

विधवा बहनो, तीर्थयात्राके समान धर्मके मेलोंमें भी तुम्हारे जानेकी कोई जरूरत नहीं है। यह काम भी तुम सधवाओंके वास्ते ही छोड़ दो। बल्कि तुम्हें तो यह भी चाहिए कि जिस प्रकार सधवायें प्रतिदिन मंदिर शिवालयोंमें दर्शन करने और नदी-बावड़ियों पर स्नान करने जाती हैं, तुम इस बातमें भी उनकी रीस न करो और कहीं भी न जाओ, बल्कि जो कुछ भी धर्मसेवन तुमको करना हो वह घरमें ही बैठकर करो।

इस मौके पर तुम यह जरूर कहोगी कि हमने ऐसा क्या कुसूर किया है, जो हमको कैदीके समान घरमें ही पड़े रहनेकी सलाह दी जाती है और धर्मके वास्ते भी घरसे बाहर निकालनेको मना किया जाता है। परन्तु मेरी बहनो, बुरा मत मानो; क्योंकि मैंने जो कुछ लिखा है वह सब तुम्हारी ही भलाईके वास्ते लिखा है, और तुम्हारे धर्मकी बढ़वारी होनेके वास्ते लिखा है। देखो इस वक्त तो तुम घरसे बाहर निकलने

पर ही घबराती हो, परन्तु क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि पिछले समयकी स्त्रियाँ विधवा हो जाने पर या तो अपने पतिके साथ जीती ही जल मरती थीं, या सिर मुँड़वा कर और जोगनका भेस बनाकर घरके एक कोनेमें ही जमीन पर आसन जमाकर अपनी उमर टेर कर देती थीं। वे न खाट पर सोती थीं, न अच्छा खाती थीं और न अच्छा पहनती थीं; बल्कि बिल्कुल रूखा सूखा खाकर और तन ढकनेके वास्ते एक आध मोटा-झोटा कपड़ा पहन कर बिल्कुल ही साधु संन्यासियोंकी तरह अपना रँडापा काटती थीं। मगर आजकलकी तो बात ही निराली है।

आज कल राँडें अपना सिर तो क्या मुँड़वावेंगी, उनको तो अपने सारे अलंकार ही उतारने भारी हो रहे हैं। आजकलकी स्त्रियोंने तो रँडापेके भेसको यहाँतक भुला दिया है कि कभी कभी तो स्त्रियोंको देखकर यह पहचान करना ही भारी पड़ जाता है कि यह सधवा है या विधवा। खाना पीना तो सभी विधवाओंका बिल्कुल सधवाओंके ही समान हो गया है; इसमें तो कुछ अन्तर रहा ही नहीं है, और लड़ना झगड़ना, कोसना पीटना गाली गलौज बकना तो आजकल विधवाओंमें सधवाओंसे भी ज्यादा आ गया है। आज कलकी विधवाओंको तो यह मालूम ही नहीं है कि भले मनुष्यकी दो ही अवस्था हो सकती हैं,—या तो रागकी या वैरागकी। इन दो अवस्थाओंके सिवाय मनुष्यकी कोई तीसरी अवस्था ही नहीं हो सकती है, जिसमें वह नेकीके साथ

रह सके। इसी वास्ते पहले समयकी स्त्रियाँ विधवा होने पर वैराग ले लेती थीं और अपना सिर मुँड़वाकर तथा भूमिका साँथरा बनाकर जोगी संन्यासियोंकी तरह एकान्तमें अपने दिन बिताती थीं।

लेकिन आजकल न राग है और न वैराग। आज कलकी विधवायें न इधर हैं न उधर। बल्कि आज कलका रँडापा तो एक प्रकारका खेल तमाशासा हो रहा है जिसके सबबसे आजकलके लोगोंको इनके विषयमें बड़ी भारी चिन्तायें हो रही हैं, अनेक अनेक प्रकारकी बातें उठने लगी हैं, और नईसे नई तद्बीरें निकलने लगी हैं।

विधवा बहनो, आज कलकी विधवाओंकी जो हालत है वह तुम भी अच्छी तरह जानती हो और सब लोग भी अच्छी तरह जानते हैं। इस पुस्तकमें हम उसका कुछ भी बखान करना नहीं चाहते हैं। क्योंकि गंठेके छिलके उधेड़नेसे सिवाय गंदगी फैलानेके और कुछ फायदा नहीं होता है। इस कारण तुम खुद ही समझ लो कि आज कलकी दुर्दशाको मेटनेके वास्ते तुम्हारा घरहीमें बैठा रहना उचित है या नहीं।

ज्यादा मुश्किल आज कलके जमानेमें यह आ रही है कि मर्दोंकी दशा स्त्रियोंसे भी ज्यादा बुरी है। यहाँतक कि वे अपने लिए किसी पापको पाप ही नहीं समझते हैं, और किसी ऐबको अपने लिए ऐब ही नहीं मानते हैं। चील जिस प्रकार झपट्टा मारनेके वास्ते आकाशमें मँड़लाती रहती है और

अपनी तेज आँखोंसे अपने खानेकी चीजोंको ताकती रहती है, बिल्कुल ऐसा ही हाल आजकलके मर्दोंका हो रहा है। वे भी हरवक्त बुरी बातोंकी ही ताकमें रहते हैं और इसी लिए सब जगह मँड़लाते हैं, यहाँतक कि धर्मस्थानोंमें भी अपने इस खयालको नहीं भूलते हैं और वहाँ भी अनेक प्रकारके खोटे विचार उठाकर अपने हृदयको गंदा बनाते रहते हैं। जंगलका भेड़िया जिस प्रकार हरवक्त शिकारकी ही फिकरमें रहता है और सभी जीवोंको भक्षण कर जाना चाहता है, बिल्कुल यही हाल आज कलके मर्दोंका हो रहा है। इस कारण आज कल दुनियाका मामला बहुत ही मुश्किलमें आ पड़ा है और बहुत सावधानीसे रहनेकी जरूरत पड़ गई है।

मेरी विधवा बहनो, जिस प्रकार चोरोंसे बचनेके वास्ते दुनियाके लोग रातको दर्वाजेकी कुंडी लगाकर घरमें बन्द होकर ही सोते हैं, इसी तरह आज कल तुमको भी घरमें ही बैठनेकी जरूरत है। जहाँ तुम्हारी और बहुतसी क्रियायें सधवा स्त्रियोंसे निराली हैं वहाँ एक यह भी सही। शुरू शुरूमें तो तुमको इस प्रकार लुककर बैठना बहुत दूभर मालूम होगा, लेकिन कुछ दिनोंके बाद अभ्यास हो जाने पर कुछ भी बुरा नहीं लगेगा, बल्कि हृदयको शान्ति प्राप्त होनेसे एक प्रकारका आनन्द आने लगेगा। और सच तो यह है कि चाहे तुमको कितना ही कष्ट मालूम हो, पर रहना चाहिए तुमको घरमें बैठ कर ही। क्यों कि रँडापा काटना तलवारकी धार पर खेलनेसे कुछ कम मुश्किल नहीं है। यही कारण था कि पहले समयकी

स्त्रियाँ रँडापेसे घबराकर आपघात कर लेती थीं और पतिके साथ ही जल मरती थीं। लेकिन तुम यह भी नहीं कर सकती हो, इस वास्ते तुमको तो तलवारकी तेज धार पर ही चल कर अपनी उमर टेर करनी पड़ेगी, अर्थात पूरी पूरी सावधानी रख-कर ही अपना रँडापा काटना पड़ेगा।

विधवा बहनो, तुम इस बातसे भी मत घबराओ कि घरसे बाहर न निकलने और मंदिर शिवालय आदिमें न जानेसे तुम्हारे धर्मसाधनमें कुछ फर्क आ जावेगा;। क्योंकि सभी लोगोंके धर्मसाधनका मार्ग एक नहीं हुआ करता है। तुम नित्य ही देखती हो कि गृहस्थ लोग तो चौकेसे बाहर निकली हुई रोटी नहीं खाते हैं, लेकिन साधु संन्यासी इन्ही घरोंसे रोटी माँगकर ले जाते हैं और अपने स्थान पर बैठकर खाते हैं। लोग अपनी जातिके सिवाय और किसीके हाथकी रोटी नहीं खाते, लेकिन ये साधु सन्यासी लोग न तो अपनी जाति बताते हैं और न गृहस्थोंकी जाति पूछते हैं। चुपचाप सभीके घरोंसे रोटी माँगकर ले जाते हैं और खा लेते हैं। गृहस्थ लोग मंदिर शि-वालयोंमें जिस प्रकार देवताका पूजन करते हैं, फल फूल आदि अनेक द्रव्य चढ़ाते हैं, उस तरह साधु लोग नहीं चढ़ाते हैं। इसी प्रकारकी और बहुतसी क्रियाये हैं जिनमें गृहस्थ और संन्यासियोंमें भेद है। कारण इसका यह है कि गृहस्थ तो सिर्फ बाहरकी ही क्रियायें करते हैं, अपने शरीरको धो-माँ-जकर और नहा धोकर ही अपनेको पवित्र मान लेते हैं और इसी कारण अनेक प्रकारकी छूतछात मानते हैं, लेकिन साधु

लोग अपने हृदयके मैलको धोते हैं और मान माया लोभ क्रोध आदि कषायोंका नाश करके अपनी आत्माको पवित्र बनाते हैं। इस वास्ते वे अन्तरंगकी क्रियायें करते हैं और बाहरकी क्रियाओंकी कुछ परवाह नहीं करते।

गृहस्थ लोग खूब जानते हैं कि हमारी बाहरी क्रियाओंसे अन्तरंगकी कुछ भी सफाई नहीं होती है। इसी वास्ते वे परमेश्वरसे प्रार्थना करते रहते हैं कि "मेरे औगुन मत न चितारो, स्वामि मुझे अपना जानकर तारो।" अर्थात् हे परमेश्वर चाहे हममें कितने ही दोष हों तो भी तू हमारे दोषों पर कुछ खयाल मत कर और हमको वैसे ही तार दे। साधु संन्यासियोंके पास भी ये गृहस्थ लोग इसी वास्ते जाते हैं, इसी वास्ते उनकी सेवा चाकरी करते हैं, मंदिर शिवालोंमें भी इसी वास्ते जाते हैं, देवी देवताओंको भी इसी कारण मनाते हैं और तीर्थयात्रा भी इसी कारण करते हैं कि हमको अपने हृदयको तो पवित्र करना न पड़े और अपनी पापक्रियायें छोड़नी न पड़ें, बल्कि अनेक प्रकारके पाप करते हुए भी और हृदयको अत्यंत अपवित्र रखते हुए भी हमको पुण्यकी प्राप्ति हो जावे। परन्तु साधु संन्यासी लोग ऐसा नहीं चाहते। वे तो अपने पापोंको दूर करके अपने आपेको ही सुधारना चाहते हैं। इसवास्ते वे गृहस्थोंकी तरह परमेश्वरकी प्रार्थना करनेके स्थानमें 'सोहम्'का जाप करते हैं, अर्थात् आप ही परमात्मा बनना चाहते हैं और अन्य भी सब ऐसी क्रियायें करते हैं, जिससे अन्तरंगकी शुद्धि हो।

प्यारी बहनो, अब तुम ही अपने हृदयमें विचारो कि तुम गृहस्थोंकी तरह बाहरी धर्म कमाना चाहती हो या साधुओंकी तरह अपने अंतरंगको शुद्ध करके अपना सच्चा कल्याण करना चाहती हो। तुम अच्छी तरह विचार लो कि तुम तो गृहस्थोंकी तरह दुनियादारीकी दलदलमें ऐसी फँसी हुई नहीं हो जिससे लाचार होकर तुमको भी यही कहना पड़े कि हमसे तो अपने अंतरंगकी शुद्धि हो ही नहीं सकती है। बल्कि तुम तो बड़ी अच्छी तरहसे अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बना सकती हो और दयाधर्म पालकर, पराया उपकार करके, अपने कुटुम्बियोंकी सेवा टहल करके और दुख दर्दमें उनके काम आकर बहुत कुछ पुण्य कमा सकती हो। इस वास्ते तुमको गृहस्थोंकी तरह बाहरी क्रियाओंमें ही उलझे रहनेकी जरूरत नहीं है। फिर तुम क्यों घबराती हो कि घरमें ही बैठे रहनेसे, नित्य मंदिर शिवालयमें न जानेसे, नदी बावड़ी पर स्नान न करनेसे, साधु संन्यासियोंके दर्शन न मिलनेसे, तीर्थयात्रा न होनेसे और मेले तमाशे न देखनेसे, हमारे धर्मसाधनमें कोई कमी आ जावेगी। तुम निश्चय मानो कि घर बैठनेसे तुम्हारे धर्मसेवनमें कुछ भी कमी न आवेगी, बल्कि बहुत ज्यादा ज्यादा बढ़वारी होगी; क्योंकि तुम तो ऊँचे दर्जेका वह उत्तम धर्म पालन कर सकती हो जिसमें इन बातोंकी जरूरत ही नहीं है। यकीन मानो कि अगर तुम सच्चा धर्म पालन करोगी और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनाओगी तो तुमही घर बैठी पुजोगी और साक्षात् देवी मानी जाओगी।

विधवाको अपने कुटुम्बियोंके साथ ही रहना चाहिए।

अब सबसे जरूरी और सबसे आखरी बात जो मुझे तुमसे कहनी है वह यह है कि शास्त्रमें साधुओं और संन्यासियोंको भी अकेले रहनेकी मनाही है, उनके वास्ते भी कई साधु मिलकर इकट्ठा रहनेकी आज्ञा है। कारण इसका यह है कि यह मन बहुत ही चंचल और जबरदस्त है, जिसका काबूमें रखना कोई आसान बात नहीं है। अकेला रहने पर यह मन चारों तरफ दौडता है और आदमीको अनेक प्रकारके प्रलोभन देकर भ्रमाता है। लेकिन जब कई आदमी इकट्ठा रहते हैं तब उसका दबाव उस पर और उसका दबाव उस पर पड़ता रहता है और यह चंचल मन ज्यादा हाथ पैर नहीं निकालने पाता, बल्कि बहुत ही कम-जोर हो जाता है और दबा रहता है। विधवा बहनो, अब तुम ही विचारो कि जब साधु संन्यासियोंके वास्ते भी अकेले रहनेमें डर है और उनको भी दूसरे साधुओंके साथ ही रहनेकी आज्ञा है, तो तुम्हारे अकेला रहनेमें तो जितना डर माना जावे उतना ही थोड़ा है। तुम्हें तो किसी हालतमें भी अकेला नहीं रहना चाहिए, बल्कि अपने कुटुम्बवालोंमें ही मिलकर रहना चाहिए।

पशुओंको अपना जीवन बितानेके वास्ते एक दूसरेकी सहायता लेने और आपसमें मिलकर रहनेकी जरूरत नहीं है, इस वास्ते वे अलग अलग रहते हैं, परन्तु मनुष्यका तो मनुष्यपना ही यह है कि वह कुटुम्ब बनाकर रहे और एक

दूसरेकी सहायता करे। परन्तु आजकलकी स्त्रियाँ कुछ ऐसी मूर्खा हो गई हैं कि वे भी पशुओंकी तरह बिल्कुल अलग ही रहना चाहती हैं। बल्कि आजकलकी स्त्रियोंको तो अलग रहने-का कुछ ऐसा चावसा होगया है कि अव्वल तो गौने आते ही वे अपनी साससे अलग होना चाहती हैं और अगर उस वक्त वे अपनी साससे अलग न हुईं तो थोड़े दिनों पीछे अपनी देवरानी जेठानीसे तो जरूर ही अलग हो जाती हैं। यद्यपि इस प्रकार जल्द अलग हो जानेसे स्त्रियोंको बहुत कष्ट उठाना पड़ता है, घरका सब कारखाना बारह बाट होजाता है और कुनबेकी आबरू खाकमें मिल जाती है, तो भी आज कलकी स्त्रियाँ अपने अहंकारमें कुछ ऐसी मस्त हैं कि वे सब बुराइयाँ झेलनेको तय्यार हैं, लेकिन इकट्ठा रहनेको तय्यार नहीं हैं। और विधवा होकर तो आज कलकी स्त्रियाँ कुछ ऐसी आपेसे बाहर हो जाती हैं कि उनको एक पलभर भी इकट्ठा रहना नहीं सुहाता है, इस वास्ते वे तो जरूर ही अपना चूल्हा अलग रख लेती हैं और ख्वामख्वाहकी अकड़ मरोड़में आकर अनेक प्रका-रके दुख सहती हैं।

मेरी विधवा बहनो, यद्यपि सधवा स्त्रियोंको भी इकट्ठा रहनेहीमें नफा है और अलग रहनेमें नुकसान है, लेकिन तुम्हारा अकेला रहना तो बहुत ही ज्यादह भयंकर और अनेक आपत्तियोंकी जड़ है। इस वास्ते चाहे कुछ भी हो, परंतु अके-ली मत रहो। विधवा होनेसे पहलेसे अगर तुम अपनी देवरानी, जेठानी या और किसी सम्बंधीके साथ रहती चली आती हो,

तो अब भी उसी तरह उनके साथ रहती रहो और अगर तुम पहलेसे अलग हो गई थीं तो अब फिर शामिल हो जाओ। अव्वल तो तुम्हारे कुटुम्बी ही अपनी आँख पर ऐसी ठीकरी नहीं रख लेंगे कि विधवा होने पर तुमको अलग कर दें, या फिर दोबारा शामिल करनेसे इनकार करने लगें; बल्कि वे चाहे तो लोकदिखावेके वास्ते हो और चाहे अपने सच्चे हृदयसे हो, एक बार जरूर तुमको अपनेमें शामिल करनेके वास्ते कहेंगे और अगर वे बेशरम होकर न कहें— मुँहफट बनकर शामिल करनेसे इन्कार कर दें, तो भी तुम सौ खुशामदें करके और सौ तदबीरें बना कर उनमें शामिल होनेकी कोशिश करो। क्यों कि अपनी गरज बावली होती है। मसल भी मशहूर है कि "अपनी गरजमें गधेको भी बाप बनाना पड़ता है।"

विधवा बहनो, तुम यकीन मानो कि अपने कुटुम्बियोंमें शामिल होकर रहनेकी तुमको बड़ी ही जबरदस्त गरज आ पड़ी है। क्यों कि रँडापा काटना काले नाग खिलानेके समान है। जिस प्रकार एक पल भरके लिए भी सपेरेके असावधान हो जानेसे और जरा सा भी अपना कर्तब चूक जानेसे साँप तुरंत ही सपेरेको काट खाता है, उसी प्रकार विधवाओंके भी जरा चूक जाने पर उनका सब धर्म कर्म नष्ट होकर नरक जानेकी तय्यारी हो जाती है। इस वास्ते जिन विधवाओंको सच्चा धर्मसाधन करना हो, अपना अगंत सँवारना हो और पापोंसे बचना हो उनको लाख जतन करके भी अपने कुटु-

स्त्रियोंमें ही मिलकर रहना चाहिए, और इकट्ठा रहनेमें अगर उनको अनेक प्रकारके कष्ट भी उठाने पड़ें, हर वक्तके ताने मेहने भी सहने पड़ें और बाँदी गुलाम भी बनना पड़े तो ये सब बातें कान दबाकर झेल लेनी चाहिए।

प्यारी बहनो, धर्मात्मा पुरुषोंको तो अपना धर्मसाधन करनेके वास्ते ऐसे ऐसे कष्ट उठाने पड़ते हैं, ऐसे ऐसे घोर तप करने होते हैं और अपने आपेको तिनकेकी बराबर समझकर दुनियाकी ऐसी ऐसी ठोकरें खानी पड़ती हैं कि जिनके सुननेसे भी रोंगटे खड़े होते हैं, फिर तुम्हारी तो बात ही क्या है। क्यों कि तुमको तो उनके मुकाबिलेमें कुछ भी सहना नहीं पड़ेगा, और अगर कुछ सहना भी पड़े तो उसको भी तुम अपना तप ही समझो।

यह बात तुम अच्छी तरह समझ रक्खो कि जबतक तुमको यह अहंकार है कि हम भी कुछ हैं और जबतक तुमको यह खयाल आता है कि हम क्यों पराई ताबेदार बनें, क्यों पराये टुकड़ोंपर पड़ें, क्यों किसीकी खोटी खरी सहें, और क्यों किसीकी टहल चाकरी करें, क्या हमारे हाथ बिल्कुल ही धरती पर टिक गये हैं जो हम ऐसी नमानी बनकर जबर्दस्ती किसीके गले पड़ें और इस तरह अपनी बेइज्जती करावें; ये और इसी प्रकारके और भी अभिमानके खयाल जब तक तुमको आते हैं उस वक्त तक तुम सच्चा धर्म पालन करने और अपने पापोंको काटनेके योग्य नहीं हुई हो। क्योंकि चाहे कोई कितनी ही बाहरकी क्रियायें करता रहे और जप तप व्रत उपवास करके

चाहे जितना कष्ट उठाता रहे, लेकिन जब तक उसको अहंकार है, जब तक उसमें "मैं" भरी हुई है, उस वक्त तक असलमें धर्म एक रत्तीभर भी नहीं हुआ है। इस वास्ते सबसे पहले तुम अपने आपेको मिटाओ, अपनेको बिल्कुल तुच्छ समझकर अपने अहंकारको हटाओ और जिस बिध बन पड़े अपने कुटुम्बवालोंके शामिल रहकर ही अपने रँडापेके दिन बिताओ। अगर तुम्हारी सुसरालवालोंमें कोई भी ऐसा नजदीकी न हो जिसके साथ तुम रह सको तो लाचारीमें अपने भाई-भतीजोंमें ही जा रहो, पर अकेली हर्गिज मत रहो।

प्यारी बहनो, असल बात तो यह है कि तुम्हारे कुटुम्बी और तुम्हारे रिस्तेदार ऐसे कठोरहृदय और तुम्हारी तरफसे ऐसे बेपरवाह नहीं होते हैं जैसा कि तुम उनको समझ लेती हो। इसमें सन्देह नहीं है कि यह रँडापा तुमको तुम्हारे पूर्व जन्मके पाप कर्मोंसे ही मिला है, लेकिन यकीन मानो कि यह अकेला तुम्हारा ही पाप नहीं है इसमें तुम्हारे सुसरालवालों और मैकेवालोंके भी पाप शामिल हैं। क्योंकि तुम्हारे विधवा होनेसे उनकी भी जिन्दगी खाकमें मिल गई है, उनकी भी सब बातोंमें फरक पड़ गया है और उनका हृदय भी पके फोड़ेके समान हो गया है, जिसमें हरवक्त पीड़ा होती है और राध कुलबुलाती रहती है, और सच पूछो तो तुम्हारी सुसरालवालों और मैकेवालोंका ही यह हाल नहीं है बल्कि तुम्हारे अड़ौसी पड़ौसी और गली मुहल्लेवालोंको भी तुम्हारे दुखमें दुखी होना पड़ रहा है।

हमारे यहाँ एक मसल मशहूर है कि " किसीके घर मेह बरसेगा तो कमसे कम अलौतियाँ तो पड़ौसियोंके यहाँ भी चूँ ही जावेंगी।" मतलब इसका यह कि जब किसीके घर ब्याह-शादी होती है तो उनके ब्याहकी चहल-पहल और हँसी खुशी सारे ही मुहल्लेवालोंके देखनेमें आती है और उनके गाजे वाजे और रागरंगका आनन्द भी सभी मुहल्लेवाले लेते हैं। इसी प्रकार जब किसीके घर शोक होता है तो उनका रोना पीटना देखकर और उनके दर्दभरे विलाप सुनकर रस्ते चलतोंको भी दुखी होना पड़ता है, फिर मुहल्लेवालों और रिश्तेदारोंकी तो बात ही क्या है। परन्तु तुम्हारा दुख कोई ऐसा दुख नहीं है जिसको कोई चूँटकर फेंक सके, या अपने सुखको तुम्हारे दुखसे बदल सके, या तुम्हारे दुखमें साझीदार होकर तुम्हारे दुखको हल्का कर सके। इसके सिवाय यह तुम्हारा दुख कोई ऐसा दुख तो है ही नहीं, जो एक दो दिन या एक दो महीने या एक दो बरसमें खतम हो जाय, बल्कि यह तो सारी उमरका दुख है। ऐसी दशामें तुम्हारे कुटुम्बी और रिश्तेदार तुम्हारे साथ मिलकर कब तक तुम्हारे दुखमें दुखी हों। इस वास्ते वे बेचारे तुम्हारे साथ दो चार दस दिन हायहाय करके आप दुखी होकर और तुम्हें दुखी करके आखिरको थक जाते हैं और अपने दुखी होनेसे तुम्हारे दुखमें एक रत्तीभरकी भी कमी न देखकर आखिरको वे बेचारे भी चुप हो जाते हैं, लाचार होकर अपने काम धंधेमें लग जाते हैं, और गृहस्थीके सभी काम करने लगते हैं। अब तुम ही विचारो कि अगर वह ऐसा न करें तो करें क्या? क्या तुम यह

चाहती हो कि वे तुम्हारी तरह सारी उमर शोक ही मनाते रहें ? परन्तु अव्वल तो इससे तुम्हारा कुछ फायदा नहीं है और दूसरे यह बात बिल्कुल असम्भव है। जब कि घर घर विधवा यें हैं, तब यदि ऐसा होने लगे तो एक एक विधवाके वास्ते एक एक घर बन्द होनेसे दुनियाका सारा कारखाना ही न बन्द हो जावे और संसारका सर्वनाश ही न हो जावे। इस कारण अपने कुटुम्बियोंसे यह आशा रखना कि वे तुम्हारी जिन्दगी तक अपने भोग-विलास और हँसी खुशीको बन्द रक्खें बिल्कुल ही अनुचित और महा अन्याय है। परन्तु विधवा होनेपर तुम्हारा हृदय ऐसा कमजोर और तुम्हारा मन ऐसा डाँवाँडोल हो जाता है कि तुमको कहीं भी शान्ति दिखाई नहीं देती, और अपनी इसी अशान्तिमें तुम अपने कुटुम्बियोंको अपने कार-जमें मग्न देखकर यह समझ लेती हो कि इनको मेरी कुछ पर-वाह नहीं है। परन्तु यह तुम्हारी महा भूल और मनके भटका-वेके सिवाय और कुछ भी नहीं है।

देखो सुसरालमें रहती हुई जब तुम अपने सास ससुरको, देवर जेठको और देवरानी जिठानीको सर्व प्रकारके भोग विला-सोंमें मग्न देखती हो, जब तुम उनकी आपसकी हँसी दिल्लगी-की बातें सुनती हो, जब वे सोलह सिंगार और बत्तीस आभ-रणोंसे सजकर अपने दिलकी उमंगें निकालती हैं और सब प्रकारके चाव मनाती हैं, तो तुम्हारे दिलमें यह खयाल पैदा होता है कि इन लोगोंको हमारा कुछ भी दर्द नहीं है और इनको मेरे दुखका कुछ भी खयाल नहीं है। ये लोग तो अपने

भाग्यमें मस्त हैं, मुझ अभागिनीकी इनको क्या पड़ी है जो मुझे अपने ध्यानमें भी लावें और सुपनेमें भी याद कर लें कि कोई भागों फूटी कर्मोंकी मारी जीजली भी हमारे घरमें है कि नहीं। परन्तु मेरी विधवा बहनो, तुम्हारा यह खयाल बिल्कुल वृथा और महामूर्खताका है। क्योंकि तुम ही बताओ कि अगर गृहस्थ लोग अपने सांसारिक कामोंमें इस प्रकार न लगें तो क्या करें और उससे लाभ क्या हो? देखो जिस प्रकार तुमको इस बातका रंज है कि ये लोग मुझ दुखियाके होते हुए भी अपनी मौज उड़ाते हैं उसी प्रकार इन लोगोंको भी इस बातका रंज है कि यह विधवा हमारे यहाँ आनन्द मंगल होते हुए भी अपने ही शोकमें मग्न रहती है और अपने दुखको भूलकर आनन्दमें आनन्द नहीं मनाती है, जिससे साफ मालूम होता है कि हमारा आनन्द इसको भाता नहीं है, बल्कि हमारे वास्ते भी यह शोक ही मनाती है। ऐसे ऐसे विचार होकर उन लोगोंके मनमें भी तुम्हारी तरफसे खेंच होनी शुरू हो जाती है और दोनों तरफ-से मन फटने लगता है।

लेकिन मेरी विधवा बहनो, जरा विचारो तो सही कि इसमें कुसूर किसका है, अर्थात् तुम्हारी अकेलीके रंजमें सारे घरभरको रंज मनाते रहना चाहिए या सारे घर भरके आनन्दमें तुमको भी आनन्द ही मनाना चाहिए। बात बिल्कुल साफ है, उलझन इसमें जरा भी नहीं है। क्योंकि तुम्हारे रंजमें रंज मनानेसे तो तुम्हारा रंज कुछ घटता नहीं, बल्कि बढ़ता ही है, इस वास्ते नफा कुछ नहीं और उलटा नुकसान

हीं है। लेकिन उनकी खुशीमें खुशी मनानेसे उनकी खुशी बढ़ती है इस वास्ते फायदा ही फायदा है और नुकसान कुछ भी नहीं है। इससे साफ सिद्ध हो गया कि तुमको ही अपने दुख-को छोड़कर उनके सुखमें सुखी होना चाहिए। इस वास्ते उनकी शिकायत ठीक है और तुम्हारी गलत, अर्थात् इस मामलेमें कुसूर तुम्हारा ही है—उनका नहीं।

मेरी विधवा बहनो, सच तो यह है कि तुम्हारे मनका भट-कना ही तुमको अनेक प्रकारके दुख देता है और ख्वाम-ख्वाह भी तुम्हारे प्यारोंको तुमसे गैर बनाता रहता है। देखो जब तुम अपने कुटुम्बकी सुहागन स्त्रियोंको किसम किसमके नखरे करती हुई और उनके सब नखरे थमते हुए देखती हो, जब उनका कोई भी बोल नहीं गिराया जाता है और उनकी सभी इच्छायें पूरी की जाती हैं और जब सारा ही घर उनकी खातिरदारीमें खड़ा रहता है तो तुमको रहरहकर यह खयाल आता है कि जब मैं सुहागन थी तब तो मेरी भी पूछ पुर्शिश थी और सब कुछ खातिर होती थी, पर अब तो मुझसे कोई यह भी नहीं पूछता कि तू किधर पड़ी है और तेरा क्या हाल है। ऐसे ऐसे विचारोंसे तुम्हारा हृदय सुलग उठता है, कलेजेमें आग लगजाती है, खूनका पानी बनकर टप टप आँखोंके रस्ते बरसने लगता है और घरके सब लोग बिल्कुल पराये दीखने लगते हैं। इस तरह हृदयकी भड़ास थोड़ी देर तक निकल लेनेके पीछे सिरमें एक चक्करसा आकर तुम मुँह लपेटकर पड़ जाती हो और ख्वामख्वाह ही अपने

मनसे उठा उठाकर सैकड़ों किसमके विचार करने लगती हो। उस वक्त तुमको यह जोश आता है और यह भड़क उठती है कि जब यही लोग मुझको अपना नहीं मानते तो मैं भी इनको अपना क्यों मानूँ, मैं भी इनसे क्यों कुछ वास्ता रक्खूँ और क्यों इनसे दबूँ या डरूँ। मेरा दुनियामें रक्खा ही क्या है जिसके कारण मैं किसीकी सहूँ या किसीसे कुछ मतलब रक्खूँ। ये लोग मेरी प्रतिपालना जो करते थे, सो अब न करें मेरे कर्मोंमें सुख होता तो किस्मत ही क्यों फूटती। मुझे सारी उमर मुसीबत तो भोगनी ही है, तब वह सेर मुसीबत हुई तो क्या और मन भर हुई तो क्या। इस वास्ते चाहे सेरकी जगह पाँच सेर मुसीबत भोगनी पड़े, पर इन सुसरालवालोंसे कुछ भी वास्ता नहीं रखना। चाहे भूखा प्यासा बैठ रहना पड़े, चाहे नंगी बुच्ची रह कर दिन काटने पड़ें, पर इन लोगोंका झूठ मूठका अहसान सिर नहीं धरना। किसी गैरकी सौ टहल करके और पीसना पीस कर गुजारा करना अच्छा, पर इन बेदर्दोंके पंजेमें रहना बुरा।

अपने हृदयमें ऐसे ऐसे विचार उठाकर तुम नित्य अपने दिलको दुखाती हो, आठ आठ आँसू रोकर अपनी देहीको सुखाती हो और इस प्रकारके विचार करते करते जब चित्त बिल्कुल उचाट हो जाता है, जी ज्यादा घबराता है तो मैके जानेकी धूम लगाकर जैसे तैसे वहाँ ही पहुँच जाती हो। परन्तु मेरी विधवा बहनो, अगर तुम जरा भी बुद्धिको लगाकर जाँचोगी तो इसमें भी तुम्हारा ही कुसूर निकलेगा। क्योंकि मनुष्यकी

पूछ प्रतीत हमेशा उसकी अवस्थाके अनुसार ही होती है। तुम ही देखो कि बेटीकी जितनी कद्र अपने माँ-बापके यहाँ होती है उससे कई गुणी कद्र उसकी भावजोंकी की जाती है। जो जो नखरे बहुओंके उठाये जाते हैं, जैसी जैसी उनकी खातिर होती है, जिस जिस तरह उनका मन थामा जाता है, बेटियों-के साथ उससे सौवें हिस्सेका भी वर्ताव नहीं होता है। और बेटियोंमें भी कुँवारीके साथ कुछ वर्ताव होता है और ब्याहीके साथ कुछ और। अब अगर बेटी इस बातका रोस करने लगे कि मैं जो इसी घर पैदा हुई वह तो न्यारी हो गई और पराये घरसे आई हुई मेरी भावजोंकी ऐसी पूछ प्रतीति और खातिर-दारी होने लगी, तो क्या वह बेटी मूर्खा नहीं है और क्या उसका रोस करना किसी तरह उचित हो सकता है? नहीं, कदा-पि नहीं। इसी प्रकार मेरी विधवा बहनो, तुम्हारा रोस करना और मैला करके जी उचाटना भी बिल्कुल ही अनुचित या नामुना-सिब है। देखो वही बेटी—जो अपने बापके यहाँ अपनी भावजों-के मुकाबिलेमें नियादरी थी—अपनी ससुरालमें जाकर अपनी ननदोंके मुकाबलेमें बहुत ज्यादा कद्र पाने लगती है। गरज आदमीकी पूछ प्रतीत और कदर उसकी अवस्थाके मुत[illegible]क होती है। तुम ही देख लो कि जब तुम सुहागन थी तब इसी घरमें तुम्हारी भी सब ही कुछ कदर होती थी। फिर अब जब तुम वह नहीं रही हो जो पहले थी, तो तुम्हारी कदर भी पहले जैसी कैसे हो सकती है। इस वास्ते तुम अपनी अक्लको ठीक करो और अपनी अवस्थाको पहचान कर ख्वामख्वाहका रोस करना

छोड़ो, बल्कि तुम भी अपनी देवरानी जेठानी और कुटुम्बकी अन्य सभी सुहागन स्त्रियोंकी कदर और पूछ प्रतीत उतनी ही करो जितनी सुहागनोंकी होनी चाहिए और तुम अपनी पूछ प्रतीत सिर्फ उतनी ही कराओ जितनी कि विधवाओंको जरूरत है। देखो, तुम्हारे तो सभी विषय भोग विदा हो गये हैं, इस वास्ते तुमको तो आयु पूरी करनेके वास्ते रूखे सूखे पेट भर भोजनकी और बदन ढकनेके वास्ते एक आध मोटे झोटे कपड़ेकी जरूरत है। लेकिन सुहागनोंको तो अपनी पाँचों इन्द्रियों और छठे मनका भोग पूरा करना है। इस वास्ते उनको तो दुनियाकी सभी चीजें दर्कार हैं और सब ही चीजोंमें उनको मजेदारी और खूबसूरती भी देखनी जरूरी है। इस वास्ते उनकी इच्छाको पूरी करनेके वास्ते अगर सारा घर भर रातदिन खड़ा न रहे तो काम कैसे चले और तुम्हारे वास्ते अगर कोई सारा दिन खड़ा रहे तो क्या तो वह तुम्हारा काम करे और क्या तुम्हारी पूछ पुर्शिश करे।

अब रही तुम्हारे मैकेकी बात, सो वहाँ भी तुम्हारे जाते ही दो चार दिन तो खूब रोना धोना और हाय कलाप रहते हैं, सब ही रोते हैं और तुम्हें रुलाते हैं; पर चार दिनके बाद तुम्हारे भाई भावज और चाची ताई सब अपने अपने धन्धेमें लग जाते हैं और रोना धोना छोड़कर अपने अपने आनन्दोंमें ऐसे मग्न हो जाते हैं मानो उनको यह खयाल ही नहीं है कि हमारे घरमें कोई अभागिनी विधवा भी आई हुई है। हाँ, एक

तुम्हारी माँके हृदयसे तुम्हारे दुःखका खयाल सौ कोशिशें करने पर भी दूर नहीं होता है। वह तो रह रह कर तड़पती है और यही चाहती है कि किसी तरह अपनी बेटीका दुख चूँट कर अपने लगा लूँ और धधकते अंगारों पर लोटती हुई अपनी दुलारीको गोदमें उठा कर जलनेसे बचा लूँ। पर जब उसका भी कोई बस नहीं चलता, तो वह भी सब्र करके बैठ जाती है और मन मसोस कर रह जाती है। पाँच सात दिन आँखें गलानेके बाद जब रोते रोते उसकी आँखोंमें भी पानी नहीं रहता और जब वह यह देखती है कि मेरे रोनेसे मेरी दुखिया बेटीको दुगनी दुगनी चोट लगती है तब वह भी छाती पर पत्थर बाँधकर चुप हो जाती है, तुम्हें भी सब्र करनेके वास्ते समझाने लगती है, और फिर आहिस्ता आहिस्ता एक दो दिन पीछे वह भी अपने कुटुम्बके आनन्द-में लग जाती है और घरकी हँसी खुशीमें शामिल हो जाती है।

यदि वह बेचारी ऐसा न करे तो करे क्या? क्योंकि उसको जैसी तुम्हारी मुहब्बत है वैसी ही अपने बेटों पोतों और उनकी बहू बेटियोंकी भी है। इस कारण उसको उन सबकी हँसी खुशीमें शामिल होना और उनके साथ हँसना खेलना उतना ही जरूरी है जितना कि तुम्हारे दुखमें दुखी होना। इस वास्ते तुम्हारी माँका तो यह हाल होता है कि उसकी एक आँखमें आँसू होते हैं और दूसरी आँखमें हँसी खुशी। इस कारण वह एक बातमें हँस कर और एक बातमें रोकर ही अपना दिन काटती है।

हाँ रात होनेपर जब सब सो जाते हैं, तब दो घड़ीके वास्ते वह तुमसे तुम्हारे दुखकी बातें जरूर कर लेती है और वे बातें भी सिर्फ यही होती हैं कि सुसरालवाले अब तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव करते हैं और वहाँ अब तुम्हारी किस तरह बीतती है। बातें तो असलमें ये सब पहले ही दिन खतम हो लेती हैं, पर अगले दिन और उससे अगले दिन भी यही बातें दोहरा तिहरा कर होती रहती हैं। दो चार दिनमें जब एक ही बातको बार बार पूछते पूछते और सुनते सुनते जी भर जाता है तब तुम्हारी माँ अपनी व्यथा सुनाने लगती है और तुम भी खूब टोक टोक कर खूब कुरेद कुरेद कर पूछने लगती हो और अपनी माँकी इन बातोंको तुम भी वैसे ही पूरे ध्यानके साथ सुनती हो जैसे वह तुम्हारी बातोंको सुनती थी और उसकी कहानी सुनकर तुम भी उसके साथ वैसा ही दर्द प्रकट करती हो, जैसा वह तुम्हारे साथ करती है।

परन्तु अपनी माताकी यह सब कहानी सुनकर तुम्हें होश आता है और तुम्हारी आँखें खुलती हैं कि यहाँ जब मेरे पिताके होते हुए भी मेरी माँको ऐसे ऐसे दुख हैं और मेरे भाई-भावजोंकी ऐसी ऐसी शिकायतें हैं कि वह ज्यों त्यों करके ही अपने दिन पूरे कर रही है तो मेरी तो यहाँ क्या ही पूछ हो सकती है, मैं तो यहाँ किसी भी गिनतीमें नहीं गिनी जा सकती हूँ। इस वास्ते एक दफे तो तुम्हें पछतावा होता है और खयाल आता है कि मैं नाहक यहाँ

आई। वहाँ भली बुरी, दुखिया सुखिया जिस तरह भी थी, पर अपनी थलीपर तो पड़ी थी, वहाँ कोई दूसरा मेरी पूछ गच्छ नहीं करता तो न करो, पर उस घर पर अपना दावा तो है, वहाँ कोई यह कहनेवाला तो नहीं है कि तू यहाँ क्यों रहती है? पर यहाँ तो मेरा कुछ भी दावा नहीं है। वहाँ तो मेरी देवरानी जेठानी या और कोई मुझे एक कहे तो मैं सौ सुनाऊँ, पर यहाँ अगर मेरी भावजें कोई बात कह बैठें और कहेंगी ही, तो उस वक्त मैं क्या कह सकती हूँ? जब उनके मुँहको लगाम ही नहीं है, जब वह मेरी माँतकको ऐसी ऐसी कहती हैं और उसके साथ जब वह ऐसा ऐसा बर्ताव करती हैं तो मेरी तो हकीकत ही क्या है?

ऐसे ऐसे विचार आकर तुम्हारे मनमें आता है कि यहाँ ठहरना ठीक नहीं, बल्कि जिसके नाम पर मैं जोगन और विरोगन बनी हूँ उसहीके दर पर धूनी रमाकर बैठना ठीक है। ऐसा खयाल आकर आँसुओंकी झड़ी लग जाती है और सेरों पानी तुम्हारी आँखोंके रस्ते निकल पड़ता है। फिर कमजोरी होकर तबीयत ढीली हो जाती है और खयाल आने लगता है कि अब तो आ गई, सो आ गई, अब जल्दी जाना भी अच्छा नहीं है। यहाँ पर मेरी भावजें मुझको कुछ बुरा भला कह लेंगी तो कह लो, जहाँ दुनिया भरकी इतनी सह रही हूँ वहाँ बेहया बन कर इनकी भी दो सह लूँगी तो क्या बिगड़ जावेगा, आखिर तो इस घरकी बेटी ही हूँ। बेटी तो हाथ पसार कर लेनेवाली

और माँग कर खानेवाली होती है। सभी जानते हैं कि बेटी न-माना धन है। इस वास्ते मुझको तो यहाँ नमानी बनकर ही रहना चाहिए और पराये घरोंसे आई हुई इन भावजोंको मेरी मुहब्बत हो भी क्यों, मुझे ही इनकी क्या मुहब्बत है, इस वास्ते इनके कहने सुननेका गिला भी क्या ? मैं यहाँ कुछ इनके भरोसे थोड़ी ही आई हूँ जो इनका गिला करूँ। जीते रहो मेरे भाई भतीजे जिनके कारण मैं यहाँ आई हूँ। सो अभी तो कुछ दिन उनमें और रहूँगी और जब उनकी टहल करके अच्छी तरह जी भर जावेगा तब जाऊँगी।

देखो मेरी माँ बेचारी कितनी दुखी रहती है। वह अपने दुखदर्दकी बात किससे कहे और किसको सुनावे। गए घरोंकी आई हुई इन भावजोंने मेरे भोले भाइयोंको ऐसा बसमें कर रक्खा है कि माँसे बात तक भी नहीं करने देती हैं, बल्कि आप ही झूठी सच्ची लगा कर और उन बेचारोंका मन फाड़ कर घरका मटिया मेट करती रहती हैं। इनहींके कारण मेरे तीनों भाइयोंके तीन रस्ते हो रहे हैं। माँ बेचारी सोच सोचमें ही मर रही है, सूख सूखकर काँटेसी हो गई है। अब मेरे यहाँ आने पर जबसे उस बेचारीने अपनी कही और मेरी सुनी तबसे उसका जी कुछ हलकासा हुआ है। ना साहब, चाहे मेरी भावजें मेरे सौ जूते भी मारें और बाँह पकड़ कर भी निकालना चाहें तब भी मैं अभी नहीं जानेकी हूँ, बल्कि

माँको अच्छी तरह समझाकर और उसकी अच्छी तरह तसल्ली करके तबही हिलूँगी यहाँसे।

ऐसा विचार करके तुम मैकेमें ही रहने लगती हो और अपनी भावजोंकी खूब टहल करके उनको राजी रखनेकी कोशिश करती हो जिससे वे तुम्हारे वहाँ ठहरनेको बुरा न समझें और कोई बात मुँह पर न लावें। तुम्हारी भावजें भी तुमसे नौकरनी या टहलनीकी तरह काम लेने लगती हैं और तुमको काममें मुस्तैद देखकर तुम्हारे भाई भतीजे और छोटे बड़े सभी हर एक काम तुमसे ही लेने लगते हैं। गरज यह है कि इस तरह तुम्हारे मैकेवालोंको बेतनख्वाहका एक बेउजर नौकर मिल जाता है जिससे वहाँ तुम्हारे कुछ दिन कट जाते हैं। परन्तु कुछ दिन पीछे वहाँसे भी जी उचाट होता है और फिर सुसराल जाना सूझता है। वहाँ जाकर भी दो चार महीने तो ज्यों त्यों जी लगता है परन्तु फिर पहलेकी तरह मन उचाट हो जाता है और कुटुम्बके सब लोग दुश्मन नजर आने लगते हैं।

विधवा बहनो, अपनी इस सारी कथाको—जो हमने विस्तारके साथ लिखी है—खूब गौरके साथ पढ़ोगी तो तुमको मालूम हो जावेगा कि अपना मन स्थिर न होनेके कारण ही तुमको सारी उमर इस प्रकार भटकना पड़ता है और अपनी अवस्थाको ठीक ठीक न समझनेके सबब ही घरके सब लोग बैरी दिखाई देने लगते हैं। अगर तुम्हारा मन ठिकाने हो और

तुम अपनी अवस्थाको अच्छी तरह पहचान लो, तो न तो तुम्हारा मन भटके, न तुम्हें कुछ दुख हो और न ये कुटुम्बी लोग तुमको पराये मालूम हों, बल्कि सभी काम ठीक बैठ जावें। देखो, यदि सुहागन स्त्रियाँ अपनी सुसरालमें रह कर सिंगार न करें, चटक मटक न दिखावें और बात बातमें नखरे न करें तो बदतमीज और फूहड़ कहलावें; परन्तु अगर वही स्त्रियाँ अपने बापके यहाँ जाकर भी सिंगार करने लगें और चटक मटक दिखाने लगें तो बेशरम और निर्लज्ज समझी जावें। क्यों कि सुसरालमें उनकी कुछ और अवस्था होती है और मैकेमें कुछ और। मैकेमें रहते हुए तो उनका यही काम होना चाहिए कि आप तो वे बिल्कुल ही सादगीसे रहें, परन्तु अपनी भावजोंको खूब बढ़िया सिंगार करावें, उनको चटक-मटकवाली बनावें, उनके नखरे उठावें और इसी-बातमें आनन्द मनावें।

मेरी विधवा बहनो, इसी प्रकार तुम्हारी भी अब यही अवस्था है कि अपनी सुहागन देवरानियों जेठानियोंको आनन्द मंगल मनाती हुई देखकर तुम भी उनके साथ आनन्द मंगल मनाओ और जिस प्रकार सारा घरभर उनको राजी रखने, उनकी इच्छाओंको पूरी करने और उनके सब नखरे उठानेके लिए तय्यार रहता है उसी तरह तुम भी करो और उनकीही खुशीमें अपनी खुशी समझो। देखो अगर एक ही माँ-बापके दो बालकोंमें एक बेटा और एक बेटी होती है तो वही माँ बाप

उनकी हरएक बातमें कितना अन्तर कर देते हैं। बेटेको जैसा अच्छा खाना और अच्छा कपड़ा मिलता है वैसा बेटीको नहीं मिलता। बेटेका जिस प्रकार लाड़ लड़ाया जाता है, जिस तरह उसकी जिद् पूरी की जाती है और जिस प्रकार उसकी भली बुरी सही जाती है बेटीके साथ उस तरहका वर्ताव कदाचित् भी नहीं होता है। यहाँ तक कि बेटीको जो आधी-धोधी और गिरी पड़ी चीज मिलती है यदि उसको भी बेटा माँगने लगता है तो बेटीसे छीनकर उसको दे दी जाती है और अगर कभी दोनों बहन भाई लड़ पड़ते हैं और कुसूर भी बेटेका ही होता है तो भी धमकाया जाता है बेटीको ही कि—अगर यह तेरा भाई तुझपर ज्यादती भी करता था तो करने दिया होता, कुछ मर तो न जाती तू इसकी ज्यादती करनेसे, तू क्यों लड़ी इससे ?

मेरी विधवा बहनो, बेटाबेटीके साथ वर्तावका यह अन्तर नित्य सभी घरोंमें देखनेमें आता है, परन्तु क्या ऐसे अनोखे वर्तावसे बेटी इस बातका रोस करती है कि क्यों मेरे साथ तो ऐसा बुरा वर्ताव और मेरे भाईके साथ ऐसा अच्छा वर्ताव किया जा रहा है ? क्या मैं उसही माँके पेटसे पैदा नहीं हुई हूँ जिस पेटसे कि मेरा भाई पैदा हुआ है और फिर उसको तो क्यों ऐसे लाड़ लड़ाये जाते हैं और मैं क्यों ऐसी तुच्छ समझी जा रही हूँ ? विधवा बहनो, तुम खूब जानती हो कि ऐसे रंज भरे विचार न तो किसी बेटीको पैदा ही होते हैं और न उनको ऐसे विचार

पैदा होने ही चाहिए, बल्कि वे तो खूब अच्छी तरह जानती हैं कि हमारी अवस्था और है और हमारे भाईकी और। इसी वास्ते वह खुद भी अपने भाईको लाड़ लड़ानेमें खुश होती है, सौ कष्ट उठाकर अपने भाईको प्रसन्न रखनेकी कोशिश करती है, अपने भाईके सर्व प्रकारके चाव मनानेमें ही आनन्द मनाती हैं और अपने भाईको ही देख देखकर जीती है तथा अंगमें फूली नहीं समाती है। मेरी विधवा बहनो, तुमको भी इसी प्रकार समझना चाहिए कि तुम्हारी अवस्थामें और तुम्हारी सुहागन देवरानी जेठानियोंकी अवस्थामें तुम्हारे विधवा होनेके दिनसे ही धरती आकाशका अन्तर होगया है। इस वास्ते उनके लाड़ चाव होते देखकर तुमको रोस नहीं करना चाहिए, बल्कि तुमको भी यही मुनासिब है कि तुम भी उनकी ही खुशीमें खुशी मनाओ, उनके सब नखरे थामो और उनके ही आनन्दमें आनन्द मानकर अपना सब दुख भूल जाओ।

विधवा बहनो, गृहस्थीके मंगल-कारजोंमें जो तुम मनहूस समझी जाती हो उसका कारण यही है कि उस समय सब लोग तो आनन्द मना रहे होते हैं और तुमको रोना आता है, और अगर तुम लोकलाजसे अपने उस रोनेको जाहिरमें रोकती भी हो तो भी तुम्हारे अन्तरंगके भाव तुम्हारे चेहरेपरसे साफ साफ दिखाई देते रहते हैं। ऐसी अवस्थामें तुम ही इन्साफ करो कि अपने शुभ कारजोंमें गृहस्थोंका तुमको मनहूस समझना सच है या झूठ। अगर तुम अपने अन्तरं-

गको साफ कर लो और दूसरोंका आनन्द मंगल देखकर व्यर्थ रोस करना छोड़ दो, बल्कि सदा सबका भला ही चाहती रहो, और उनकी बढ़वारी देखकर हृदयसे खुश होती रहो तो क्यों कोई तुमको मनहूस माने, क्यों तुम्हारे कुटुम्बके लोगोंका तुमसे मन फटे और फिर क्यों तुम न्याद-रीसी पड़ी रहो ?

विधवा बहनो, अगर तुम दिलसे अपने कुटुम्बवालोंको चाहने लगो, सच्चे दिलसे उनके ही आनन्दमें अपना आनन्द मानो, रात दिन उनकी ही टहल चाकरीमें लगी रहो और अपने मनका भटकाना छोड़ दो, तो तुम्हारा रँडापा भी सुखसे कट जावे और कुटुम्बवाले भी अपनी गरजसे तुम्हारी कद्र करने लगें—तुमको अपने सिरपर बिठाने लगें।

सारांश इस सारे कथनका यह है कि कुटुम्बवालोंसे अलग रहकर तुम्हारा रँडापा अच्छी तरह कटना बहुत मुश्किल है, इस वास्ते सौ यत्न करके तुम उनहींमें शामिल हो जाओ और उनमें ऐसी बनकर रहो जिससे वह एक दिनके वास्ते भी तुम्हारा अलग होना पसन्द न करें, अपने भाई भतीजोंसे मिल आनेके वास्ते कभी दो दिनके लिए भी तुमको मैके न जाने दें और अगर तुम चली जाओ तो जै दिन तुम अपने मैकेमें रहो उतने दिन तुमको याद कर करके तड़पते रहें और तुम्हारे वापिस बुलानेका तकाजा बराबर करते रहें।

विधवा बहनो, इस प्रकारका यह तुम्हारा जीवन अति ही उत्तम जीवन होगा और पुण्य ही पुण्य उपार्जन करनेवाला होगा। क्योंकि अपने कुटुम्बके सब स्त्री-पुरुषों और बाल-बच्चोंकी टहल सेवा करनेसे तुम्हार अहंकार भी दबा रहेगा और परोपकार भी होता रहेगा, जिससे सदा तुमको पुण्य ही प्राप्त होता रहेगा, हरवक्त काममें लगा रहनेसे मन भी इधर उधर नहीं भटकेगा, न हृदयमें बुरे बुरे विचार ही उपजेंगे, न अपने पिछले भोगोंको याद करके तुमको रोना ही आवेगा और न तुम अपने रँडापेका शोक ही मनाओगी। इस कारण किसी प्रकारके पाप कर्म भी तुमको नहीं बँधेंगे, और अपने घरवालोंके आनन्दमें आनन्द मानकर सदा हँसी खुशीमें ही तुम्हारी आयु बीत जावेगी।

परन्तु देखो इस बातका बड़ा खयाल रखना कि तुम अपने कुटुम्बवालोंसे और उनके बाल बच्चोंसे ऐसा महा मोह मत पैदा कर लेना, जिससे ख्वामख्वाहको भी उनके वास्ते अपने मनको भटकाने लगो और पाप कमाने लगो; बल्कि अपने कुटुम्बमें तुमको इस प्रकार ही रहना चाहिए जैसा जलमें कमल रहता है। कमलका पत्ता हरवक्त पानीमें रहता हुआ भी पानीमें नहीं भीगता है, बल्कि जब निकालो तब ऐसा ही निकलता है मानो पानी इसको छुआ भी नहीं है। इसी प्रकार तुम भी सदा कुटुम्बवालोंकी टहल-सेवा करते हुए अपने हृदयको ऐसा शुद्ध और पवित्र रक्खो, मानो इस

हृदयमें कभी किसीका मोह हुआ ही नहीं। इसी कारण गृहस्थकी सब टहल करते हुए भी तुमको झूठ बोलने, फरेब करने, चुगली खाने आदि बुरी बातोंकी कोई भी जरूरत नहीं है। बल्कि मोह अहंकार भय और लोभ आदिसे बिल्कुल दूर रहकर बड़ी बेफिकरी और बेपरवाहीके साथ अपना जीवन बिता देना चाहिए और अपने हृदयको पवित्र और अपनी आत्माको शुद्ध करनेकी सदा कोशिश करते रहना चाहिए। यही तुम्हारा कर्तव्य है और यही परम धर्म है।

विधवा बहनो, यद्यपि मेरी बहुतसी बातें तुमको कड़वी लगेंगी और सख्त मालूम होंगी; क्योंकि जो कुछ मैंने लिखा है वह बिना किसी लागलपेटके बिल्कुल ही साफ साफ लिखा है और बिना किसी रियाअतके बिल्कुल वही लिखा है जिसमें तुम्हारा लाभ है। सच्ची बात हमेशा कड़वी लगा करती है और नसीहत सदा कड़ी मालूम हुआ करती है। लेकिन जो कोई अपनी भलाईकी बातको कड़वी औषधके समान स्वीकार करके उस पर चलने लगता है वह महा आनन्द पाता है। इसी प्रकार मेरी बहनो, जब तुम अपने चित्तको शांत करके इस पुस्तककी बातोंपर विचार करोगी तो तुमको मालूम होगा कि इस जन्ममें भी और अगले जन्ममें भी तुमको सुख मिलनेके वास्ते यही उपाय कार्यकारी हैं, जो इस पुस्तकमें लिखे हैं।

जिन जिन बहनोंको यह पुस्तक प्राप्त हो उनसे मेरी प्रार्थना है कि वे दयाधर्मको हृदयमें धरकर और अपनी सभी विधवा बहनोंके कल्याणका खयाल करके अपनी दूसरी बहनोंको भी यह पुस्तक दिखावें, उनको पढ़कर सुनावें, और खुद भी बार बार पढ़ें। जितनी बार हमारी बहनें इस पुस्तकको पढ़ेंगी उतनी ही बार उनको नया नया रहस्य इसमेंसे मिलेगा और हृदयमें शांति आवेगी। विधवा बहनोंके हृदयकी तड़पको दूर करनेके वास्ते यह पुस्तक महा मंत्रके समान है और उनके पाप कर्मोंको काटकर उनका अगन्त सुधारनेके लिए यह पुस्तक महा ओषधि है। परन्तु इसे तोतेकी तरह रटलेनेसे कुछ काम नहीं बनेगा, हाँ जो कोई भी इसके लिखे अनुसार चलेगी उसका जरूर कल्याण होगा।

बोलो मेरी बहनो सब मिलकर कि "सदा सबका भला हो और परोपकार तथा दयाधर्मकी जय हो।"
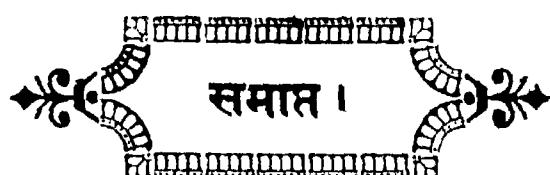
स्त्रियोपयोगी उत्तम साहित्य।

यह प्रसन्नताकी बात है कि, स्त्रियोंमें पढ़ने लिखनेका प्रचार होता जाता है। शहरोंकी रहनेवाली धनी और मध्यम स्थितिकी स्त्रियोंमें तो पुस्तकें पढ़ना व्यसनका रूप धारण करता जाता है। परन्तु अनुभवी विद्वानोंका विचार है कि स्त्रियोंको बुरे साहित्यके पढ़नेकी लतसे बचाना चाहिए और उन्हें अच्छी उपयोगी और चरित्र सुधारनेवाली पुस्तकें ही पढ़नेके लिए देनी चाहिएँ। धार्मिक ग्रन्थ तो उन्हें खास तौरसे पढ़नेके लिए दिये जाने चाहिएँ। हम अपनी समझके अनुसार नीचे एक छोटीसी पुस्तक-सूची देते हैं, जो स्त्रियोंके लिए बहुत विचारके साथ तैयार की गई है। विधवा बहनोंको चाहिए कि वे अपने पास सीखनेके लिए आनेवाली और परिचय रखनेवाली स्त्रियोंको उनकी योग्यता और आवश्यकताके अनुसार इनमेंसे पुस्तकें चुन कर मँगा दिया करें।

चरित्र सुधारनेवाली पुस्तकें।

१ **गृहदेवी** और २ **ब्याही बहू**। ये दोनों पुस्तकें इसी पुस्तकके लेखक श्रीयुत बाबू सूरजभानजी वकीलकी लिखी हुई हैं, इस लिए इनकी प्रशंसा करना व्यर्थ है। दोनों पुस्तकें पढ़ने योग्य हैं। पहलीका मूल्य चार आने और दूसरीका तीन आने है।

गृहिणीभूषण। इसमें पतिप्रेम, सतीत्वरक्षा, स्वजनवात्सल्य, गृहप्रबन्ध, माताका कर्तव्य, आदि स्त्रियोंके २४ श्रेष्ठ गुणोंका वर्णन बड़ी सरलतासे किया है। मूल्य ।\|)

गृहिणीकर्त्तव्य। इसकी भाषा तो कुछ कठिन संस्कृतमिश्रित है, पर पुस्तक बहुत ही अच्छी है। गृह, गृहस्थाश्रम, पंचमहायज्ञ, समय

और श्रम, पतिके प्रति पत्नीका कर्तव्य, परिवारवालोंके प्रति कर्तव्य, अतिथि अभ्यागतोंके प्रति कर्तव्य, मितव्यय और संचय, रसोई बनाना, शृंखला और सौन्दर्य, सन्तानपालन और स्वास्थ्य-विधान, सन्तान-शिक्षा और चरित्रगठन आदि कई अध्यायोंमें यह विभक्त है। मू० १।।)

स्त्री-चरित्र-संगठन। इसे बाबू दयाचन्दजी बी. ए. ने एक बंगला पुस्तकके आधारसे लिखा है। बहुत सरलभाषामें लिखी गई है। मूल्य ।।)

स्त्री-जीवन। लेखक, बाबू सूरजमल्लजी जैन। स्त्रीजीवनका महत्त्व, बाल्यकाल, स्त्रीशिक्षा, स्त्रीजातिके गुण, विवाहकाल और विवाह, गृहिणीजीवन, गृहव्यवस्था, मातृजीवन, गृहशासन आदि अध्यायोंमें यह पुस्तक भी विभक्त है। मूल्य ।=)

स्वर्गकी सुन्दरियाँ। यह बहुत बड़ी पुस्तक है। बड़े अच्छे ढंगसे इसमें स्त्रियोंके जीवनको स्वर्गीय बनानेकी शिक्षायें दी गई हैं। मूल्य २)

बच्चोंका चरित्र सुधारना सिखानेवाली पुस्तकें।

१ बच्चोंके सुधारनेके उपाय। इसमें बच्चोंकी आदतें सुधारनेके, उन्हें सदाचारी और विनयशील बनानेके, बुरे स्वभाववालोंको अच्छे बनानेके उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य ।।)

२ सन्तति रत्न। (प्रथम भाग) इसमें जन्मसे ही अपनी सन्तानको रत्न बनानेकी व्यावहारिक सुगम रीतें बड़ी सरलतासे बतलाई गई हैं। मूल्य ।-)।।

३ सन्तति रत्न। (द्वितीयभाग) माता पिता और बच्चोंको यथाविधि सुधारनेकी रीतियाँ। यह मेडम एलिजवेथ टौन होलियोगकी अँगरेजी पुस्तकका अनुवाद है। मूल्य ।)

४ अच्छी आदतें डालनेकी शिक्षा। मूल्य =)॥

५ पिताके उपदेश। मूल्य =)

सन्तान-पालन, सेवाशुश्रूषा, स्वास्थ्यरक्षा आदि सिखलानेवाली पुस्तकें।

१ सन्तान-पालन। मू० -)॥

२ बालरक्षा (बच्चोंका जीवनसुधार)। गर्भमें आनेसे लेकर जन्म लेने और खेलने कूदनेकी अवस्थातक बच्चोंके शरीरकी रक्षाके उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य ॥=)

३ शुश्रूषा। रोगियोंकी सेवाशुश्रूषा करनेकी शिक्षा। मूल्य ॥।=)

४ जननी-जीवन। इसमें बच्चोंके लालनपालनके नियम, उन्हें सर्दी गर्मी आदिसे बचाने आदिकी शिक्षा उत्तम ढंगसे दी गई है। मूल्य ॥-)

५ उपवास-चिकित्सा। उपवाससे तथा दूसरे प्राकृतिक उपायोंसे रोगोंको दूर करनेके और तन्दुरुस्त रहनेके उपाय। मूल्य ॥।)

६ योग-चिकित्सा। योगकी क्रियाओंसे नीरोग रहनेके और रोगोंको दूर करनेके उपाय। मू० ।=)

७ आरोग्य-दिग्दर्शन। महात्मा गाँधीकी प्रसिद्ध पुस्तक। मू० ॥=)

गृहकर्म सिखानेवाली पुस्तकें।

१ जेवनार। तरह तरहके भोजन पकवान आदि बनाना सिखलानेवाली पुस्तक। मूल्य ।-)

२ **मितव्ययिता** या गृहप्रबन्ध शास्त्र । मूल्य ।।।=)

उपन्यास ।

आज कल उपन्यास बहुत बदनाम हो रहे हैं। नीचे लिखे उपन्यास बहुत ही शिक्षाप्रद और चरित्रसंशोधक हैं:—

प्रतिभा मू० १।)	सरस्वती १)
अन्नपूर्णाका मन्दिर ।।।)	मिलनमन्दिर १।।)
शान्तिकुटीर ।।।=)	शारदा ।=)
आदर्श दम्पति ।।=)	हिन्दू गृहस्थ ।।)
गृहलक्ष्मी १)	उमा १)

चरित्र कहानी आदि ।

सच्ची स्त्रियाँ ।।।)	सच्ची और मनोहर कहानियाँ ।।)
राजपूतानेकी वीर रानियाँ ।।।)	देवी जौन (फ्रान्सकी वीर नारी) ।।)

नोट—इनके सिवाय और भी बहुतसी पुस्तकें हैं जिनके नाम स्थानाभावसे नहीं लिखे जा सके। सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

मिलनेका पत्ता—

मैनेजर **हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,**

हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई।